राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

गौरवशाली भारत

दिल्ली से प्रकाशित

R.N.I. NO. DELHIN/2011/38334 वर्ष- 10, अंक- 305 पृष्ठ - 08, नई दिल्ली, मंगलवार ,11 मई 2021, मूल्य रु. 1.50

देश में 24 घंटे में मिले 3,29,379 नए केस, 3,877 की मौत

पांच दिन बाद कोरोना संक्रमण में कमी, 80,000 केस कम

नई दिल्ली ■ एजेंसी

भारत में कोरोना की दूसरी लहर ने लोगों की जिंदगी बेहाल कर दी है। हालांकि बीते 24 घंटे में कोरोना के कहर से थोड़ी राहत जरूर मिली है क्योंकि चार दिनों बाद एक दिन में कोरोना के चार लाख से कम नए मामले आए हैं।

सोमवार को जारी रिपोर्ट के मुताबिक 24 घंटों में देश में 3,29,379 नए मामले दर्ज किए गए हैं, जिसके बाद कुल संक्रमितों की तादाद 2,29,91,927 हो गई है। राहत की बात ये है कि इस दौरान स्वस्थ मरीजों की संख्या 3,55, 745 है। अब तक कुल 1,90,21,207 लोग इस वायरस के प्रकोप से मुक्त हो चुके हैं। सोमवार को एक्टिव मरीजों में महज 8589 मरीजों का इजाफा हुआ है, हालांकि चिंता की बात ये है कि अभी भी एक्टिव मरीजों की संख्या 37,45,237 पर बनी हुई है। वहीं मौतों की बात करें तो 24 घंटों में 3754 मरीजों की मौत हुई है और कुल मृतकों की संख्या 2 लाख 46 हजार 116 हो गई है।

कुल पॉजिटिविटी रेट 24.83 फीसदी है। इस अवधि में 14,74,606 लोगों की कोरोना जांच की गई है। कोरोना के मामलों के लिहाज से मई का महीना बेहद गंभीर रहा है। अकेले मई में अब तक करीब 39 लाख मामले दर्ज हो चुके हैं। दिल्ली के बार उप्र में संक्रमण के केसों में कमी दर्ज की गई है।

छह दिन के आंकड़े

दिनांक	संक्रमित	मौतें
05 मई	4,12,373	3,979
06 मई	4,14,182	3,920
07 मई	4,01,228	4,191
08 मई	4,03,626	4,091
09 मई	3,66,317	3,747
10 मई	3,29,379	3,877

देश में कोरोना संकट पर कांग्रेस नेता अधीर रंजन ने की राष्ट्रपति से संसद का विशेष सत्र बुलाने की सांग

नई दिल्ली । देश में कोरोना बेकाबु रफ्तार के साथ बढ़ रहा है। देश के अधीर रंजन ने राष्ट्रपति से अनुरोध कई रज्यो में स्थिति कोरोना के चलते बेहद किया है कि कोरेना संकट के मुद्दे पर तक्काल संसद का विशेष सत्र बुलाय खराब हो चकी है और अस्मतालो में न बेड जाए। उन्होंन चिं में आगे कह कि बचा है और न ती अऑक्सीजन और दवाईया की पर्यास् व्यवस्था है। ऐसे में कोरोना के कोरोना महामारी के कारण पैदा हुए गंभीर लात में एक विशेष संसद सत्र का विशेष सत्र बुलाने की मांग की है।

विकराल रूप और लोगो की हो रही लगातार बुलाया जाना चाहिए, ताकि देशभर के मौत के बीच लोकसभा में काग्रेस के नेता अधीर रंजन सांसद अपने क्षेत्रे और राज्य की स्थिति के बारे में बता ने राष्पति रामनाथ कोबिंद को पत्र लिखकर फौरन संसद सके, जिससे लोगों की परेशानी कम करने के लिए गास्ता निकाला जा सके ।

ये नया भारत, जहां नाकामी से मिली सहानुभूति ही उपलब्धिः शशि थरूर

नई दिल्ली, (एजेंसी)। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने जब ट्विटर पर कोरोना के खिलाफ विदेश से मिलने वाली मदद पर अपनी पीठ ठोकने की कोशिश की तो कांग्रेस नेता शशि थरूर ने मंत्री को जवाब देते हुए कहा कि हमें हमारे प्रति दुनिया की हमदर्दी को उपलब्धि नहीं समझना चाहिए। हमें ये सोचने की जरूरत है कि भारत को विदेश से मदद लेने की आखिर जरूरत ही क्यों पड़ गई? दरअसल जयशंकर ने ट्वीट किया था, कि अमेरिका, सिंगापुर, जर्मनी और थाइलैंड समेत दुनिया भारत के साथ खड़ी है। इसका जवाब देते हुए थरूर ने ट्वीट किया, नया भारत, जहां दुनिया की हमदर्दी पाना उपलब्धि मानी जा रही है। हमारी सरकार की नाकामी के चलते भारत को विदेश से मदद लेनी पड़ रही है। इससे पहले कांग्रेस नेता शशि थरूर ने स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन की आलोचना की थी। थरूर ने हर्षवर्धन को उस बयान पर घेरा था जिसमें मंत्री ने कहा था कि पिछले सात दिनों में 180 जिलों में कोई भी नए कोरोना के केस सामने नहीं आए

कोरोना से 108 सीआरपीएफ कर्मियों की मौत, केंद्रीय बलों में सबसे ज्यादा

नई दिल्ली । केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत आने वाले केंद्रीय बलों में कोरोना वायरस महामारी से सबसे ज्यादा 108 मौत सीआरपीएफ के कर्मियों की हुई है। सोमवार को अद्यतन आंकड़ों में यह जानकारी दी गई।

सात बलों में उपचाराधीन कर्मियों की संख्या 9,464- केंद्र के तहत आने वाले सीआरपीएफ, सीमा सुरक्षा बल, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस, सशस्त्र सीमा बल, राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड और राष्ट्रीय आपदा मोचन बल के अब तक कुल 271 जवान महामारी से अपनी जान गंवा चुके हैं।ये बल देश में सुरक्षा, सीमा निगरानी, राहत और बचाव अभियान से जुड़े हैं। आंकड़ों के मुताबिक इनमें एक दिन में संक्रमण के 763 नए मामले दर्ज किए गए जिन्हें मिलाकर बल में संक्रमितों की कुल संख्या अब बढ़कर 71,295 हो गई है। इन सात बलों में उपचाराधीन कर्मियों की संख्या 9,464 है, जबकि 61,560 कर्मी बीमारी से ठीक हो चुके हैं।

कोरोना अपडेट

- कर्नाटक में 24 घंटों में 39,305 नए मामलें, 596 लोगों की मौत
- महाराष्ट्र में 40 दिन बाद 40,000 से कम केस आए, 24 घंटे में 37,236 संक्रमित मिले, 549 लोगों की मौत
- तमिलनाडु: 24 घंटे में 28,978 नए मामले आए, 232 मरीजों की मौत
- उप्र 24 घंटे में 21,331 संक्रमित मिले, 278 मरीजों की जान गई
- दिल्ली में 24 घंटे में 12,651 नए केस और 319 लोगों की हुई मौत
- आंध्र प्रदेश :24 घंटे में 14,986 नए केस मिले, 84 लोगों की मौत हुई
- बिहार में 10,174 नए मामले सामने आए। 75 लोगों की मौत।
- राजस्थान में 16,487 नए मामले सामने आए। 160 की मौत।
- छत्तीसगढ़ :24 घंटे में 11,867 नए केस मिले, 172 की मौत हुई
- मुरैना के कलेक्टर बी. कार्तिकेयन कोरोना संक्रमित हुए
- आज से 16 मई तक जम्मू-कश्मीर की सभी ट्रेनें रद्द, पठानकोट-जोगिंदर नगर रेल सेवा भी ठप
- सलमान खान की बहन अलवीरा-अर्पिता संक्रमित, हुईं क्वारंटाइन
- सपा नेता आजम खान आईसीयू में शिफ्ट, आक्सीजन लेवल गिरा , बेटे की हालत स्थिर
- फिल्म निर्माता सुरेश ग्रोवर को कोरोना से निधन
- चिराग पासवान हुए बीमार, किया आईसोलेट,मंगलवार को आएगी कोरोना जांच की रिपोर्ट
- अभिनेता जूनियर एनटीआर हुए पॉजिटिव
- अभिनेता जोकर थुलासी का निधन

असम के 15 वें मुख्यमंत्री बने हिमंत बिस्व सरमा

गुवाहाटी ■ एजेंसी

हिमंत बिस्व सरमा ने सोमवार को असम के 15वें मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली। राज्यपाल जगदीश मुखी ने उन्हें पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। इसके अलावा 13 अन्य मंत्रियों ने भी पद एवं गोपनीयता की शपथ ली। भाजपा के 10, एजीपी के दो और यूपीपीएल के एक विधायक को मंत्री पद की शपथ दिलाई गई।

सरमा के साथ कैबिनेट मंत्री के तौर पर भाजपा विधायक रंगोज पेगू, संजय किशन, जोगेन मोहन, अजंता नियोंग, परिमल शुक्लबैद्य, नेता चंद्र मोहन, अशोक सिंघल, पीयूष हजारिका, बिमल बोरा ने भी मंत्री पद की शपथ ली। मंत्री के रूप में शपथ लेने वालों में असम भाजपा प्रदेश अध्यक्ष रंजीत कुमार दास, सुप्रीमो अतुल बोरा आदि रहे।

एनआरसी पर बोले रिवेरिफिकेशन होगा

सीएम ने एनआरसी पर कहा कि उनकी सरकार असम के सीमावर्ती जिलों में 20 फीसदी नामों और अन्य इलाकों में 10 फीसदी नलामों का पुन सत्यापन (री वेरीफिकेशन) चाहती है। अगर बेहद नगण्य गलतियां पाई गईं तब हम मौजूदा एनआरसी के साथ आगे की कार्यवाही कर सकते हैं।

पश्चिम बंगाल में 43 विधायकों ने ली मंत्री पद की शपथ

कोलकाता ■ एजेंसी

बंगाल के राज्यपाल जगदीप धनगड़ ने टीएमसी के 43 विधायकों को मंत्री पद की शपथ दिलाई। ममता बनर्जी ने अपने मंत्रिमंडल में 17 नए चेहरों को जगह दी है। राजभवन में कोविड गाइडलाइन्स का पालन करते हुए बंगाल के राज्यपाल जगदीप धनखड़ ने सभी 43 कैबिनेट मंत्रियों, स्वतंत्र प्रभार, राज्य मंत्रियों को शपथ दिलवाई। वहीं तीन मंत्रियों ने वीसी के माध्यम से शपथ ग्रहण की। वर्चुअल शपथ लेने वालों में अमित मित्रा की तबीयत ठीक नहीं है और ब्रत्या बोस कोरोना संक्रमित थे। ममता के 43 मंत्रियों में 26 पुराने चेहरे हैं । इन 43 में 24 कैबिनेट मंत्री हैं। 10 स्वतंत्र प्रभार (राज्य मंत्री) हैं और नौ राज्य मंत्रियों ने शपथ ली है। इस बार क्रिकेट के मैदान के खिलाड़ी रहे मनोज तिवारी, पूर्व आईपीएस हुमायूं कबीर के साथ ही सात मुस्लिम व आठ महिलाओं को भी जगह मिली है, जिनमें से सात अनुसूचित जनजाति से आती हैं। बंगाल में मंत्रियों के विभागों को बटवारा कर दिया है। ममता ने गृह और स्वास्थ्य मंत्रालय अपने पास रखा है। बंगाल में 61 भाजपा विधायकों को गृह मंत्रालय ने एक्स कैटेगरी की सुरक्षा मुहैया कराई है।

एक नज़र...

क्रिकेटर पीयूष चावला के पिता का निधन

मुरादाबाद, (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के गेंदबाज पीयूष चावला के पिता प्रमोद कुमार चावला का कोरोना से निधन हो गया। सोमवार को पीयूष चावला ने इंस्टाग्राम अकाउंट से इस बात की पुष्टि की। उन्होंने इंस्टाग्राम पर उनकी तस्वीर पोस्ट करते हुए लिखा कि आज उनके बिना जीवन पहले जैसा नहीं रहा, आज मेरी ताकत का स्तंभ खो गया है। प्रमोद कुमार चावल ने नोएडा के एक निजी अस्पताल में आखिरी सांस ली। वह 12 दिन से कोरोना से जूझ रहे थे। हालत बिगड़ने पर रविवार को उन्हें मुरादाबाद के निजी कोविड अस्पताल से नोएडा रेफर किया गया था। जहां सोमवार सुबह उन्होंने दम तोड़ दिया।

एएमयू में 20 दिनों में 19 प्रोफेसरों की मौत

अलीगढ़, (एजेंसी)। बीते 20 दिनों में अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के 19 प्रोफेसरों की मौत की वजह से पूरा प्रशासन सकते में है। एएमयू के कुलपति प्रोफेसर तारिक मंसूर ने अब आशंका जताई है कि अलीगढ़ में कोरोना की नई किस्म विकसित हो गई है। उन्होंने इस संबंध में आईसीएमआर को पत्र भेज, कोविड-19 नमूनों की जीनोम जांच करने का अनुरोध किया है। एएमयू वीसी ने आईसीएमआर के महानिदेशक प्रो. बलराम भार्गव को पत्र भेजा है। कहा कि हमारे लैब से भेजे गए नमूनों का विश्लेषण करने के लिए आईसीएमआर के संबंधित अनुभाग व विभाग को निर्देशित करें।

केंद्र सरकार ने राज्यों के मत्थे मढ़ी टीकाकरण की जिम्मेदारीः सोनिया

नई दिल्ली, (एजेंसी)। हाल में विधानसभा चुनाव में मिली करारी हार और कोविड-19 की स्थिति पर विचार के लिए कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक हुई, जिसमें पार्टी अध्यक्ष सोनिया गांधी ने कहा है कि केंद्र ने कोरोना से निपटने में दायित्वों से पल्ला झाड़ते हुए टीकाकरण का जिम्मा राज्यों को सौंप दिया है। श्रीमती गांधी ने बैठक में तीसरी लहर को लेकर चिंता जाहिर की और कहा कि मोदी सरकार जिम्मेदारियों से भाग रही है और उसने टीकाकरण के दायित्व सभी राज्यों पर डालकर अपना पल्ला झाड़ लिया है। यह बेहतर होगा कि केंद्र सरकार देश में सभी नागरिकों को निशुल्क कोरोना टीका उपलब्ध कराए। उन्होंने हाल ही में पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों में पार्टी को मिली करारी हार पर निराशा व्यक्त करते हुए कहा है कि नतीजों से सबक लेते हुए पार्टी में सुधार लाने के लिए ज़रूरी कदम उठाने की ज़रूरत है।

कांग्रेस अध्यक्ष पद का चुनाव टला

कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में पार्टी ने अध्यक्ष पद के चुनाव की तारीख का एलान कर दिया था, बैठक में 23 जून को अध्यक्ष के पद का चुनाव करने का फैसला किया था, हालांकि कोरोना के चलते इस एक बार फिर टाल दिया है। इस बैठक में देश में कोरोना के व्यापक प्रसार को लेकर चर्चा की गई। हाल ही में हुए चार राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेशों के चुनाव नतीजों में कांग्रेस के प्रदर्शन पर भी विचार किया गया।

सीतलकुची फायरिंग मामले में सीआईडी ने भेजा सीआईएसएफ जवानों को समन

कोलकाता, (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के दौरान सीतलकुची में सीआईएसएफ जवानों की ओर से कथित तौर पर फायरिंग के दौरान टीएमसी समर्थकों की हुई मौत को लेकर ममता सरकार ने इस मामले की जांच के लिए एसआईटी गठित कर दी है।

पश्चिम बंगाल सीआईडी ने सीआरपीसी की धारा 160 के अंतर्गत चार सीआईएसएफ, एक सीआईएसएफ इंस्पेक्टर और एक सीआईएसएफ डिप्टी कमांडेंट को मंगलवार (11 मई) को सीआईडी हेडक्वार्टर में पेश होने को कहा है। नेता प्रतिपक्ष ने कहा-ममता के आदेश पर काम कर रही सीआईडी इस मामले को लेकर विपक्ष हमलावर हो गया है।

भाजपा ने साधा टीएमसी पर निशाना

पश्चिम बंगाल के नेता प्रतिपक्ष और ममता बनर्जी को नंदीग्राम से पटखनी देने वाले सुवेन्दु अधिकारी ने कहा कि बंगाल सीआईडी को अधिकार नहीं है वह सीआरपीएफ और सीआईएफ को समन भेज सके। ये दोनों बल गृह मंत्रालय के अंतर्गत आता हैं। सीआईडी ममता बनर्जी और टीएमसी के निर्देश पर काम कर रही है। न्होंने नेता प्रतिपक्ष बनने के बाद कहा कि अच्छे कार्यों में पार्टी टीएमसी को सहयोग करेगी लेकिन बंगाल हिंसा के मुद्दे पर सवाल दागने से पीछे नहीं हटने वाली है।

कतर व कुवैत से आई चिकित्सीय सामग्री

नई दिल्ली, (एजेंसी)। कोरोना के खिलाफ लड़ाई के समर्थन में और भारतीय नौसेना के जारी ऑपरेशन समुद्र सेतु-द्वितीय' के तहत आईएनएस कोलकाता सोमवार को कतर और कुवैत से तरल मेडिकल ऑक्सीजन सहित महत्वपूर्ण चिकित्सीय आपूर्ति लेकर न्यू मंगलोर बंदरगाह पहुंचा। यह जानकारी एक रक्षा अधिकारी ने दी।

भारत पहुंचा आईएनएस कोलकाता

अधिकारी ने कहा कि पोत में ऑक्सीजन की 400 बोतलें और 30 मीट्रिक टन तरल मेडिकल ऑक्सीजन के दो कंटेनर हैं जिन्हें कतर और कुवैत से इस पर चढ़ाया गया था। पोत पांच मई को शुवैख बंदरगाह, कुवैत से रवाना हुआ था।

सुप्रीम कोर्ट की ओर से गठित टास्क फोर्स ने आक्सीजन उत्पादन और सप्लाई को लेकर दिया बड़ा बयान

नई दिल्ली । आक्सीजन के आवंटन मसले पर सुप्रीम कोर्ट की ओर से गठित टास्क फोर्स का मानना है कि वर्तमान हालात और कोरोना संक्रमण की अप्रत्याशित स्थिति में आक्सीजन उत्पादन और आपूर्ति के लिए जो कुछ किया गया, वह अभूतपूर्व है। समस्या ढांचागत है। उसे भी बहुत कुछ दुरुस्त किया गया है। जरूरत है आक्सीजन उपयोग के सही प्रबंधन की। पिछले एक पखवाड़े में ही जहां उत्पादन क्षमता में उछाल आया, वहीं अगर सप्लाई की बात हो तो उसमें दोगुना तक बढ़ोतरी हुई।

आक्सीजन आवंटन पर चर्चा के लिए रविवार को हुई थी पहली बैठक - पहली लहर के वक्त 14 सितंबर, 2020 को सबसे ज्यादा केस लोड था। तब भारत में 10.15 लाख एक्टिव केस थे और रोजाना लगभग एक लाख नए केस आ रहे थे। तब राज्यों को लगभग 3,000 मीट्रिक टन आक्सीजन दी गई थी। एक मार्च को इसकी जरूरत घटकर 1,318 मीट्रिक टन रह गई थी। लेकिन जरूरत के अनुसार नौ मई को राज्यों को लगभग 9,000 मीट्रिक टन आक्सीजन की सप्लाई की गई। सुप्रीम कोर्ट की ओर से शनिवार को गठित 12 सदस्यीय टास्क फोर्स की पहली बैठक रविवार को हुई तो सभी सदस्यों ने इसे सराहा। सूत्रों के अनुसार, सदस्यों का मानना था कि आक्सीजन के सही उपयोग पर ध्यान देने की जरूरत है।

तीन सदस्यों ने अपने अनुभव बताते हुए कहा कि उन्होंने 15-20 फीसद आक्सीजन की बर्बादी रोकी है। ध्यान रहे कि स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से भी बार-बार आगाह किया जा रहा है कि आक्सीजन को किस तरह बचाया जाए। कुछ सदस्यों ने आक्सीजन की कालाबाजारी पर चिंता जताई तो एक सदस्य ने केवल आशंका में भर्ती होने वाले मरीजों पर ध्यान देने की बात कही।

सूत्रों की मानें तो आक्सीजन आवंटन की वर्तमान व्यवस्था में फिलहाल कोई परिवर्तन नहीं है। वैसे भी यह रोजाना आकलन के आधार पर होता है और इसमें राज्यों के साथ भी मशविरा होता है। बहरहाल, सबकमेटी की रिपोर्ट के बाद इसका भी फार्मूला बनेगा। फिलहाल जो फार्मूला है उसकी कोरोना के बदलते रूप और प्रभाव के आधार पर हर राज्य के साथ समीक्षा होती रहेगी।

सदस्यों का मानना था कि आडिट बहुत जरूरी है। इसका अर्थ यह नहीं कि किसी राज्य या अस्पताल की खामी गिनाई जाए बल्कि इसमें उपयोग के तौर-तरीके से लेकर इसके स्टाक के लिए ढांचागत व्यवस्था तक सब कुछ शामिल है।

हैदराबाद में ऑक्सीजन टैंकर चालक मार्ग भटका

देरी से सात मरीजों की चली गई जान

हैदराबाद, (एजेंसी)। हैदराबाद के एक सरकारी अस्पताल के लिए मेडिकल ऑक्सीजन की नई खेप लाने निकला ड्राइवर रास्ता भटक गया और उसके इंतजार में सात मरीजों ने दम तोड़ दिया।

घटना हैदराबाद के सरकारी अस्पताल किंग कोटी की है। अस्पताल में रविवार (9 मई) को मेडिकल ऑक्सीजन की कमी होने लगी थी। अस्पताल के अधिकारियों ने दोपहर में आक्सीजन लेवल कम होने पर तुरंत टैंक को भरने का निर्देश दिया, मेडिकल ऑक्सीजन की नई खेप लेकर एक टैंकर चालक अस्पताल आ रहा था, लेकिन वह रास्ता भटक गया। इधर, अस्पताल में सभी ड्राइवर के इंतजार में थे। हॉस्पिटल प्रशासन, मरीज व उनके परिजन ऑक्सीजन आने में हो रही देरी से बेचैन हो रहे थे। धीरे-धीरे आईसीयू में ऑक्सीजन सप्लाई का प्रेशर कम होने लगा।

मरीजों को सांस लेने में मुश्किल होने लगी और मरीज देखते ही देखते सात मरीजों की आक्सीजन की कमी से तड़पते हुए मौत हो गई। हैदराबाद के नायारणगुड़ा पुलिस ने काफी मशक्कत के बाद टैंकर को खोज निकाला, लेकिन जब तक टैंकर अस्पताल पहुंचता तब तक काफी देर हो चुकी थी। बताया जा रहा है कि ड्राइवर ऑक्सीजन टैंकर लेकर 12 घंटे देरी से अस्पताल पहुंचा। इस घटना पर अस्पताल प्रशासन चुप्पी साधे बैठा है। कुछ लोग यह भी सवाल उठा रहे हैं कि ऑक्सीजन लेकर आ रहे टैंकर को ग्रीन कॉरिडोर क्यों नहीं मुहैया कराया गया।

निजता शर्तें न मानी तो सुविधाओं का नहीं कर सकेंगे इस्तेमाल

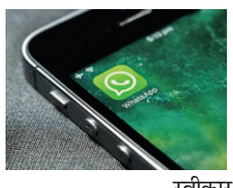

नई दिल्ली, (एजेंसी)। इंस्टैंट मैसेजिंग कंपनी व्हाट्सएप ने सोमवार को कहा कि उसके नए निजता अपडेट को स्वीकार न करने के लिए कोई भी खाता डिलीट नहीं किया जाएगा, लेकिन 'कई हफ्तों' के बाद इन विवादित शर्तों को स्वीकार न करने वाले उपयोगकर्ता अपनी चैट सूची नहीं देख पाएंगे। आखिरकार उनके एप पर आने वाले फोन कॉल या वीडियो कॉल का जवाब देने की सुविधा के इस्तेमाल पर रोक लग जाएगी। पिछले हफ्ते फेसबुक के स्वामित्व वाली कंपनी ने कहा था कि 15 मई तक की उसकी समयसीमा तक उसकी निजता नीति अपडेट को स्वीकार न करने वाले उपयोगकर्ताओं के खाते डिलीट नहीं किए जाएंगे।

व्हाट्सएप का एलान

व्हाट्सएप ने अपनी वेबसाइट पर कहा कि जिन लोगों को शर्तों को पढ़ने या स्वीकार करने का मौका नहीं मिला है, वह उन्हें इन शर्तों के बारे में याद दिला रहा है और कई हफ्तों के बाद लोगों को मिलने वाला यह रिमाइंडर सख्त हो जाएगा। हालांकि कंपनी ने इन रिमाइंडर के लिए तय की गयी समयसीमा के बारे में नहीं बताया।

व्यथा संक्रमण के डर से शवों का दाह संस्कार करने के बजाय पानी में बहाया

बिहार में गंगा में बहकर आए 40 शव

पटना ■ एजेंसी

कोरोना संक्रमण की मार झेल रहे बिहार से एक भयावह तस्वीर सामने आई है। बिहार के बक्सर में गंगा घाटों पर बहकर आए हुए शव जमा हो गए हैं। हालांकि प्रशासन ने इस मामले में अपना पल्ला झाड़ते हुए यह कह दिया है कि ये सभी लाशें उप्र से बहकर आई हैं। ज्ञात हो कि पिछले दिनों उत्तरप्रदेश में हमीरपुर के निकट गंगा नदी में कई लाशें तैरती हुई देखी गई थी। जिसके बाद यह आशंका व्यक्त की गई थी कि लोगों ने कोरोना संक्रमण के डर के चलते शवों का संस्कार करने के बजाय पानी में बहा दिया है। बक्सर प्रशासन के मुताबिक जिले के घाटों पर करीब 40 से 45 लाशें जमा है जो अलग अलग जगहों से बहकर यहां इक्ठा हो गई है। साथ ही प्रशासन ने यह भी कहा कि ये लाशें यहां की नहीं हैं, लगता है कि ये उत्तरप्रदेश से बहकर आई हैं। इसलिए इन लाशों का अंतिम संस्कार करने का विचार किया जा रहा है। वहीं बक्सर के एसडीएम के के उपाध्याय ने भी इस मामले में पल्ला झाड़ते हुए कहा है कि ये बिहार की नहीं उप्र की लाशें हो सकती हैं, क्योंकि यहां लाशों को बहाने की परंपरा नहीं है।

पल्ला झाड़ते हुए बोला प्रशासन- हमारी नहीं, यूपी की लाशें हैं

पिछले दिनों में बक्सर के श्मशान घाटों पर क्षमता से अधिक लाशों का अंतिम संस्कार किया जा रहा है। जिससे कई शवों के अंतिम संस्कार करने में दिक्कतें आ रही हैं। इसलिए कई लोग स्वजनों के शव का अंतिम संस्कार करने की बजाय उसे नदी में बहा दे रहे हैं। पिछले दिनों बक्सर के चौसा घाट पर 16 शवों को नदी में बहाया गया था। पिछले दिनों हमीरपुर, उप्र में यमुना नदी में दर्जनों शव को नदी में बहता हुआ देखा गया था। जिसके बाद कहा गया था कि ग्रामीण इलाकों में लोग कोरोना संक्रमण के डर के चलते कई शवों को बिना जलाए हुए ही बहा रहे हैं। वैसे हमीरपुर व कानपुर के कुछ इलाकों में यमुना नदी को मोक्ष दाहिनी कालिंदी के रूप में माना जाता है। जिसकी वजह से कुछ लोग स्वजनों के शव को यमुना में बहा देते हैं।

तिरुपति के सरकारी अस्पताल में ऑक्सीजन की कमी से 11 की मौत

तिरुपति,(एजेंसी)। आंध्र प्रदेश के तिरुपति में सोमवार रात ऑक्सीजन की कमी से कम से कम 11 मरीजों ने दम तोड़ दिया। कलेक्टर ने इन मौतों की पुष्टि कर दी है। कलेक्टर एम. हरि नारायण ने बताया कि ऑक्सीजन की कमी से 11 मरीजों की जान चली गई। उन्होंने बताया कि अभी अस्पताल के पास एक टैंकर है और एक और टैंकर सुबह तक पहुंच जाएगा। घटना तिरुपति के रुइया अस्पताल की है, जिसे सरकारी कोविड अस्पताल बनाया गया है। हालांकि, यहां दूसरे मरीजों का इलाज भी चल रहा था। कलेक्टर 11 मौतें होने की बात कह रहे हैं। जबकि, अस्पताल की सुपरिटेंडेंट डॉ. भारती का कहना है कि नौ कोरोना मरीज और तीन नॉन-कोविड मरीजों की जान गई है। इस हिसाब से 12 मौतें होती हैं। जबकि, पांच मरीजों की हालत गंभीर बताई जा रही है।

सुपर रिच टैक्स से बचने के लिए बिल-मेलिंडा का तलाक

न्यूयॉर्क, (एजेंसी)। दुनिया के चौथे सबसे अमीर व्यक्ति बिल गेट्स ने वॉशिंगटन के किंग काउंटी कोर्ट में 27 साल तक दांपत्य जीवन बिताने के बाद तलाक की याचिका दायर कर दी है। 65 साल के बिल गेट्स और 56 साल की मेलिंडा के बीच सब कुछ ठीक नहीं है, इसका पता पिछले साल की एक घटना से भी चला। तब बिल ने माइक्रोसॉफ्ट और दुनिया के मशहूर निवेशक वॉरेन बफेट की कंपनी बर्कशायर हैथवे के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स से इस्तीफा दे दिया था। वह अपने परिवार के साथ ज्यादा वक्त गुजारना चाहते थे। बिल गेट्स के तलाक का एक कारण बाइडेन प्रशासन की अमीरों पर अतिरिक्त टैक्स की नीति को भी माना जा रहा है। इसके तहत शादीशुदा और बेतहाशा कमाई करने वालों को मैरिज पेनल्टी टैक्स (4न) भरने का प्रावधान है। मनी मैनेजमेंट एक्सपर्ट एलविना लो कहते हैं कि तलाक के कई आधार हो सकते हैं, लेकिन पेनल्टी टैक्स से बचने की बात करें तो गेट्स 4 बिलियन डॉलर यानी करीब 30 हजार करोड़ रुपए बचा लेंगे। एक कारण यह भी माना जा रहा है कि उनकी सबसे छोटी बेटी फोएब एडले गेट्स सितंबर में 18 साल की हो गई है। अब वह बालिग की श्रेणी में आ चुकी है। दो अन्य बच्चे जेनिफर और रोरी पहले ही बालिग हैं, इसलिए संपत्ति बंटवारे में उन्हें किसी भी प्रकार की कानूनी अड़चन नहीं आएगी।

भूटान की जमीन भारत के खिलाफ इस्तेमाल कर रहा चीन

बीजिंग, (एजेंसी)। दुनिया भर के देश जहां चीन से निकलकर तबाही मचाने वाले वायरस से निपटने में लगे हैं, तो वहीं अपनी विस्तारवादी नीतियों को अंजाम देने में जुटा है। ड्रैगन साल 2015 से भूटान की एक सुदूर घाटी में सड़कों का विशाल नेटवर्क, इमारतों और सैन्य चौकियां का निर्माण कर रहा है। चीन अंतरराष्ट्रीय स्तर और ऐतिहासिक रूप से भूटानी माने जाने वाले क्षेत्र में अपने नागरिकों और सुरक्षाबलों को बसाने के साथ ही सैन्य उपकरण भी तैनात कर रहा है। चीन अपने इस निर्माण कार्य के दम पर भूटान को भारत के खिलाफ इस्तेमाल करना चाहता है। चीन ने 2015 में एलान किया था कि वह तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के दक्षिण में ग्यालफुग गांव बसा रहा है, लेकिन यह गांव भूटान में पड़ता है। माना जा रहा है कि भूटान में निर्माण कार्य चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग द्वारा तिब्बती सीमावर्ती क्षेत्रों को मजबूत करने के लिए एक प्रमुख अभियान का हिस्सा है। रिपोर्ट के मुताबिक, चीन ने 2015 में तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर) के दक्षिण में जियेलुओबोइ नाम का एक नया गांव बसाने की घोषणा की थी। हालांकि, तिब्बत में ग्यालाफुग नाम से पहचाना जाने वाला यह गांव भूटान की सीमा में पड़ता है। ऐसे में चीनी अधिकारियों ने अंतरराष्ट्रीय सीमा का उल्लंघन किया है। उनकी यह कोशिश हिमालयी क्षेत्र में भारत समेत अन्य देशों के हितों को कमतर करने के वर्षों से जारी अभियान का हिस्सा है।

बार्नेट के अनुसारए ग्यालाफुग पर दावा जताकर चीन भूटान सरकार पर क्षेत्र को उसके हवाले करने का दबाव बना रहा है। इसका मकसद भारत से जारी संघर्ष में सैन्य लाभ हासिल करना है। यानी चीन को असल में यह इलाका चाहिए नहीं, लेकिन सिर्फ भारत पर दबाव बनाने के लिए वह इसपर कब्जा कर रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि ग्यालाफुग में निर्माण चीन और भूटान के बीच हुई स्थापना संधि का सीधा उल्लंघन है। बीजिंग भूटान के कई अन्य सीमाई इलाकों में भी सैन्य दखल बढ़ा रहा है, जिसका हिमालयी देश ने कड़ा विरोध किया है।

पेरिस में जलवायु परिवर्तन के खिलाफ एक रैली में भाग लेते हुए प्रदर्शनकारी।

स्पेन में कोरोना महामारी के कारण लगे प्रतिबंध हटाये जाने के बाद उत्साहित लोग।

6 साल से कोरोना वायरस को जैव हथियार के रूप में विकसित कर रहे थे चीनी वैज्ञानिक

वाशिंगटन, (एजेंसी)। कोरोना वायरस महामारी विकराल रूप लेती जा रही है। इसकी उत्पत्ति को लेकर अब तक कोई ठोस सबूत नहीं मिल सके हैं। सबसे पहले इसका शिकार बने चीन ने उन आरोपों का खंडन किया है जिनमें वुहान के बाजार या लैब से इसके फैलने की बात कही गई थी। हालांकि, 6 साल पुराने एक दस्तावेज के मुताबिक चीनी वैज्ञानिक कोरोना वायरस की मदद से जैव हथियार तैयार करने पर काम कर रहे थे जिससे तीसरा विश्व युद्ध लड़ा जा सके। अमेरिकी अधिकारियों को मिले इस दस्तावेज में 6 साल से जैव और जेनेटिक हथियार तैयार करने की बात कही गई है।

अमेरिकी स्टेट डिपार्टमेंट को मिले दस्तावेज में दावा किया गया है कि ऐसे युद्ध में जीत के लिए जैव हथियार अहम होंगे। इसमें इनके इस्तेमाल का सही समय भी बताया गया है और दुश्मन के मेडिकल सिस्टम पर असर की चर्चा भी की गई है। एक मीडिया रिपोर्ट में पीपल्स लिबरेशन आर्मी के वैज्ञानिकों और स्वास्थ्य अधिकारियों के डोजियर पर बात की गई है और हथियार बनाने के लिए बीमारियों के इस्तेमाल की बात कही गई है। विश्वेषकों के मुताबिक कम से कम 18 वैज्ञानिक हाई-रिस्क लैब में इस पर काम कर रहे थे।

इस दस्तावेज के लेखकों के मुताबिक तीसरा विश्व युद्ध जैव हथियारों से लड़ा जाएगा। पहले विश्व युद्ध को केमिकल और दूसरे को परमाणु कहा जाता है। इसमें कहा गया है कि जैसे दूसरे विश्व में जीत परमाणु बम ने दिलाई थी और जापान ने हमले के बाद आत्मसमर्पण कर दिया था, वैसे ही तीसरे विश्व युद्ध में जैव हथियार जीत दिलाएंगे। अमेरिकी विशेषज्ञों ने दावा किया कि यह रिपोर्ट सामने आने से यह चिंता पैदा हो गई है कि चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के करीबी आखिर किस मकसद से काम कर रहे हैं।

न्यू स्पेसीज आफ मैन मेड वायरसेज एज जेनेटिक बायोवीपान्स नाम के दस्तावेज में हथियार के सही समय पर इस्तेमाल से ज्यादा से ज्यादा नुकसान पर चर्चा की गई है। इसमें कहा गया है कि ऐसे हमले दिन के वक्त साफ मौसम में नहीं करने चाहिए। इन पर सूरज, पानी और बर्फ का असर हो सकता है। इन्हें तड़के सुबह, शाम या बदली के दौरान इस्तेमाल करना चाहिए। रिसर्च में कहा गया है कि इस हमले से दुश्मन की स्वास्थ्य व्यवस्था चरमरा जाएगी। ऑस्ट्रेलियन स्ट्रटीजिक पॉलिसी इंस्टिट्यूट के एग्जिक्यूटिव डायरेक्टर पीटर जेनिंग्स के मुताबिक यह हथियार भले ही आत्मरक्षा के लिए तैयार किए गए हों, लेकिन इनके इस्तेमाल का फैसला वैज्ञानिकों के हाथ में नहीं होगा।

इजराइल-फिलिस्तीन के बीच तनाव बढ़ा

जेरूसलम, (एजेंसी)। इजराइल और फिलिस्तीन के बीच संघर्ष बढ़ता ही जा रहा है। अब खबर है कि रविवार को फिलिस्तीन के उग्रवादियों की तरफ से इजराइल की ओर चार रॉकेट दागे गए। द टाइम्स ऑफ इजराइल के मुताबिक गाजा पट्टी से अश्कलोन शहर और उसके आसपास के इलाके में दो रॉकेट दागे गए हैं। यहां इससे पहले भी दो और रॉकेट दागे जाने का दावा किया गया है। ये जानकारी द इजराइल डिफेंस फोर्स ने दी है।

सेना के मुताबिक, पहले दो रॉकेट को आयरन डोम मिसाइल डिफेंस सिस्टम की मदद से इंटरसेप्ट किया गया। जबकि दूसरी बार में दो अन्य रॉकेट एक खुले इलाके में जाकर गिरे। अब तक किसी तरह के नुकसान की जानकारी नहीं है। इससे पहले 7 मई को यरुशलम स्थित अल-अक्सा मस्जिद परिसर में पुलिस और फिलिस्तीनी नागरिकों के बीच झड़प हुई थी। अल-अक्सा मस्जिद इस्लाम में तीसरा सबसे पवित्र स्थान है। यहूदियों के लिए भी इसका बड़ा महत्व है। चूंकि रमजान का महीना चल रहा है। इस वजह से 7 मई को यहां काफी लोग इका हुए थे। फिलिस्तीन के राष्ट्रपति ने इस झड़प के लिए इजराइल सरकार को जिम्मेदार ठहराया है। उन्होंने कहा है कि वह अक्सा हीरोज का समर्थन करते हैं।

अमेरिका के कई राज्यों को अब वैक्सीन की जरूरत नहीं

न्यूयार्क, (एजेंसी)। दुनिया में कोरोना वायरस की नई वैक्सीनों को मंजूरी मिल रही है। दूसरी ओर विश्व की आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा वैक्सीन के इंतजार में है। अमीर देशों ने वैक्सीन की जमाखोरी कर रखी है। अमेरिका में तो कई राज्यों ने बाइडेन सरकार ने कहा है कि उन्हें वैक्सीन की सप्लाई बंद कर दी जाए। इन राज्यों में वैक्सीन की मांग कम हो गई है। विशेषज्ञों ने आगाह किया है कि वैक्सीनेशन की धीमी गति को दुरुस्त के लिए कुछ अन्य कदम उठाने की जरूरत है। भारत और दक्षिण अमेरिका में वायरस के तेजी से फैलने के कारण लोगों को वैक्सीन का रक्षा कवच देने की जरूरत बढ़ गई है। वायरस का प्रसार लंबे समय तक होने के कारण उसे अपना स्वरूप बदलने का मौका मिलेगा। उसके नए वेरिएंट वैक्सीनों को बेअसर कर सकते हैं। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी डेटा बेस के अनुसार अमेरिका ने अपनी 44 प्रतिशत से अधिक आबादी को कम से कम एक डोज लगा दी है। जबकि अफ्रीका में यह आंकड़ा केवल एक प्रतिशत है। डब्लूएचओ द्वारा शुक्रवार को चीन की सिनोफार्म वैक्सीन को हरी झंडी देने का वैज्ञानिक समुदाय ने स्वागत किया है। यह वैक्सीन का समान वितरण करने के लिए बने कोवैक्स अभियान में शामिल होगी। डब्लूएचओ एक अन्य चीनी वैक्सीन को अगले सप्ताह मंजूरी दे सकता है। लेकिन, चीनी वैक्सीनों को लेकर बंधी उम्मीदें कमजोर पड़ रही हैं। चीन ने दावा किया था कि वह इस वर्ष के अंत तक पांच अरब डोज बना लेगा। लेकिन, अब चीनी अधिकारियों का कहना है कि हम अपनी आबादी के लिए पर्याप्त डोज नहीं बना पा रहे हैं।

गर्भवती महिलाओं की जान ले रहा कोरोना, ब्राजील में तैयार हो रही अनाथों की नई पीढ़ी

रियो डे जेनेरो, (एजेंसी)। मदर्स डे के दिन ब्राजील से बेहद दुखद खबर आई है।यहां कोरोना वायरस मां को छीन रहा है।मां के न रहने पर इस दक्षिण अमेरिकी देश में अनाथों की नई पीढ़ी तैयार हो रही है। इस साल के शुरूआती चार महीनों में 4000 से ज्यादा गर्भवती महिलाएं कोरोना संक्रमित हुईं। जिसमें से 494 महिलाओं की मौत हो गई।ये मौतें डिलीवरी से पहले या प्रसव के बाद हुई हैं।इसकारणसैकड़ों नवजात बच्चे और उनसे पहले मौजूद उनके भाई-बहन अनाथ हो गए हैं। ब्राजील में कोरोना की वजह से पहले बुजुर्ग महिलाओं की मौत हो रही थी, लेकिन कोविड-19 के अमेजोनियन वैरिएंट के आने के बाद युवा महिलाएं भी संक्रमित हो रही हैं।40, 30 और 20 की उम्र वाली युवा महिलाएं भी कोरोना का शिकार हो रही हैं।सबसे दुखद बात ये हैं कि कोरोना मां बनने वाली महिलाओं को छीन ले जा रहा है। इसकारण धरती पर आए नवजातों के सिर से मां का साया उठ जा रहा है।

ब्राजील में कोरोना के अमेजोनियन वैरिएंट की वजह से पिछले चार महीनों में करीब 500 युवा गर्भवती महिलाओं की मौत हो गई है। अस्पतालों में संक्रमित गर्भवती महिलाओं की बाढ़ सी आई हुई है। गर्भवती महिलाओं और नवजातों पर नजर रखने वाले एक समूह ने कहा कि पिछले 9 महीनों में इतनी मौतें नहीं हुई, जितनी इस साल के चार महीनों में हो गई।

ब्राजील में गर्भवती महिलाओं को लेकर स्वास्थ्य सुविधाएं पहले से ही कमजोर हैं। कोरोना के आने के बाद गर्भवती महिलाओं और प्रसव के बाद महिलाओं की स्थिति और बिगड़ गई है। यहां के अस्पताल उन्हें पूरी सुरक्षा और सेहत नहीं दे पा रहे हैं। इस देश में मां की ऐसी ही हालत है.

इनदिनों ब्राजील की स्वास्थ्य व्यवस्थाओं पर अत्यधिक भार है। अब इस देश में अनाथों की नई पीढ़ी तैयार हो रही है। ब्राजील दुनिया के चुनिंदा देशों में से एक है जहां पर कोरोना का कहर सबसे ज्यादा है।ब्राजील सरकार ने वैज्ञानिकों की सलाह को शुरूआत से ही दरकिनार किया।

नए और ज्यादा संक्रामक वैरिएंट के आने के बाद इस देश की युवा पीढ़ी खतरे में आ गई है। अमेरिका और भारत के बाद इस देश में भी ऑक्सीजन की कमी होने लगी है। लोगों को सांस लेने में ज्यादा दिक्कत हो रही है।ऑक्सीजन की कमी की वजह से गर्भवती महिलाओं को अत्यधिक परेशानी उठानी पड़ रही है।जबकि, कोरोना संक्रमित महिलाओं को डिलीवरी से पहले और उसके बाद उन्हें ऑक्सीजन की जरूरत पड़ रही है।

रिपोर्ट के अनुसार कोरोना की वजह से ब्राजील में प्रसव पूर्व और प्रसव के बाद महिलाओं की तेजी से मौत हो रही है।इसकी वजह से उन्हें नियो-नेटल समस्याएं हो रही हैं।अगर किसी गर्भवती महिला को पहले से ही कोई सामान्य बीमारी या हीमोग्लोबिन की कमी है और वह कोरोना संक्रमित होती है तो उसकी दिक्कतें और बढ़ जा रही हैं।

पाकिस्तान को लोन देने में आनाकानी कर रहा है चीन

बीजिंग। चाइना-पाकिस्तान इकोनॉमिक कॉरिडोर पर काम करीब-करीब बंद हो गया है। इस बात की जानकारी पाकिस्तानी मीडिया दबे-छिपे सुरों में देता रहा है। अब एक रिपोर्ट से साफ हो जाता है कि आखिर इस प्रोजेक्ट पर दिक्कत क्यों आ रही है और ये क्यों खात्मे की कगार पर है। पाकिस्तानी सूत्रों के हवाले से बताया है कि चीन अब पाकिस्तान को 6 अरब डॉलर की लोन देने को तैयार नहीं है। चीन को लगता है कि पाकिस्तान आईएमएफ और दूसरे देशों के कर्ज में इतना डूब चुका है कि वो इनके ब्याज की किश्तें भी कर्ज लेकर चुका रहा है। बीजिंग को डर है कि पाकिस्तान कभी सीपीईसी के लोन को नहीं चुका पाएगा। यही वजह है कि उसने लोन रोक लिया है। सीपीईसी के जरिए दक्षिण और मध्य एशिया में अपना दबदबा बढ़ाना चाहता है। इसके जरिए वो बाकी देशों तक अपने माल की सप्लाई कम कीमत में पहुंचाना चाहता है। पाकिस्तान सरकार इसे तकदीर बदलने वाला प्रोजेक्ट बताती रही है। अब इस प्रोजेक्ट ने दम तोडा शुरू कर दिया है, हालांकि फौज के दबाव में पाकिस्तानी मीडिया बहुत दबे सुरों में सच्चाई बताता है। 2018 में मेनलाइन रेलवे प्रोजेक्ट का बजट 9 अरब डॉलर तय किया गया था। 2020 में इसका दायरा कम किया गया और बजट 6.8 डॉलर हो गया। अब इस पर भी चीन ने रोक लगा दी है। इमरान खान के एक करीबी अफसर ने नाम न बताने की शर्त परकहा- हां, यह बात सही है कि बीजिंग यानी चीन को हमसे कुछ बातों के जवाब चाहिए और वो इसकी गारंटी चाहता है। वो चाहते हैं कि हम उन्हें आईएमएफ प्रोग्राम की सभी शर्तें बताएं। ये गुप्त हैं।

आतंकियों ने बनाई महिलाओं की हिटलिस्ट

अफगानिस्तान, (एजेंसी)। अमेरिकी सेना जैसे-जैसे अफगानिस्तान से अपना सामान समेट रही है, वैसे-वैसे आतंकी हमले बढ़ते जा रहे हैं। शनिवार को राजधानी काबुल में सैय्यद-उल-शुहादा हाईस्कूल के बाहर बम ब्लास्ट में मृतकों की संख्या 53 हो गई है। हमला जब हुआ तब बच्चे स्कूल से लौट रहे थे। गृह मंत्रालय के अनुसार मृतकों में अधिकतर 11 से 15 साल की लड़कियां हैं। मंत्रालय के प्रवक्ता तारिक अरियान ने बताया कि घायलों की संख्या 100 के पार है। इस स्कूल में लड़के और लड़कियां दोनों पढ़ते हैं, पर सभी की टाइमिंग अलग है। ये स्कूल तीन शिफ्ट में काम करता है। छात्राएं दूसरी शिफ्ट में पढ़ती हैं, हमला उसी वक्त हुआ जब छात्राएं छुट्टी के बाद घर लौट रही थीं। हमले का बाद अमेरिका-तालिबान के बीच हुए सीज फायर भी सवालों में है। दूसरी ओर, इस्लामिक स्टेट देश में नेटवर्क मजबूत करने में लगा है। ऐसे में आगे बढे का सपना देखने वाली अफगान महिलाओं की सुरक्षा को लेकर उठ रही चिंताएं सही साबित हो रही है। अफगानिस्तान में महिलाएं सिर्फ एक ही चिंता है- अमेरिकी सेना के जाने के बाद उनका क्या होगा। अफगानिस्तान में स्थित यूएन मिशन के अनुसार 2020 में आर्तकियों ने आगे बढे का सपना देखने वाली वाली करीब 400 महिलाओं की हत्या की।

जोर्डन में इजरायली दूतावास के सामने बैनर लेकर नारे लगाते हुए लोग।

चीन अपने क्षेत्र में कोरोना संक्रमण रोकने के लिए माउंट एवरेस्ट पर बनाएगा सीमा रेखा

बीजिंग, (एजेंसी)। चीन ने दुनिया की सबसे ऊंची चोटी एवरेस्ट पर सीमा रेखा बनाने का प्लान बनाया है। चीन ऐसा इसलिए करना चाहता है ताकि उसके क्षेत्र में कोई न आ जा सके। चीन की ओर से यह फैसला दुनिया की सबसे ऊंची चोटी पर कोरोना संक्रमण का मामला पाए जाने के बाद लिया गया है। चीन यह सीमा रेखा इसलिए बनाने वाला है ताकि नेपाल के पर्वतारोही उसके इलाकमें कोरोना वायरस का संक्रमण नहीं फैला सकें।

अप्रैल के आखिरी हफ्ते में चोटी पर कोरोना का पहला मामला सामने आया था। इसके बाद कई लोगों के बीमार होने की सूचना मिली थी। 30 से अधिक बीमार पर्वतारोहियों को हाल के सप्ताहों में नेपाल की दुनिया की सबसे ऊंची चोटी पर स्थित बेस कैंप से निकाला गया। नेपाल कोरोना की दूसरी लहर का सामना कर रहा है, जिससे डर है कि संक्रमण इस क्लाइंबिंग सीजन को खराब कर सकता है। माउंट एवरेस्ट चीन-नेपाल सीमा को घेरता है, जिसमें उत्तरी ढलान चीन की ओर है।

तिब्बती अधिकारियों ने कहा है कि वे उत्तर और दक्षिण ढलानों पर या शीर्ष पर पर्वतारोहियों के बीच संपर्क से बचने के लिए रोकथाम के उपाय करेंगे। तिब्बत पर्वतारोहण संघ ने कहा माउंटेन गाइड पर्वतारोहियों को चढ़ाई शुरू करने की अनुमति देने से पहले पर्वत के शिखर पर सीमा रेखा बनाएंगे। अधिकारी ने इसकी जानकारी नहीं दी कि सीमा रेखा किससे बनेगी। तिब्बत में क्वारंटाइन होने के बाद इस साल इक्कीस चीनी पर्वतारोहियों को एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने की मंजूरी दी गई है।

चीनी पक्ष पहाड़ के उत्तरी किनारे पर चीनी बेस कैंप में वायरस नियंत्रण उपायों को भी बढ़ाएगा। इसके तहत एवरेस्ट प्राकृतिक क्षेत्र में गैर-पर्वतारोही पर्यटकों को प्रवेश करने से मना किया जाएगा। चीन ने पिछले साल से वायरस के प्रकोप के कारण विदेशी नागरिकों के एवरेस्ट पर चढ़ने पर प्रतिबंध लगा दिया था। हालांकि नेपाल ने इस साल पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने के लिए रिकॉर्ड संख्या में चढ़ने के परमिट जारी किए हैं।

नेपाल से अकेले एक एवरेस्ट परमिट की लागत 11,000 डॉलर (8,07,433.55 रुपए) है और पर्वतारोही एक अभियान के लिए 40,000 डॉलर (2936122 रुपए) से ऊपर का भुगतान करते हैं। विदेशी पर्वतारोहियों और नेपाली गाइड्स की टीमों सहित एक हजार से अधिक लोग आम तौर पर नेपाल की तरफ एवरेस्ट की तलहटी में बने टेंट सिटी में डेरा डालते हैं। गाइड्स उन्हें चोटी की ऊंचाई तक ले जाने में मदद करते हैं।

नई दिल्ली। माउंट कार्मेल स्कूल, द्वारका ने अपने ऑडिटोरियम को बदल बनाया 40 बेड्स का कोरोना केयर सेंटर।

आठ माह बाद फिर थमे दिल्ली मेट्रो के पहिये

नई दिल्ली, (एजेंसी)। कोविड महामारी के चलते आठ माह बाद फिर से मेट्रो के पहिये थम गए। दिल्ली सरकार ने तीसरी बार सात दिन (10 से 17 मई तक) का लॉकडाउन बढ़ाने के साथ मेट्रो परिचालन पर भी रोक लगाने का फैसला लिया। अभी लॉकडाउन में सिर्फ जरूरी सेवा से जुड़े लोगों को चलने की अनुमति थी अब उसे भी बंद कर दिया गया है। मेट्रो परिचालन पर पाबंदी के चलते उससे रोजाना सफर करने वाले लोगों की मुश्किल भी बढ़ने वाली है। सरकार की ओर से यह सख्त फैसला उस समय लिया गया है जब दिल्ली में लॉकडाउन के बाद से संक्रमण की दर कम हो रही है। मेट्रो बंद करने के फैसले पर दिल्ली सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि मेट्रो में सिर्फ जरूरी सेवा से जुड़े लोगों के ही चलने की अनुमति थी। मगर इसके बाद भी मेट्रो चलने से बहुत से लोग बेवजह सफर करते दिखे हैं। यही नहीं कुछ स्टेशनों पर भीड़ भी हो रही थी, जिसके चलते यह फैसला लिया गया है। बताते चलें कि मेट्रो का दिल्ली में दिसंबर 2002 से परिचालन हो रहा है। परिचालन शुरू होने के 18 साल बाद बीते वर्ष मार्च 2020 में कोरोना के चलते लगे लॉकडाउन में मेट्रो का पहिया पहली बार पूरी तरह से थमा था। उसके बाद 7 सितंबर से फिर मेट्रो का परिचालन शुरू किया गया था। 12 सितंबर तक सभी नेटवर्क पर सेवा शुरू कर दी गई थी। अब दोबारा 245 दिन बाद दोबारा से मेट्रो परिचालन को पूरी तरह से बंद कर दिया गया है। मेट्रो परिचालन बंद करने के बाद भी दिल्ली में सार्वजनिक परिवहन यानि बस, ऑटो, टैक्सी, ग्रामीण सेवा जैसे अन्य साधन सीमित क्षमता के साथ चलते रहेंगे। सरकार का कहना है कि जरूरी सेवा से जुड़े लोग बसों से सफर कर सकते हैं। वरिष्ठ अधिकारी का कहना है कि लॉकडाउन में बसें खाली चल रही हैं। इसलिए भीड़ होने का खतरा नहीं है। दिल्ली मेट्रो ने भी 10 से 17 मई सुबह पांच बजे तक परिचालन बंद करने की घोषणा कर दी है। लॉकडाउन में मेट्रो अपनी क्षमता के 25 फीसदी से भी कम क्षमता से चल रही थी। आम दिनों में जहां मेट्रो रोजाना 5500-6000 तक फेरे लगाती थी। वह अब 1500-1600 फेरे ही लगा रही थी। यात्रियों की संख्या भी रोजाना दो से तीन लाख रह गई थी। लॉकडाउन में सिर्फ जरूरी सेवाओं से जुड़े लोग, ई-पास धारकों को ही यात्रा की अनुमति थी। इसलिए मेट्रो पीक आवर्स में 15-15 मिनट के अंतराल पर और नॉन पीक आवर्स में 30-30 मिनट के अंतराल पर चल रही थी।

एम्स ने तीसरी लहर के लिए किया आगाह

नई दिल्ली । अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के निदेशक डा. रणदीप गुलेरिया ने कहा है कि देश में इस्तेमाल होने वाले दोनों टीके का बच्चों पर ट्रायल हो रहा है। दूसरे देशों में भी ट्रायल चल रहे हैं। उम्मीद है कि कुछ सप्ताह में सेफ्टी ट्रायल का डाटा आएगा। वैसे कोवैक्सीन के बारे में यह दवा किया जाता है कि उसे 12 साल से अधिक उम्र के बच्चों को दिया जा सकता है। लेकिन, 12 साल से कम व छह साल से अधिक उम्र के बच्चों पर भी ट्रायल हो रहा है।

तीसरी लहर के बारे में कहा ये हो सकता है गंभीर- उन्होंने कहा कि माना जा रहा है कि तीसरी लहर आने पर जिन्हें संक्रमण नहीं हुआ वे बीमारी की चपेट में आ सकते हैं। जिस तरह पहली लहर में बुजुर्ग व दूसरी लहर में युवा अधिक संक्रमित हुए उसी तरह तीसरी लहर में बच्चे अधिक संक्रमित हो सकते हैं। इसलिए यह जरूरी है कि बच्चों पर टीके का ट्रायल जल्द खत्म हो। बच्चों पर टीके की सुरक्षा का डाटा आए तो जल्द उन्हें भी टीका लगाना जरूरी है।

कब आएगा दूसरी लहर का चरम

गुलेरिया के अनुसार संक्रमण अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग समय पर चरम पर पहुंच रहा है। ऐसा लगता है कि महाराष्ट्र व पश्चिमी राज्यों में अब धीरे-धीरे मामले कम हो जाएंगे। 15 या 20 मई से दिल्ली और इसके आसपास के इलाकों में तेजी से मामले कम होंगे। बंगाल सहित पूर्वी राज्यों में अभी कुछ समय तक संक्रमण अधिक रहेगा। इस बात की संभावना है कि चार से छह सप्ताह में पूरे देश में कोरोना की दूसरी लहर से राहत मिलेगी। इसके लिए जरूरी है कि सभी लोग कोरोना से बचाव के नियमों का सही तरीके से पालन करें। जहां लाकडाउन है वहां उसका सख्ती से पालन किया जाए।

मोनोक्लोनल एंटीबाडी दवा को इमरजेंसी इस्तेमाल की मंजूरी

उन्होंने कहा कि मोनोक्लोनल एंटीबाडी दवा को इमरजेंसी इस्तेमाल की मंजूरी मिली है। यह दूसरे देशों में भी उपलब्ध है। भारत की एक कंपनी ने बाहर की कंपनी से समझौता किया है। लेकिन यह हल्के संक्रमण के इलाज के लिए है। अस्पतालों में भर्ती कम गंभीर व गंभीर मरीजों के लिए यह नहीं है। ट्रायल का जो डाटा है उसमें यह देखा गया है कि कोरोना के हल्के संक्रमण से पीड़ित जिन मरीजों की उम्र अधिक है या पहले से कोई बीमारी है, जैसे अधिक वजन, किडनी की बीमारी, जो डायलिसिस पर हैं, कैंसर के मरीज और जो कीमोथेरेपी पर हैं उन्हें मोनोक्लोनल एंटीबाडी शुरुआत में ही देने पर बीमारी गंभीर नहीं होती। लेकिन, गंभीर मरीजों के लिए यह फायदेमंद नहीं है। यह दवा महंगी भी है। इसके अलावा भी कई दवाओं का ट्रायल चल रहा है लेकिन अभी तक ऐसी कोई दवा नहीं आई जो बहुत ज्यादा असरदार हो। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने 2-डीआक्सी डी-ग्लूकोज नाम की एक दवा विकसित की है, इसके परिणाम उत्साहजनक है। यह दवा संक्रमण होने पर वायरस को अपनी संख्या बढ़ाने से रोक सकती है। मरीज को आक्सीजन पर निर्भरता कम हो सकती है और मरीज को जल्दी अस्पताल से छुट्टी मिल सकती है। लेकिन, अभी और शोध व डाटा सामने आने के बाद ही पता चल सकेगा कि इससे कोरोना के इलाज में कितना फर्क पड़ता है।

पिता के अंतिम संस्कार के लिए कार्यकर्ता नताशा नरवाल को मिली अंतरिम जमानत

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दिल्ली उच्च न्यायालय ने पिंजरा तोड़ गैंग की कार्यकर्ता नताशा नरवाल को तीन सप्ताह की अंतरिम जमानत सोमवार को दी है। उनके पिता का रविवार को कोरोना से निधन हो गया। पिता महावीर नरवाल का अंतिम संस्कार करने के लिए अदालत ने उन्हें अंतरिम जमानत दी है। वह पिछले साल मई से तिहाड़ जेल में बंद है। वहीं दूसरी तरफ दिल्ली पुलिस ने उनकी जमानत अर्जी पर विरोध जताया था। उन्होंने कहा था कि उत्तर-पूर्वी दिल्ली में हुए सांप्रदायिक दंगों के सिलसिले में गिरफ्तार जेएनयू छात्र नताशा नरवाल और देवांगना कलिता देश की एकता, अखंडता और सद्भाव को खतरा पैदा करने की एक बड़ी साजिश का हिस्सा थीं।

न्यायमूर्ति सिद्धार्थ मृदुल और न्यायमूर्ति अनूप जयराम भंभानी की खंडपीठ के समक्ष दिल्ली पुलिस की ओर से पेश विशेष अधिवक्ता अमित महाजन ने तर्क रखा था कि नरवाल और कलिता दंगों के दौरान किए जा रहे अपने कृत्यों से भली-भांति अवगत थीं और उन्हें इसके परिणाम भुगतने होंगे जो विनाशकारी हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि उनके खिलाफ मामला केवल गवाहों के बयानों पर आधारित नहीं है। इन षड्यंत्रों को कैमरे में दर्ज नहीं किया जा सकता और यह परिस्थितिजन्य साक्ष्यों के जरिये साबित होता है। आरोपी एक बड़ी साजिश का हिस्सा थे जो देश की एकता, अखंडता और सद्भाव को खतरा पैदा करने के लिए था। यह जरूरी नहीं है कि उन्हें हर कृत्य में शामिल होने की जरूरत है।

जब तक उन्हें इस बात की जानकारी थी कि उनका कृत्य देश की एकता और अखंडता को खतरा पैदा कर सकता है, वे आतंक रोधी अधिनियम (यूएपीए) की धारा 15 के तहत आते हैं। उन्होंने आरोपियों और अन्य लोगों के बीच व्हाट्सएप चैट का हावाला देते हुए कहा कि आरोपी व्हाट्सएप समूहों का हिस्सा बनने के लिए सहमत हुए और उन्हें हर षड्यंत्रकारी के कृत्यों की जानकारी थी। वह समान रूप से उत्तरदायी हैं।

कोरोना पीड़ितों का निजी अस्पतालों में मुफ्त इलाज कराएं केजरीवाल - कांग्रेस

नई दिल्ली । दिल्ली में कोरोना के खराब होते हालात के बीच कांग्रेस ने कोरोना पीड़ितों और उनके परिजनों के प्रति साहनुभूति जताते हुए केजरीवाल सरकार से पीड़ितों का निजी अस्पतालों में मुफ्त इलाज कराने की मांग की है। दिल्ली कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष सुभाष चोपड़ा ने रविवार को ट्वीट कर कहा कि कोरोना के चलते लगाए गए लॉकडाउन से मध्यम और निम्नवर्गीय परिवारों पर भारी आर्थिक बोझ पड़ रहा है।

निजी अस्पताल लोगों को लूट रहे

चोपड़ा ने आरोप लगाया कि कोरोना की विषम परिस्थितियों में भी दिल्ली के निजी अस्पताल लोगों को नोंचने में लगे हुए हैं। आक्सीजन की मांग वह सरकार से कर रहे हैं जबकि मरीजों से वह मोटे मुनाफा वसूलते रहे। मरीज को भर्ती करने से पहले कई अस्पताल तो पांच- पांच लाख रुपए पहले जमा करा रहे हैं।

अब अपने परिजन को तड़पता देख कोई भी व्यक्ति अपना सबकुछ दांव पर लगाता ही है। ऐसे में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को पहल करते हुए राजस्थान सरकार की तर्ज पर कोरोना पीड़ितों का निजी अस्पताल में मुफ्त इलाज कराने की घोषणा करनी चाहिए।

कोरोना पीड़ितों का निजी अस्पताल में मुफ्त इलाज कराने की मांग- उन्होंने कहा कि यह मुश्किल समय है, ऐसे में केजरीवाल सरकार को दिल्लीवालों के इलाज से लेकर उनकी अन्य सभी जरूरतों का ध्यान रखना चाहिए।

चोपड़ा ने इससे पहले भी सीएम केजरीवाल से कोरोना पीड़ितों को मुफ्त में एंबुलेंस सेवा उपलब्ध कराने की मांग की थी। उन्होंने कहा था कि इस बेहद नाजुक व महत्वपूर्ण समय में दिल्ली सरकार निजी एंबुलेंस को अधिगृहित कर उनके किराये को स्वयं वहन करे और कोरोना मरीजों को निशुल्क सेवा प्रदान कराए। यहां बता दें कि कि राजस्थान की गहलोत सरकार ने मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत प्रदेश के सभी प्राइवेट अस्पतालों में कोरोना संक्रमित मरीजों का मुफ्त में इलाज करने का फैसला किया है।

कालाबाजारियों पर करें सख्त कार्रवाई : दिल्ली पुलिस आयुक्त

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दिल्ली पुलिस आयुक्त एसएन श्रीवास्तव ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये क्राइम रिव्यू मीटिंग ली। इस दौरान जिले के सभी पुलिस उपायुक्तों के अलावा ज्वाइंट सीपी और स्पेशल सीपी मीटिंग से जुड़े रहे। कोरोना के समय जीवन रक्षक दवाईयों, उपकरणों व दूसरी चीजों के की कालाबाजारी करने वाले लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई के आयुक्त ने आदेश दिए। जब्त की गई दवाईयों और उपकरणों को जल्दी रिलीज कर अस्पताल व जरूरतमंद लोगों को दे दिया जाए। बैठक के दौरान पुलिस आयुक्त ने ऑनलाइन धोखाधड़ी के मामलों पर खास नजर रखने की हिदायत दी। उन्होंने बताया कि देखा गया है कि ज्यादातर धोखाधड़ी की कॉल्स बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, मेवात व दूसरे राज्यों से आ रही हैं। ऐसे में क्राइम ब्रांच और साइबर सेल आपस में समन्वय स्थापित कर इनके खिलाफ कार्रवाई तेज करे। दूसरी ओर आयुक्त ने कहा कि राजधानी के जिन-जिन क्षेत्रों में लॉक डाउन का सही से पालन नहीं हो रहा है, वहां जिला पुलिस उपायुक्त उसे सख्ती से लागू करें। जिन दुकानों को छूट है वहां लोगों से सामाजिक दूरी का पालन करवाए जाए। जिन जवानों और उनके परिजनों को कोरोना हुआ है। जिला पुलिस उपायुक्त उनको भी सही से इलाज मुहैया करवाए। इसके अलावा आने वाले त्योहार ईद-उल-फितर पर डीडीएमए की गाइड लाइन को सख्त से पालन करवाने के आदेश दिया गया। पुलिस आयुक्त ने जवानों व लोगों से अपील की है कि वह इस संकट की घड़ी में ज्यादा से ज्यादा प्लाज्मा दान कर लोगों की जान बचाएं।

दिल्ली छोड़कर भागा नवनीत कालरा

नई दिल्ली, (एजेंसी)। राजधानी दिल्ली के खान मार्केट में स्थित खान चाचा समेत तीन रेस्तरां से 524 ऑक्सीजन कन्सट्रेटर बरामद करने के मामले में मुख्य आरोपी नवनीत कालरा का अभी तक कोई सुराग नहीं लग सका है। नवनीत कालरा के खिलाफ दिल्ली पुलिस ने लुक-आउट नोटिस भी जारी कर दिया है, ताकि वह देश छोड़कर न जा सके।

होटलों से 524 ऑक्सीजन कन्सट्रेटर बरामद करने के मामले में मुख्य आरोपी नवनीत कालरा की तलाश में अपराध शाखा की कई टीमें आरोपी की तलाश में दिल्ली, यूपी और उत्तराखंड में 20 से अधिक स्थानों पर दबिश दे चुकी है, लेकिन वो हाथ नहीं लग सका है। आरोपी की सीडीआर से पता चला है कि शुक्रवार को खान चाचा रेस्तरां में छापा पड़ने के कुछ ही देर बाद छतरपुर स्थित उसके फार्म हाउस पर उसका मोबाइल फोन बंद हो गया था। छानबीन के दौरान पुलिस को पता चला है कि नवनीत अपने पूरे परिवार के साथ दो लग्जरी गाड़ियां लेकर दिल्ली से निकला है और उसके उत्तराखंड में छिपे होने की आशंका है।

दिल्ली पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि मामले की जांच के लिए पुलिस टीम ने दक्षिण दिल्ली के छतरपुर स्थित नवनीत के फार्म हाउस और सैनिक फार्म के घर पर छापा मारा था, लेकिन आरोपी वहां नहीं मिला। पुलिस ने दोनों जगहों से कुछ सबूत जुटाए हैं। पुलिस को पता चला कि आरोपी ने चीन से एक निजी कंपनी के जरिये कन्सट्रेटर मंगाए थे। इनमें से करीब 150 कन्सट्रेटर नवनीत कालरा के कर्मचारी बेच चुके थे। इसके अलावा आरोपी ने बहुत लोगों से कन्सट्रेटर के नाम पर एडवांस रुपये भी लिए हुए थे। किस-किस से कितने रुपये लिए थे, यह सब नवनीत की गिरफ्तारी के बाद ही पता चल पाएगा।

मनीष सिसोदिया ने दिए उत्तरी दिल्ली नगर निगम के अस्पताल से 23 मरीजों के लापता होने पर जांच के आदेश

नई दिल्ली । उत्तरी दिल्ली नगर निगम के हिंदू राव अस्पताल से गायब हुए 23 मरीजों के मामले में उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने जांच के आदेश दिए हैं। उन्होंने कहा है कि यह बेहद चौंकाने वाला है कि अस्पताल के कोरोना मरीज कैसे लापता हो गए। इस मामले में जिम्मेदारी तय की जाए और पूरे मामले की रिपोर्ट सोमवार तक सरकार को सौंपी जाए। वहीं आप के वरिष्ठ नेता दुर्गेश पाठक ने रविवार को बयान जारी कर कहा कि उत्तरी नगर निगम के अस्पताल से 23 मरीज लापता हैं, लेकिन नगर निगम को इसकी कोई होश-खबर तक नहीं है। पाठक ने आरोप लगाया कि उत्तरी नगर निगम के महापौर जय प्रकाश ने झूठ बोला कि उन्होंने पुलिस में इसकी जानकारी दी है। पुलिस ने साफ किया कि ऐसी कोई शिकायत दर्ज नहीं की गई है। उन्होंने कहा है कि भाजपा शासित नगर निगमों के पास लगभग 4000 बेड हैं, लेकिन उन्होंने दिल्ली वालों के लिए मुश्किल से 200-250 बेड दे रखे हैं। इन मरीजों का भी निगम हिसाब-किताब नहीं रख पा रहे हैं। आम आदमी पार्टी ने लापता मरीजों के लिए जिम्मेदार सभी लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

कोरोना वार्ड की सुरक्षा दिल्ली सरकार के पास होती है- कपूर

उत्तरी दिल्ली नगर निगम के अस्पताल से मरीजों के गायब होने को लेकर आप नेता दुर्गेश पाठक के बयान को भाजपा ने आधारहीन बताया है। प्रदेश भाजपा के प्रवक्ता प्रवीण शंकर कपूर ने कहा कि कोरोना संकट के समय आप नेता झूठ बोल रहे हैं। पाठक को यह जानकारी होनी चाहिए कि कोरोना वार्ड की सुरक्षा की जिम्मेदारी सिविल डिफेंस और दिल्ली सरकार के अधिकारियों के पास होती है। अस्पताल से मरीज गायब होने को लेकर आप नेता को दिल्ली सरकार से सवाल करना चाहिए।

लॉकडाउन में बंद हुआ काम तो रेमडेसिविर दिलाने के नाम पर शुरू की ठगी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। उत्तर जिला पुलिस ने रेमडेसिविर के नाम पर ठगी करने वाले ट्रवेल एजेंट को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान 53 साल के अनुज कुमार के तौर पर हुई है। दवा के नाम पर ठगी को लेकर अनुज पर चार मुकदमे दर्ज हैं। डीसीपी अंटो अल्फोंस ने बताया कि आक्सीजन सिलेंडर, रेमडेसिविर दवा और अन्य चिकित्सकीय उपकरणों के नाम पर ठगी में लिप्त बदमाशों को पकड़ने के लिए एसीपी उमाशंकर की देखरेख में एएटीएस की टीम बनाई गई है। इसके लिए एसआई राजपाल मीणा एवं अन्य पुलिसकर्मी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे मैसेज की जांच कर रहे हैं। इसी दौरान एक मोबाइल नम्बर मिला जिसपर रेमडेसिविर इंजेक्शन दिलाने का दावा किया जा रहा था। एएटीएस की टीम ने इस नम्बर पर जरूरतमंद बनकर फोन किया और रेमडेसिविर इंजेक्शन की मांग की। इसके लिए दूसरी तरफ से शख्श ने बैंक खाते में रुपये जमा कराने को कहा। पुलिस ने बैंक खाते और मोबाइल नम्बर केसहारे रविवार को लाजपत नगर इलाके से अनुज को गिरफ्तार कर लिया।

आरोपी ने बताया कि वह ट्रवेल एजेंट का काम करता था लेकिन लाकडाउन में काम बंद हो गया। वह अप्रैल की शुरूआत में मूलचंद अस्पताल गया था जहां पर लोगों को आक्सीजन और रेमडेसिविर दवा के लिए परेशान होते देखा। तभी उसे इस तरह से ठगी करने का उपाय सूझा। आरोपी के मोबाइल नम्बर खंगालने पर मालूम हुआ कि वह दो सौ लोगों से सम्पर्क कर चुका था। इसके लिए वह अपने मोबाइल नम्बर को व्हाट्स एप एवं फेसबुक के जरिए प्रसारित करता था। फिर जब कोई सम्पर्क करता था तो पहले आधी रकम अपने बैंक खाते में जमा कराने के लिए कहता था। करीब 18 हजार रुपये जमाकराने पर मोबाइल बंद कर लेता था। जांच में मालूमहुआ है कि आरोपी पर सब्जी मंडी, समयपुर बादली सहित दिल्ली के चार थानों में रेमडिसिविर के नाम पर ठगी की एफआईआ दर्ज है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि आरोपी के बैंक खाते में चार लाख रुपये मिले हैं। अभी तक दिल्ली एनसीआर के कईथानों में आरोपी के खिलाफ शिकायतें मिलने की बात सामने आई हैं। पुलिस सभी पीड़ितों से सम्पर्क कर रही है।

किराये के टैंकर में फरीदाबाद से ऑक्सीजन भरवाने से जुड़े दस्तावेज पेश करें इमरान हुसैन

नई दिल्ली । ऑक्सीजन की जमाखोरी के आरोपों को खारिज करने और किराये के सिलेंडर को हरियाणा के फरीदाबाद से भरवाने के कैबिनेट मंत्री इमरान हुसैन के दावे पर दिल्ली हाई कोर्ट ने अहम निर्देश दिए हैं। न्यायमूर्ति विपिन सांघी व न्यायमूर्ति रेखा पल्ली की पीठ ने इमरान हुसैन को निर्देश दिया कि अपने दावे से जुड़े दस्तावेज अदालत मित्र व वरिष्ठ अधिवक्ता राजशेखर राव के समक्ष पेश करें। अदालत मित्र उक्त दस्तावेजों को सत्यापित करेंगे। साथ ही दिल्ली सरकार को हलफनामा दायर करके बताने को कहा कि इमरान हुसैन को दिल्ली के ऑक्सीजन आपूर्तिकर्ताओं से ऑक्सीजन दी जा रही थी या नहीं। पीठ ने उक्त निर्देशों के साथ सुनवाई 13 मई तक के लिए स्थगित कर दी।

सुनवाई के दौरान पीठ के सात मई के आदेश पर इमरान हुसैन अदालत के समक्ष पेश हुए। इमरान की तरफ से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता विकास पाहवा ने कहा कि इमरान हुसैन ने दिल्ली से तीन सिलेंडर किराये पर लिए और उसे फरीदाबाद से भरवा कर जरूरतमंदों की मदद की जा रही है। पीठ ने जब ऑक्सीजन प्राप्त करने का स्रोत पूछा तो विकास पाहवा ने कहा कि इससे जुड़े दस्तावेज उपलब्ध करा दिए जाएंगे। पीठ ने इस पर सवाल उठाते हुए कहा कि आपने 22 पेज का जवाब दाखिल किया है, लेकिन इससे जुड़ा कोई भी दस्तावेज क्यों नहीं दिया गया। हालांकि, पीठ ने कहा कि अगर आप दिल्ली के आपूर्तिकर्ताओं के बजाए अन्य स्रोत से ऑक्सीजन हासिल करके दिल्ली की आपूर्ति को बढ़ाने की कोशिश कर रहे तो हमें इसमें आपत्ति नहीं है।

वहीं,याचिकाकर्ता की तरफ से पेश हुए अधिवक्ता अमित तिवारी ने कहा कि अगर ये गलत नहीं है तो फिर उन्होंने फेसबुक पोस्ट को क्यों हटा दिया और वितरण क्यों बंद कर दिया। एक अन्य याचिकाकर्ता के अधिवक्ता विराग गुप्ता ने कहा कि राजनीतिक पार्टियों के नेता आक्सीजन से लेकर दवाओं को प्राप्त करके बांट रहे हैं। पीठ ने कहा कि जहां तक ऑक्सीजन का सवाल है इसे खरीदने पर प्रतिबंध नहीं है। पीठ ने कहा कि अगर यह आवंटित आपूर्ति से नहीं ले रहे हैं तो वे समाज की सेवा कर रहे हैं।

सात मई को हुई सुनवाई के दौरान अमित तिवारी ने पीठ के समक्ष फेसबुक पर डाली गई पोस्ट को दिखाते हुए कहा था कि इस पोस्ट को आम आदमी पार्टी के वेरिफाइड एकाउंट से पोस्ट किया गया। यह पोस्ट दिल्ली सरकार के मंत्री इमरान हुसैन द्वारा ऑक्सीजन वितरण के संबंध में किया गया है।

उन्होंने कहा कि राजनेताओं द्वारा ऑक्सीजन की जमाखोरी की जा रही है और इस मामले की जांच होनी चाहिए कि उन्हें ऑक्सीजन कहां से मिल रहा है। सुनवाई के दौरान दिल्ली सरकार के स्टैंडिंग काउंसल राहुल मेहरा ने कहा था कि इस तरह की जानकारी मिलने पर आम नागरिक को स्थानीय पुलिस के पास जाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा था कि एक बात साफ है कि ऑक्सीजन ही नहीं दवाओं व इंजेक्शन की जमाखोरी व कालाबाजारी करने वाले किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा।

संपादकीय

सियासी बिसात पर कोई बड़ा बदलाव नहीं

हाल में जिन पांच राज्यों और केंद्रशासित प्रदेश में चुनाव हुए, उनमें भाजपा की प्राथमिकता सूची में दो राज्य - पश्चिम बंगाल और असम क्रमशः पहले और दूसरे नंबर पर थे। असम में उसके सामने जहां अपनी सरकार बचाने की चुनौती थी, वहीं पड़ोसी पश्चिम बंगाल में वह दस साल से सरकार चला रही तृणमूल कांग्रेस को पराजित कर सत्ता हासिल करने के लक्ष्य और दावे के साथ मैदान में उतरी थी। असम में विपक्षी गठबंधन की ओर से मिलने वाली चुनौतियों की वजह से उसकी सरकार दांव पर थी, तो बंगाल में वह ममता बनर्जी सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती और सत्ता की प्रमुख दावेदार के तौर पर उभरी थी। असम की चुनौती तो पार्टी ने पार कर ली है और बहुमत के साथ अपनी सरकार बचा ली है। ऐसा करते हुए उसने लगातार दूसरी बार सत्ता में आने वाली पहली गैर-कांग्रेसी सरकार होने का रिकॉर्ड भी अपने नाम कर लिया है, लेकिन इस जीत की खुशी भी बंगाल चुनाव में उसकी पराजय का गम कम नहीं कर सकती। यह भी तय है कि बंगाल के चुनावी नतीजों का असर दूरगामी होगा। अब इस जीत के बाद वर्ष 2024 में ममता विपक्ष का चेहरा बन सकती हैं।

भाजपा के पास न जमीनी नेता थे और न ही बहुमत के लिए जरूरी मजबूत संगठन। यही वजह है कि उसे करीब आधी सीटों पर दूसरे दलों से आने वाले नेताओं को मैदान में उतारना पड़ा। नतीजों से साफ है कि वोटरों ने ऐसे ज्यादातर दलबदलुओं को नकार दिया है। टिकट न मिलने से निराश कार्यकर्ताओं ने भी चुनाव अभियान में बेमन से काम किया। अब नतीजा सामने है। ममता की कद-काठी का कोई नेता नहीं होने का नुकसान भी पार्टी को हुआ। भाजपा ने जिस बड़े पैमाने पर धार्मिक ध्रुवीकरण शुरू किया था, उसका खामियाजा भी उसे भुगतना पड़ा है। ममता बनर्जी की हैट्रिक में भाजपा की ऐसी रणनीतिक गलतियों की अहम भूमिका रही। इसके साथ ही, रैलियों में दीदी-ओ-दीदी कहते हुए ममता का मजाक उड़ाने का वोटरों पर प्रतिकूल असर पड़ा लगता है। केंद्र की ओर से चुनाव के मौके पर सीबीआई, ईडी और आयकर जैसी केंद्रीय एजेंसियों के कथित राजनीतिक इस्तेमाल को भी ममता बनर्जी ने असरदार मुद्दा बनाया। अपनी हार के लिए भाजपा अब चुनावी धांधली का बहाना नहीं कर सकती। हालांकि, वर्ष 2016 की तीन सीटों से यहां तक पहुंचना और राज्य की दूसरी सबसे बड़ी पार्टी के तौर पर उभरने की उपलब्धि भी कम नहीं है। लेकिन जब मंजिल दो सौ के पार हो और लक्ष्य सत्ता का सिंहासन हो, तो यह उपलब्धि कोई मायने नहीं रखती। अब नतीजों के बाद पार्टी में स्थानीय स्तर पर केंद्रीय नेताओं के खिलाफ असंतोष खदबदाने लगा है। पड़ोसी असम में विपक्षी गठबंधन की ओर से सत्तारूढ़ भाजपा गठबंधन को कड़ी चुनौती मिल रही थी। वहां खासकर पूर्वोत्तर के चाणक्य कहे जाने वाले भाजपा नेता और असम सरकार के वित्त मंत्री हिमंत बिस्वा सरमा की वजह से पार्टी की राह आसान हो गई। यह उनकी रणनीति का ही नतीजा था कि जिस नेशनल रजिस्टर फॉर सिटीजंस (एनआरसी) और नागरिकता कानून (सीएए) का असम में सबसे ज्यादा विरोध हुआ था, वहीं यह दोनों मुद्दे हाशिए पर चले गए।आखिर असम में भाजपा की राह आसान कैसे हुई? दरअसल, राज्य की करीब 45 सीटों पर चाय बागान मजदूरों के वोट निर्णायक हैं। नतीजों से पता चलता है कि चाय मजदूरों का समर्थन भगवा खेमे को ही मिला है। इसके अलावा कांग्रेस के बदरुद्दीन अजमल की पार्टी के साथ हाथ मिलाने की वजह से राज्य में वोटरों का जबरदस्त ध्रुवीकरण देखने को मिला। भाजपा ने जिस तरह पड़ोसी देश से होने वाली घुसपैठ को अपना सबसे प्रमुख मुद्दा बनाया था और सत्ता में आने पर लव जिहाद केखिलाफ कानून बनाने की बात कही थी, उससे हिंदी वोटरों को एकजुट करने में सहायता मिली है। खासकर हिंदू बहुल इलाकों में उसकी जीत से यह बात शीशे की तरह साफ है। दूसरी ओर, कांग्रेस को इस बार चाय बागान मजदूरों का समर्थन मिलने की उम्मीद थी, इसी वजह से राहुल गांधी और प्रियंका गांधी जैसे नेता अक्सर चाय बागानों का दौरा करते देखे गए, लेकिन पर्याप्त सफलता नहीं मिली। अजमल का साथ होने की वजह से विपक्षी गठबंधन को अल्पसंख्यक बहुल इलाकों में कामयाबी जरूर मिली, लेकिन वह पर्याप्त नहीं थी। यही वजह है कि सत्ता में वापसी का कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन का सपना पूरा नहीं हो सका। इस चुनाव में पार्टी को तरुण गोगोई जैसे नेता की कमी भी काफी खली।

ऐसे में कई राज्यों ने स्थानीय स्तर पर लॉकडाउन, नाइट कर्फ्यू और वीकेंड कर्फ्यू जैसी पाबंदियां लगाई हैं जिनका असर आर्थिक गतिविधियों पर भी दिखने लगा है। मौसम संबंधी पूर्वानुमान जाहिर करने वाली निजी संस्था स्काईमेट के बाद भारतीय मौसम विभाग ने भी मानसून के सामान्य रहने का पूर्वानुमान लगाया है। इसका आशय यह है कि इस वर्ष झमाझम बारिश होगी। इससे खरीफ फसल की पैदावार अच्छी रहेगी और अनाज के अच्छे उत्पादन से अर्थव्यवस्था को सहारा मिलेगा। मौसम विभाग के मुताबिक मानसून लंबी अवधि में 98 फीसद रहेगा। इस पूर्वानुमान को कोरोना संकट के मद्देनजर अर्थव्यवस्था के लिए अहम माना जा रहा है। कृषि क्षेत्र को देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है और पिछले साल भी कोरोना संकट के दौरान इसी क्षेत्र ने अर्थव्यवस्था को संभाले रखा था। महामारी की पहली लहर में जब हर क्षेत्र में नकारात्मक वृद्धि थी, अकेले कृषि क्षेत्र ऐसा रहा, जिसमें सकारात्मक विकास दर रही यानी एक तरह से भारतीय अर्थव्यवस्था की बुनियाद कृषि क्षेत्र ही साबित हुआ। वित्त वर्ष 2020-21 की पहली तिमाही में जीडीपी यानी सकल घरेलू उत्पाद 23.9 प्रतिशत तक गिर गया था। लेकिन कृषि एकमात्र ऐसा क्षेत्र था जिसने सकारात्मक वृद्धि दर्ज की। यह कालखंड महामारी से सर्वाधिक पीड़ित समय था। लॉकडाउन रबी की फसलों के साथ शुरू हुआ था फिर भी कृषि द्वारा सकल मूल्य वर्धन पिछले वर्ष 2019-20 की तुलना में 3.4 प्रतिशत तक बढ़ा था। एक अनुमान के मुताबिक इस साल मानसून अच्छा रहा तो जीडीपी में कृषि की हिस्सेदारी 16 फीसद तक पहुंच सकती है, जो वर्ष 2020 में 14.6 फीसद रही थी यानी हम कह सकते हैं कि महामारी कृषि और इससे जुड़े सेक्टर को एक व्यापक अवसर के रूप में सामने लेकर आई है।

प्रवीण कुमार सिंह

आखिर देश के हर राज्य में हमारी समूची स्वास्थ्य व्यवस्था क्यों धराशायी हो गई?

चिंता इस बात को लेकर भी है कि केंद्र और राज्य सरकारों ने आयुर्वेद को एक मजबूत विकल्प के तौर पर बढ़ावा क्यों नहीं दियाभारत के मौजूदा हालात को देखते हुए केंद्र सरकार को यह समझना होगा कि चिकित्सा व्यवस्था, सार्वजनिक परिवहन और शिक्षा जैसे कई अहम क्षेत्रों में सरकारी क्षेत्र से जुड़ी संस्थाएं समाप्त नहीं हो, बल्कि इनकी गुणवत्ता में व्यापक सुधार किया जाए, ताकि लोग ब्रांड बन कर मुनाफाखोरी में जुटे किसी अस्पताल में जाने की बजाय सरकारी अस्पतालों को प्राथमिकता दें। इन सरकारी अस्पतालों में इलाज के नाम पर अव्यवस्था न हो, लेकिन यहां काम करने वाले चिकित्सकों को अधिक से अधिक वेतन और सम्मान हो।

हमारा पूरा तंत्र अंदर से खोखला है और अगर समय रहते इसे नहीं सुधारा गया तो कभी कोई महामारी तो कभी कोई प्राकृतिक आपदा, हमारी तबाही की कहानी लिखती रहेगी। देश में कभी योजना आयोग था, अब नीति आयोग बन गया, नाम बदला लेकिन इन इमारतों में बैठकर देश की तरक्की के लिए बौद्धिक उछलकूद करने वालों में ज्यादातर लोग ऐसे हैं जिन्हें देश की बुनियादी समस्याओं की समझ नहीं है। ये लोग आंकड़ों का पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन बनाने में माहिर हैं, लेकिन जमीनी हकीकत से कोसों दूर हैं और ऐसे लोगों की तथाकथित दूरदर्शिता का दुष्परिणाम देश भुगत रहा है।

इसमें कोई दो मत नहीं कि 2014 के बाद देश की राजनीति में आए एक बड़े परिवर्तन के बाद आम जनमानस ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सकारात्मक बदलाव को महसूस किया। नए भारत के निर्माण को लेकर नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के उठाए गए कदमों पर लोगों ने भरोसा जताया। बिना घोटाले की पांच साल की मोदी सरकार के कार्यकाल के लेखा जोखा ने लोगों को यह तसल्ली दिलाई कि एक मजबूत इरादे के साथ देश में सकारात्मक बदलाव संभव है। जनता के इसी भरोसे की वजह से 2019 में देश का जनमानस मोदी सरकार के साथ खड़ा दिखाई दिया। वर्ष 2014 के बाद एक बड़े राजनीतिक बदलाव के बीच नए भारत के निर्माण की शुरूआत का देश साक्षी बना, कहीं गांव और शहरों को जोड़ने वाली देश की सड़कों के विस्तार पर विकास की नई इबारत लिखना शुरू हुई तो कहीं गांवों को बिजली र इंटरनेट से जोड़े जाने पर तेजी से काम होता दिखाई दिया।

प्रधानमंत्री आवास के माध्यम से गरीब के सिर पर छत मिलने का सिलसिला शुरू हुआ तो कहीं गरीब की रसोई में गैस सिलेंडर पहुंचाने का लक्ष्य हासिल किया गया। खुले में शौच से देश को मुक्ति दिलाने के लिए

हर घर में शौचालय तैयार हुए तो देश में स्वच्छता को लेकर एक आंदोलन खड़ा हो गया जिसने देश के गांव और शहरों में स्वच्छता को लेकर एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा शुरू कर दी। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत किसानों के खाते में हर साल छह हजार रुपये की राशि के अलावा सरकार ने खेती किसानी के क्षेत्र में कई बड़े सकारात्मक कदम भी उठाए। अब केंद्र सरकार ने 'हर घर में नल' का लक्ष्य अपने हाथ में लिया है और इस दिशा में तेजी से काम होता दिखाई दे रहा है। इतना ही नहीं, जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 को हटाए जाने जैसा ऐतिहासिक निर्णय हो, कश्मीर में सकारात्मक बदलाव की मौजूदा पहल हो, राष्ट्रीय सुरक्षा को लेकर उठाए गए कदम हों या फिर आतंकवाद पर कसी नकेल, ऐसे तमाम कदमों ने हर भारतीय के मन में सशक्त राष्ट्र की कल्पना को साकार किया है।

आपदा में अवसर ? अब सवाल यह उठता है कि गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले लोगों के मन में जब उम्मीद की नई किरण जगना शुरू हुई है और हर भारतीय के मन में अब सशक्त राष्ट्र की कल्पना साकार होते दिख रही है तो एक फिर एक महामारी के बाद केंद्र से लेकर राज्यों तक फैला हमारा समूचा तंत्र स्वयं क्यों बीमार दिखाई देने लगा है? आखिर देश के हर राज्य में हमारी समूची स्वास्थ्य व्यवस्था क्यों धराशायी हो गई? चारों तरफ चीख पुकार मची है, सरकारें मौत के आंकड़ों पर पर्दा डाल रही हैं। एक साल का वक्त मिलने के बाद भी केंद्र और राज्य मिलकर इस बीमारी से निपटने के लिए प्रभावी कदम क्यों नहीं उठा सके? मार्च 2020 में कोरोना की दस्तक के बाद लंबे समय के लॉकडाउन ने अर्थव्यवस्था को भले ही नुकसान पहुंचाया, लेकिन उस वक्त इस बीमारी से निपटने को लेकर हम तैयार नहीं थे। लॉकडाउन ने न केवल केंद्र और राज्य सरकार को इस तैयारी से निपटने के लिए एक अवसर दिया, बल्कि महामारी के संक्रमण को रोकने में भी मदद मिली। केंद्र और राज्यों ने अपने अपने स्तर पर कोरोना से निपटने के लिए कुछ कदम भी उठाए। अगर केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार की बात करें तो जहां इस तरह के वायरस की जांच के लिए पहले सिर्फ एक लैब थी, जो अब बढ़कर 2,400 से ज्यादा हो गई हैं। जीवन रक्षक दवाओं के उत्पादन से लेकर वेंटीलेटर की व्यवस्था को लेकर केंद्र सरकार ने पहल की। देश में कई जगह आइसोलेशन सेंटर बनाए गए। एन 95 मास्क और पीपीई किट तैयार किए जाने लगे। केंद्र सरकार ने इमरजेंसी कोविड रिस्पांस के लिए 15 हजार करोड़ रुपये के साथ ही 2021-22 के बजट में वैक्सीनेशन के लिए 35 हजार करोड़ रुपये भी दिए। सीरम इंस्टीट्यूट और भारत बॉयोटक के लिए फंड आवटित किया। इसके साथ ही 2,084 अस्पतालों को कोविड के इलाज के लिए तैयार किया गया और कोविड मरीजों के लिए 4,68,974 आइसोलेशन बेड तैयार किए गए।

केंद्र और राज्य ने कोरोना को लेकर अगर कई कदम उठाए तो फिर चूक कहां हुई? दरअसल कोरोना के मुश्किल हालात में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'आपदा में अवसर' का उल्लेख कर लोगों को सकारात्मक रहकर कुछ बेहतर करने का संदेश दिया था, लेकिन राज्य सरकारों से जुड़े कई विभाग, दवा उद्योग से जुड़ी कई कंपनियां, ड्रग माफियाओं और निजी अस्पतालों समेत कई लोगों ने 'आपदा में अवसर' के मायने कुछ और ही निकाल लिए।

कई राज्यों ने निजी अस्पतालों को कोविड इलाज का सेंटर बना दिया, राज्य सरकारों ने दरियादिली दिखाते हुए सभी लोगों की मुफ्त कोरोना जांच और इलाज का ऐलान कर दिया। बहुत सारे प्रदेशों में निजी अस्पतालों के साथ हुई इस साठगांठ से आम जनता भी भली भांति परिचित है। पिछले साल कोरोना की जांच और उसके इलाज के नाम पर राज्य सरकारों ने निजी अस्पताल को कितना भुगतान किया है, यह भी जांच का विषय है। जब कोरोना वायरस को लेकर अमेरिका, इटली और फ्रांस जैसे कई उदाहरण हमारे सामने थे तो पिछले एक साल में केंद्र और राज्य सरकारों ने आक्सीजन को लेकर तत्काल कदम क्यों नहीं उठाए? आंकड़े बताते हैं कि योग, आयुर्वेद, होम्योपैथी और प्राकृतिक चिकित्सा की मदद से देश में कई लोगों ने कोरोना पर जीत हासिल की है, लेकिन ड्रग माफियाओं ने सुनियोजित तरीके से इसको लेकर भ्रांतियां फैलाने का काम भी किया। चिंता इस बात को लेकर भी है कि केंद्र और राज्य सरकारों ने आयुर्वेद को एक मजबूत विकल्प के तौर पर बढ़ावा क्यों नहीं दियाभारत के मौजूदा हालात को देखते हुए केंद्र सरकार को यह समझना होगा कि चिकित्सा व्यवस्था, सार्वजनिक परिवहन और शिक्षा जैसे कई अहम क्षेत्रों में सरकारी क्षेत्र से जुड़ी संस्थाएं समाप्त नहीं हो, बल्कि इनकी गुणवत्ता में व्यापक सुधार किया जाए, ताकि लोग ब्रांड बन कर मुनाफाखोरी में जुटे किसी अस्पताल में जाने की बजाय सरकारी अस्पतालों को प्राथमिकता दें। इन सरकारी अस्पतालों में इलाज के नाम पर अव्यवस्था न हो, लेकिन यहां काम करने वाले चिकित्सकों को अधिक से अधिक वेतन और सम्मान हो। इसके साथ ही, यह भी सुनिश्चित करना होगा कि कोई भी मंत्री, सांसद या विधायक इनका तबादला नहीं कर सके या करवा सके।

घर को दफ्तर में बदलने की जरूरत, वर्क फ्रॉम होम के फायदे ही फायदे

कोरोना संकट के इस दौर में कोई नहीं जानता कि कोविड-19 महामारी का कहर कब थमेगा और कब जिंदगी पुराने ढर्रे पर वापस लौटेगी? सिर्फ पढ़ाई-लिखाई ही नहीं, कई ऐसे कामकाज भी इस मजबूरी में घर बैठे और ऑनलाइन संपन्न कराए जा रहे हैं, जिनके बारे में इस महामारी के पहले सिर्फ विमर्श के स्तर पर सोच-विचार होता था। ज्यादातर दफ्तरों में अधिकारी इसे लेकर ज्यादा विचार नहीं करते थे कि बहुत से ऐसे काम हैं, जिन्हें घर से किया जा सकता है, लेकिन कोरोना संकट से पैदा अनिश्चय ने वर्क फ्रॉम होम यानी घर से काम करने की मजबूरी को एक जरूरत में बदल दिया है। अब दफ्तरी कामकाज के अलावा खरीद-फरोख्त और निजी-सरकारी बैठकों से जुड़े तमाम काम या तो ऑनलाइन संपन्न हो रहे हैं या ऑनलाइन करने की तैयारी है, ताकि कोविड-19 का दौर लंबा खिंचने पर दुनिया के चलने में कोई ज्यादा मुश्किल न हो।

ऐसी खबरें पिछले साल ही चर्चा में आ गई थीं कि देश और दुनिया की ज्यादातर आइटी कंपनियों ने अपने कर्मचारियों को अगले कई महीनों तक के लिए वर्क फ्रॉम होम की छूट दे दी है। भारत की पांच शीर्ष आइटी कंपनियों ने बढ़ती मांग की भरपाई के लिए अपने यहां बंपर भर्तियां करने की योजना बनाई है। नई बंपर भर्तियों की सूचना यह भी बताती है कि बदले हुए हालात के मुताबिक देश की तमाम कंपनियां अपना ज्यादातर कामकाज डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लाना चाहती हैं, पर इसके लिए उनके पास कोई विशेषज्ञता या अनुभव नहीं है। इसीलिए वे आइटी कंपनियों की मदद लेना शुरू कर रही हैं। इस सूचना का एक सिरा इससे भी जुड़ा है कि हाल तक आइटी से इतर जिन कंपनियों ने वर्क फ्रॉम होम की मजबूरी को आपात उपायों के तौर पर अपनाया, अब वे उन सारे फौरी उपायों को स्थायी प्रबंधों में बदलना चाहती हैं। यह भी संभव है कि उन्हें इस नई व्यवस्था में कई फायदे नजर आ गए हों।

दफ्तर के बजाय घर से काम करने का मूल सुझाव सबसे पहले एक अमेरिकी प्रबंधक डेम स्टीफन शर्ली ने दिया था। उन्होंने यह विचार कंपनियों के सामने रखा था कि यदि आधुनिक तकनीक की मदद ली जाए तो कई दफ्तरी काम ऐसे हैं, जिन्हें कर्मचारी घर से कर सकते हैं। ऑनलाइन पढ़ाई ने भी इस बहस को आगे बढ़ाया है कि यदि पढ़ाई और परीक्षा के प्रबंध स्कूल-कॉलेज आए बगैर हो सकते हैं तो कई अन्य जरूरी कार्यों को भी घर से ही संपन्न क्यों नहीं कराया जा सकता? औद्योगिक संगठन-एसोचैम ने गत वर्ष देश की साढ़े तीन हजार कंपनियों के प्रबंधकों के बीच एक सर्वेक्षण कराकर इस योजना की टोह ली थी। इस सर्वेक्षण का निष्कर्ष था कि मार्च, 2020 के लॉकडाउन के बाद कंपनियां अपने दफ्तरों की रूपरेखा बदलने में लग गई थीं। टाटा कंसल्टेंसी सिंवसेज ने तो उसी दौरान यह घोषणा कर दी थी कि उसकी योजना 2025 तक अपने 75 फीसदी कर्मचारियों को वर्क फ्रॉम होम नीति के तहत काम करने देने की है। यह सही है कि सभी तरह के कार्यों को कार्यस्थलों से हटाकर घर नहीं भेजा जा सकता। इसमें कई व्यावहारिक अड़चनें भी हैं, लेकिन इसके रास्ते भी निकल सकते हैं।

इस कोरोना काल में दुनिया में प्रचलित हुए वर्क फ्रॉम होम के फलसफे ने कुछ सकारात्मक नजारे भी दिखाए। यदि जरूरत पड़ने पर कई कार्य घर बैठे पूरे हो सकते हैं तो पृथ्वी के सामने मौजूद पर्यावरणीय चुनौतियों और शहरों पर पड़ रहे बेइंतहा दबावों का आसानी से सामना किया जा सकता है। वर्क फ्रॉम होम या कहें कि दुनिया चलाने के ऑनलाइन प्रबंधों का कितना ज्यादा फायदा हमारी पृथ्वी और प्रकृति को हो सकता है, यह बात बीती अवधि में स्वच्छ हुए पर्यावरण के रूप में दिखा।

घर को दफ्तर में बदलने की जरूरत असल में इसलिए भी ज्यादा है कि ज्यादातर शहरों में घरों से दफ्तर की दूरियां बढ़ रही हैं। कामकाजी आबादी को दफ्तर पहुंचने के लिए लंबी दूरी के अलावा ट्रैफिक जाम और परिवहन के बढ़ते खर्चों को भी वहन करना पड़ता है। व्यावसायिक इलाकों में दफ्तरों का किराया काफी महंगा है, जो कंपनियों को भारी पड़ता है। दफ्तरों में एयर कंडीशनिंग के प्रबंध में बिजली का बेइंतहा खर्च कई अन्य तरह के दबाव पैदा करता है। घर से काम करने से लोगों का तनाव घटता है तो बिजली और डीजल-पेट्रोल आदि संसाधनों का खर्च भी बचता है।

बेशक अनिश्चय तो अभी भी बहुतेरे हैं, लेकिन मानव इतिहास में यह पहला ऐसा मौका है, जब संपूर्ण लॉकडाउन, सेमी लॉकडाउन और नाइट कर्फ्यू जैसी तमाम बंदिशों के बावजूद कुछ चीजों को छोड़कर दुनिया का ज्यादातर कारोबार इस दौर में बदस्तूर चलता रहा है। लोगों को राशन-पानी मिल रहा है, दवाओं समेत कई अनिवार्य चीजों की आपूर्ति यथावत है, अखबार छप रहे हैं और परीक्षा में रुकावटों को छोड़कर शिक्षा का सिलसिला भी कमोबेश जारी है। पढ़ाई ही नहीं, इंटरनेट, स्मार्टफोन, लैपटॉप और कई तरह के एप्स ने यह तक मुमकिन कर दिखाया है कि फिल्मकारों से लेकर आम लोग भी घर बैठे कोई छोटी-मोटी फिल्म बना लें और उसे दुनिया भर में पहुंचा दें।

अगर किसी कारण प्रबंधकों ने अपने कर्मचारियों को दफ्तर आने पर दबाव डाला तो भविष्य में ऐसी ही कोई मुश्किल आने पर ऑनलाइन कामकाज को पटरी पर लाना आसान नहीं होगा। असल में अधिकांश प्रबंधकों को अभी भी लगता है कि घर बैठा कर्मचारी दफ्तर से ज्यादा घर के काम ही निपटाता है। यह पुरातन सोच बदलनी होगी।

बौद्धिक संपदा से आगे

कोरोना महामारी से संघर्ष के इस असामान्य दौर में अमेरिकी सरकार का वैक्सीन के मामले में इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी राइट्स से जुड़ी सुरक्षा छोड़ने को राजी होना बड़ी बात है। अमेरिका के बाद यूरोपीय समुदाय (ईयू) ने भी इसकी तैयारी दिखाई है। ध्यान रहे, डब्ल्यूटीओ के मंच पर पिछले साल जब भारत और दक्षिण अफ्रीका ने सबसे पहले यह प्रस्ताव रखा था तो इन सबने उसका विरोध किया था। आज भी वैक्सीन विकसित करने वाली बड़ी-बड़ी कंपनियां इस फैसले के खिलाफ हैं। लेकिन पूरा विश्व आज जिस तरह की चुनौतियों से गुजर रहा है, उसे देखते हुए वैक्सीन को जल्द से जल्द अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाना पहली जरूरत है। अमेरिका और ईयू का इस मसले पर अपना रुख बदलना इस मकसद में सहायक हो सकता है। हालांकि प्रक्रियागत जटिलता के चलते अभी इस फैसले के तार्किक परिणति तक पहुंचने में वक्त लगने वाला है, लेकिन यह फैसला लागू होने से इतना जरूर हो जाएगा कि दुनिया भर की फार्मास्युटिकल और वैक्सीन उत्पादक कंपनियां किसी तरह की मुकदमेबाजी की आशंका के बगैर टीका बनाना सीख सकेंगी। स्वाभाविक रूप से टीके के उत्पादन और उसकी उपलब्धता पर इसका पॉजिटिव असर होगा। लेकिन डब्ल्यूटीओ के मंच पर यह मामला किस रफ्तार से और कितना आगे बढ़ता है, यह एक बात है।

ज्यादा बड़ा सवाल यह है कि जो देश इस पर सहमत हैं वे अपने स्तर पर इस फैसले को लागू करने और उसके मुताबिक वैक्सीन उत्पादन में तेजी लाने के लिए क्या कर सकते हैं। चूंकि भारत इस मसले को उठाने वाले शुरुआती देशों में शामिल रहा है, इसलिए निगाहें उस पर भी टिकी हैं। भारत को कोवैक्सीन का इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी राइट्स छोड़ना चाहिए या फिर भारत बायोटेक से खरीद कर वैक्सीन बनाने का तरीका अन्य संभावित वैक्सीन उत्पादक कंपनियों से साझा करना चाहिए। यह समझना गलत है कि ऐसा करने से दुनिया भर में वैक्सीन बनाने वाली कंपनियों की लाइन लग जाएगी। इसके लिए पैटेंटेड सूचनाएं काफी नहीं हैं। उनके अलावा भी बहुत सारी जानकारी चाहिए जो उन्हीं कंपनियों के पास है जो किसी न किसी रूप में इस प्रक्रिया से जुड़ी रही हैं। सूचनाओं के अलावा वैक्सीन बनाने में लगने वाली सामग्रियों और उपकरणों की उपलब्धता का सवाल भी है जिससे यह तय होगा कि कहां कौन वैक्सीन का कितना उत्पादन कर पाएगा। बहरहाल, यह अच्छी बात है कि दुनिया के प्रमुख देश महामारी की चुनौती के मद्देनजर बौद्धिक संपदा के स्वामित्व की संकीर्णता से ऊपर उठने में सफल रहे हैं। इससे जहां वैक्सीन उत्पादन में तेजी आने की संभावना बढ़ी है वहीं यह उम्मीद मजबूत हुई है कि दुनिया की बड़ी शक्तियां वायरस के खिलाफ जारी इस लड़ाई में आवश्यक होने पर आगे भी संकीर्ण हितों से ऊपर उठने का जज्बा दिखाएंगी। किसी भी बड़ी लड़ाई में कामयाबी की यह अलिखित शर्त होती है।

कोरोना संक्रमण के बढ़ते प्रकोप और स्वास्थ्य सेवाओं की बदहाली के बीच टेलीमेडिसिन का प्रयोग एक बेहतर विकल्प

परिणामस्वरूप ग्रामीण स्वयं ही जागरूक होते चले जाएंगे और उनका टेलीमेडिसिन पर विश्वास भी बनेगा। इसलिए जरूरी है कि अब ई-स्वास्थ्य व्यवस्था पर विशेष जोर दिया जाए। विशेष कर ग्रामीण इलाकों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए जिससे ग्रामीण लोग ई-चिकित्सा से परिचित हों और कोरोना महामारी के बढ़ते मामलों के बीच घर से ही सस्ता इलाज और परामर्श प्राप्त कर पाएं जिसकी जरूरत अब इस बढ़ती कोरोना महामारी के दौरान अधिक देखी जा रही है। आज प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य बनता है कि अपने निकट संबंधियों को अधिक से अधिक टेलीमेडिसिन के बारे मे जागरूक करे और अस्पताल जाने की बजाय घर पर ही ऑनलाइन परामर्श पर ही जोर दे।

देश में कोरोना वायरस की दूसरी लहर की वजह से कई राज्यों में एक बार फिर से भयावह स्थिति पैदा हो गई है। ऐसी स्थिति में स्वास्थ्य व्यवस्था पर भारी दबाव पड़ना तय है। लोग साधारण बीमारी में भी कोरोना के भय से अस्पताल में भर्ती होना ज्यादा उचित समझ रहे हैं जिससे वायरस के बढ़ने के साथ अनायास ही स्वास्थ्य ढांचे पर भी दबाव पड़ रहा है। ऐसे में मरीज घर बैठे ही ऑनलाइन प्लेटफार्म के माध्यम से चिकित्सकों से समय लेकर जरूरी परामर्श ले सकते हैं। इसका फैलाव सभी छोटे अस्पतालों तक किया जा रहा है, जिससे लोगों को घर बैठे राहत प्रदान किया जा सके। हमें यहां तक ध्यान रखना होगा कि अगर व्यक्ति कोरोना संक्रमित भी होता है तो भयभीत हुए बिना, पूरे विश्वास के साथ सबसे पहले टेलीमेडिसिन के माध्यम से डॉक्टर से परामर्श करना चाहिए। देखा जा रहा है कि संक्रमण की वजह से आक्सीजन सेचुरेशन कम होते ही लोग कम जानकारी की वजह से हॉस्पिटल जाना तय करते हैं। यह सही तरीका नहीं है। सर्वप्रथम यह जानना चाहिए कि आक्सीजन सेचुरेशन कितना होना चाहिए?

वर्तमान में कोविड के तेजी से बढ़ने की वजह से मरीजों की संख्या में भारी इजाफा हो रहा है। लेकिन देश में डॉक्टरों की संख्या सीमित ही है, ऐसी स्थिति में टेलीमेडिसिन ही एक कारगर उपाय बन कर सामने आ रही है जिसे ग्रामीण स्तर तक ले जाने की जरूरत है। पिछले दिनों ही भारत सरकार की राष्ट्रीय टेलीमेडिसिन सेवा ई-संजीवनी ने 30 लाख से

अधिक परामर्श उपलब्ध कराकर एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। मौजूदा समय में, राष्ट्रीय टेलीमेडिसिन सेवा 31 राज्यों, केंद्रशासित प्रदेशों में संचालित है और प्रतिदिन देश के 35 हजार से भी अधिक मरीज स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त करने के लिए इस नवाचारी डिजिटल माध्यम का उपयोग कर रहे हैं। इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर 31 हजार से अधिक डॉक्टरों और पैरामेडिक्स को प्रशिक्षित करके ई-संजीवनी में शामिल किया गया है।

ई-संजीवनी को शीघ्र और व्यापक तौर पर अपनाना यह दर्शाता है कि कोरोना काल में रोगियों को दूर से ही प्रभावी ढंग से नैदानिक प्रबंध किया जा सकता है। जिन रोगियों को अत्यावश्यक चिकित्सा की जरूरत नहीं है, वे अधिक से अधिक टेलीमेडिसिन का उपयोग कर रहे हैं और चिकित्सा की गुणवत्ता से समझौता किए बगैर ही कोरोना से संक्रमित होने के जोखिम से भी अपना बचाव कर पा रहे हैं। पिछले लॉकडाउन के दौरान विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी अधिक से अधिक टेलीमेडिसिन मॉडल को अपनाने की ही सलाह दी थी। कोरोना वायरस लंबे समय तक बना रहेगा। ऐसे में टेलीमेडिसिन कारगर साबित होगी। टेलीमेडिसिन की वजह से न केवल कोरोना के फैलाव पर रोक लगेगी, बल्कि रोगियों का लगने वाला परिवहन खर्च और समय दोनों बचेगा। इससे स्वास्थ्य सुविधा की सुदूर क्षेत्रों तक पहुंच भी बन सकेगी और घर बैठे ही उपचार भी संभव हो सकेगा। इसकी राह में कुछ समस्याएं भी दिख रही हैं जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। जैसे पहला, इसके परिणामों के बारे में रोगियों में विश्वास की कमी है। दूसरा, स्वास्थ्य कर्मी ई-चिकित्सा अर्थात टेलीमेडिसिन से पूरी तरह अभी भी परिचित नहीं है। तीसरा, भारत की करीब 40 फीसद जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही है, ऐसी स्थिति में इस वर्ग की तकनीकी अक्षमता स्पष्ट होती है। चौथा, भारत में आज भी गांवों तक इंटरनेट की पर्याप्त उपलब्धता नहीं बन सकी है।

इसी चुनौतियों का सामना आसानी से किया जा सकता है। इसके लिए कुछ सुधार की दरकार अवश्य होगी। जैसे, संपूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं को डिजिटल रूप में लाने के लक्ष्य को हासिल करने के लिए तकनीकी और कानूनी ढांचे को मजबूत बनाना होगा, इसके लिए कानून में भी कुछ फेरबदल करने होंगे। लोगो में टेलीमेडिसिन के प्रति विश्वास जगाने के साथ उन्हें जागरूक करना होगा। प्रायः देखने में आता रहा है कि बड़े से बड़े स्वास्थ्य अधिकारी भी वर्तमान टेक्नॉलाजी से कम परिचित हैं और वो कंप्यूटर इत्यादि के प्रयोग से हिचकते हैं इसलिए वे आज भी कागज और फाइलों में ही काम कर रहे हैं। चिकित्सार्किमयों को ई-चिकित्सा बाबत जल्द ही व्यापक स्तर पर प्रशिक्षण देना जरूरी होगा। अगर यह व्यवस्था नहीं होगी तो पहले से ही लचर देश के स्वास्थ्य ढांचे पर दबाव और बढ़ जाएगा। इस कार्य के लिए ग्राम पंचायतों में बनाए गए सुविधा केंद्रों का इस्तेमाल किया जा सकता है, जहां गांव के लोगों को यह सुविधा मुहैया कराने के लिए ऑनलाइन व्यवस्था होनी चाहिए।

परिणामस्वरूप ग्रामीण स्वयं ही जागरूक होते चले जाएंगे और उनका टेलीमेडिसिन पर विश्वास भी बनेगा। इसलिए जरूरी है कि अब ई-स्वास्थ्य व्यवस्था पर विशेष जोर दिया जाए। विशेष कर ग्रामीण इलाकों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए जिससे ग्रामीण लोग ई-चिकित्सा से परिचित हों और कोरोना महामारी के बढ़ते मामलों के बीच घर से ही सस्ता इलाज और परामर्श प्राप्त कर पाएं जिसकी जरूरत अब इस बढ़ती कोरोना महामारी के दौरान अधिक देखी जा रही है। आज प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य बनता है कि अपने निकट संबंधियों को अधिक से अधिक टेलीमेडिसिन के बारे मे जागरूक करे और अस्पताल जाने की बजाय घर पर ही ऑनलाइन परामर्श पर ही जोर दे।

गौरवशाली भारत के स्वामी प्रकाशक एवं मुद्रक प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटारा दिना बेग लाल कुआं, दिल्ली.... से मुद्रित एवं, ब्लॉक नं. 23 मकान नं. 399 त्रिलोकपुरी दिल्ली....91 से प्रकाशित संपादक -प्रवीण कुमार सिंह टेलीफोन नं. 011.22786172 फैक्स नं. 011.22786172
RNI, No. DELHIN383334, E-mail: gauravashalibarat@gmail.com इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के पीआरबी एट के तहत

संक्षिप्त खबर

बैतूलः छोटे को बचाने बड़ा भाई भी कुएं में कूदा, दोनों की मौत

बैतूल। जिले के चिचोली थाना क्षेत्र के आलमगढ़ में सोमवार को दो भाइयों की कुंए में गिरकर पानी में डूबने से मौत हो गई। थाना प्रभारी अजय सोनी ने बताया कि आलमगढ़ निवासी मोहम्मद शेख अख्तर (25) अपने छोटे भाई मोहम्मद शेख अनवर (22) के साथ मिलकर दोपहर में घर के पास खेत के कुंए में मोटर डाल रहे थे कि इसी दौरान अनवर का असंतुलन बिगड़ने से वह कुंए में नीचे गिर गया। अनवर को बचाने बड़ा भाई अख्तर भी कुंए में कूद गया। कुंए में पानी अधिक होने से दोनों भाईयों की पानी में डूबने से मौत हो गई। थाना प्रभारी ने बताया कि दोनों शवों को बाहर निकालकर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र चिचोली लाया, जहां पोस्टमार्टम के बाद शवों को परिजनों को सौंप दिया।

बिरसाः कान्हा टाईगर रिजर्व में मिला बाघ का शव

बिरसा। कान्हा टाईगर रिजर्व के भैसानघाट परिक्षेत्र के गढ़ीदादर बीट में शनिवार को एक बाघ का मृत शरीर मिला। परीक्षण में बाघ का शव 10-15 दिन पुराना प्रतीत होता है। बाघ की प्रारंभिक पहचान से नर बाघ टी-44 संभावित है। बाघ के शव परीक्षण में उसके समस्त नाखून एवं दांत मौजूद पाए गए। शव पर किसी प्रकार की चोट के निशान नहीं मिल हैं। बाघ के दो कैनाइन (दाँत) कुछ टूटे हुए थे। दांत के आधार पर उम्र लगभग 12-13 वर्ष से अधिक प्रतीत होती है। बाघ का शव परीक्षण डॉ. संदीप अग्रवाल, वन्यप्राणी चिकित्सक, कान्हा टायगर रिजर्व द्वारा किया गया एवं आवश्यक सेम्पल भी एकत्रित किए गए। राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण के मानक निर्देशों के अनुरूप शव को जलाकर नष्ट किया गया।

जतारा: सड़क हादसे में हुई बाइक सवार दंपती की मौत

जतारा। बीती रात में अज्ञात चार पहिया वाहन के चालक ने बाइक सवार दंपती को टक्कर मार दी, जिनकी उपचार के दौरान अस्पताल में मौत हो गई। वहीं उनके साथी मासूम बच्ची इस घटना में बाल-बाल बच गई। बताया गया है कि जतारा थाना के जतारा अंतर्गत मऊरानीपुर बायपास रोड पर रात 9 बजे के लगभग बाइक सवार दंपती को अज्ञात चार पहिया वाहन के चालक ने टक्कर मारकर वह चालक मौके से फरार हो गया। बाइक पर पति-पत्नी एवं 6 महीने की बच्ची सवार थी। बाइक सवार दीपक अहिरवार उम्र 22 साल पत्नी विनीता अहिरवार उम्र 20 साल को लेकर शादी समारोह से अपने घर सुजानपुरा गांव लौट रहा था, तभी जतारा बायपास रोड पर हादसा हुआ जिससे पति-पत्नी की अस्पताल में मृत्यु हो गई एवं 6 महीने की बच्ची को थोड़ी चोट आई है।

खुरईः टायलेट ऐसिड बनाने वाली अवैध फैक्टरी सील

खुरई। अब्दुल हमीद वार्ड में रिहायसी इलाके में अवैध रुप से बड़ी मात्रा में भंडारण करके टायलेट क्लीनर बनाए जाने की फैक्टरी पर तहसीलदार, सीएमओ व थाना प्रभारी ने संयुक्त रुप से छापामार कार्यवाई की। कार्यवाई में मिनी फैक्टरी में बड़ी मात्रा में ऐसिड जब्त किया गया जिससे टायलेट क्लीनर बनाया जा रहा था। दरअसल पड़ोसियों ने शिकायत की थी कि उनके घर के बाजू में एक बर्फ बनाने की फैक्टरी की मशीन के कंपन से उनको परेशानी है। बर्फकी फैक्टरी पर कार्यवाई के दौरान उसी भवन में ऐसिड का भंडारण पाया गया। जिसमें पूछताछ पर पता चला कि इससे टायलेट क्लीनर बनाया जाता है। अधिकारियों ने 376 बाटल व ऐसिड से भरी पांच पांच लीटर की सात केने व कुछ खाली कैने जब्त की गई।

नलखेड़ाः दूल्हे ने हवालात में बिताई रात, लौटी बारात

नलखेड़ा। रविवार-सोमवार की दरम्यानी रात को तहसील के ग्राम लसुल्डीया केलवा में हो रही शादी को पुलिस प्रशासन ने मौके पर पहुंचकर रुकवाई। दुल्हन लेने आए दूल्हे को सोमवार बेरंग ही ग्राम जाना पड़ा। टीआई अनिल पुरोहित ने बताया कि सूचना पर पुलिस दल रविवार-सोमवार की दरम्यानी दूल्हा मनोहर सेन (22) निवासी कचनारिया पुलिस थाना आगर अपने पिता के साथ मौजूद थे। यहाँ लसुल्डीया केलवा निवासी तोलाराम सेन की पुत्री योगिता से उसका विवाह होना था। कोरोना संक्रमण की रोकथाम हेतु आगर जिले में कलेक्टर के आदेशानुसार शादी-ब्याह व अन्य समारोह प्रतिबंधित है। ऐसे में उक्त आदेश का उल्लंघन पाए जाने पर रात्रि लगभग 3 बजे दूल्हे,उसके पिता व दुल्हन के पिता को पुलिस थाने पर लाया गया।

रायपुरः छत्तीसगढ़ में 11867 नए मरीज, 172 की मौत

रायपुर। छत्तीसगढ़ में पिछले 24 घंटे में 11867 नए संक्रमित मरीज मिले हैं,वहीं 172 संक्रमितों की मौत हो गई। स्वास्थ्य विभाग से मिली जानकारी के अनुसार पिछले 24 घंटे में राज्य में 11867 नए कोरोना संक्रमित मरीज मिले हैं उनमें सर्वाधिक जांजगीर के 927 हैं। इसमें कोरबा के 815, रायगढ़ के 821,रायपुर के 871,बिलासपुर के 531,दुर्ग के 674,राजनांदगांव के 294,बलौदा बाजार के 694,बेमेतरा के 178,महासमुन्द के 354,कबीरधाम के 296,धमतरी के 229, सरगुजा के 535,जशपुर के 607,गरियाबन्द के 168,कांकेर के 447,सूरजपुर के 690,मुंगेली के 515,कोरिया के 618,कोन्डागांव के 180 तथा बस्तर के 130 मरीज शामिल है।

तीन जिलों में आधे घंटे तक गिरे ओले, तेज हवा के साथ बारिश

विदिशा, रायसेन और छिंदवाड़ा जिले में खरीदी केंद्रों पर खुले में रखा हजारों क्विंटल गेहूं भीगा

भोपाल, (एजेंसी)। विदिशा जिले की ग्यारसपुर तहसील के एक दर्जन गांवों में सोमवार की दोपहर को आंधी के साथ जोरदार बारिश हुई। इस दौरान करीब आधा घंटे तक आंवले से बड़े आकार के ओले गिरे। जिसके चलते खेतों और सड़कों पर बर्फ की चादर जम गई। इन गांवों में समर्थन मूल्य के गेहूं खरीदी केंद्रों पर लगभग 10 हजार क्विंटल गेहूं भीग गया। तेज आंधी के कारण घरों और गोदामों के छप्पर उड़ गए। वहीं सड़कों के किनारे खड़े पेड़ और बिजली के खंभे धराशायी हो गए। रायसेन जिले में भी बारिश और चने के आकार के ओले गिरने से बेगमगंज क्षेत्र के 9 खरीदी केंद्रों में लगभग 34 हजार क्विंटल गेहूं भीग गया है। रविवार देर रात को छिंदवाड़ा के अमरवाड़ा क्षेत्र में हुई बारिश से खरीदी केंद्रों में पानी भर गया था, जिससे गेहूं की फसल भीग गई।

विदिशा जिले में पिछले दो दिनों से मौसम बिगड़ा हुआ है। रविवार की रात को भी विदिशा, लटेरी, आनंदपुर और गंजबासौदा सहित क्षेत्र में बारिश हुई थी। सोमवार को दोपहर 3 से 4 बजे तक ग्यारसपुर के हैदरगढ़ क्षेत्र में आंधी चलने के साथ ही तेज बारिश हुई। बारिश के साथ ही 50 ग्राम से अधिक वजन के ओले भी गिरे। ओलावृष्टि का सबसे अधिक असर ग्राम धामनोद, कोलुआ और गुन्नौठा और बेहलोट में देखने को मिला। यहां के ग्रामीणों ने बताया कि घरों के बाहर और सड़कों पर ओले की मोटी चादर जम गई थी। खेतों में भी जमीन पर सफेद चादर जैसा दिखाई दे रहा था।

घरों के बाहर और सड़कों पर जमी ओले की चादर

आंधी में गोदाम के चद्दर उड़े

ग्यारसपुर के धामनोद सहकारी समिति प्रबंधक नारायण प्रसाद शर्मा ने बताया कि बारिश के कारण खुले में रखा लगभग 3028 क्विंटल गेहूं भीग गया है। इधर, कोलुआ और गुन्नौठा में लगभग तीन हजार क्विंटल गेहूं पानी में भीगा है। आंधी में गोदाम के चद्दर उड़ जाने के कारण पानी भीतर पहुंच गया। जिसकी वजह से बड़ी मात्रा में गेहूं भीगा है।

रायसेन में 34 हजार क्विंटल गेहूं भीगा

रायसेन जिले के बेगमगंज क्षेत्र में रविवार और सोमवार को हुई बारिश से 9 खरीदी केंद्रों में रखा करीब 34 हजार क्विंटल गेहूं भीग गया। सोमवार को बेगमगंज सहित अन्य क्षेत्रों में भी बारिश के साथ ही ओलावृष्टि हुई, जिससे खुले रखे गेहूं को नुकसान हुआ है।

पटाखे बनाते समय विस्फोट से उड़ी घर की छत, तीन महिलाओं की मौत

हरदा के मगरधा रोड पर अवैध रूप से किया जा रहा था पटाखों का निर्माण

हरदा, (एजेंसी)। पटाखों के अवैध निर्माण के दौरान हरदा के मगरधा रोड पर सोमवार को धमाका हो गया। धमाका इतना भयंकर था कि मकान की छत उड़ गई और पूरे मकान में आग लग गई। मौके पर पहुंची दमकल गाड़ियों ने आग पर काबू पाया है।

इस हादसे में एक ही परिवार के तीन व्यक्तियों की मौत हो गई। मृतकों में एक युवती सहित दो बुजुर्ग महिलाएं शामिल हैं। मृतकों की पहचान विमलाबाई (60), शांताबाई (80) और पप्पी बेलदार (16) के रूप में की गई है। ये सभी लोग बिना अनुमति पटाखों का निर्माण कर रहे थे। मौके पर पहुंचे प्रशासन के अधिकारियो ने मृतकों के शवों को जिला अस्पताल पहुंचाया। एडीएम ने कहा की पूछताछ में पता चला है कि मकान में पटाखे बनाए जा रहे थे। सिविल लाइन थाना पुलिस ने मामला कायम कर जांच शुरू कर दी है।

थाने से 300 मीटर दूर हादसा

हरदा के मगरधा रोड पर जहां हादसा हुआ है, वहां से सिविल लाइन थाने की दूरी महज 300 मीटर है। थाने के इतने करीब में अवैध पटाखे बनना काम चलता रहा और पुलिस को इसकी भनक भी नहीं लगी। हरदा जिले में पिछले वर्ष भी सिराली थाना क्षेत्र में पटाखों का निर्माण किया जा रहा था।

सात दिन में ठीक होने वालों में 20 हजार से ज्यादा नए केस, 1,11,223 एक्टिव केस

26 दिन बाद 10 हजार से कम नए केस, पॉजिटिविटी रेट भी 15 के करीब आया

भोपाल, (एजेंसी)। मध्यप्रदेश में एक महीने से लगे कोरोना कर्फ्यू के रिजल्ट आने शुरू हो गए है। प्रदेश में अब कोरोना के केस धीरे-धीरे कम होने लगे है। स्वास्थ्य विभाग की ओर से सोमवार को जारी हेल्थ बुलेटिक के मुताबिक पिछले 24 घंटे में 10 हजार से भी कम कोरोना के केस मिले है।

26 दिन बाद 10 हजार से कम नए केस आए हैं। 24 घंटे में कोरोना के 9,715 नए मरीज मिले हैं। इससे पहले 13 अप्रैल को 9,720 संक्रमित मिले थे। तब से हर दिन 11 हजार से 13 हजार के बीच केस मिल रहे थे लेकिन एक्टिव केस का आंकड़ा लगातार बढ़ता जा रहा है। 9 मई को एक्टिव केस 1 लाख 11 हजार 223 हो गए हैं। हालांकि एक्टिव केस मामले में मध्यप्रदेश 15वें नंबर पर है। संक्रमण दर 15.7 प्रतिशत हो गई है। एक्टिव केस में बढ़ने की वजह कोरोना को मात देने वालों की संख्या कम होना है। पिछले सप्ताह के आंकड़े देखें तो कोरोना को मात देने वालों से 20, 869 ज्यादा नए संक्रमितों मिले, जबकि 26 अप्रैल से 2 मई वाले सप्ताह में नए मरीजों से 6,095 ज्यादा मरीज ठीक हुए थे।

प्रदेश में अब तक कोरोना की वजह से जान गंवाने वालों का आंकड़ा 6501 हो गया है। इसमें 9 मई को मरने वाले 86 मरीज भी शामिल हैं। पिछले 24 घंटे में भोपाल, इंदौर, ग्वालियर में 8-8 मौतें और जबलपुर में 6 मरीजों की मौत सरकारी रिकार्ड में दर्ज हुई हैं।

सैंपल टेस्ट कम हुए तो घट गया पॉजिटिविटी रेट

प्रदेश का पाजिटिविटी रेट लगातार घट रहा है। 3 मई को घटकर 20.2 प्रतिशत तो जो 9 मई को घटकर 15.7 प्रतिशत हो गया हैं। इसकी वजह सैंपल टेस्ट कम होना है। 9 मई को 61,530 सैंपल टेस्ट में से 9,715 पॉजिटिव आए, जबकि एक दिन पहले 8 मई को 65,282 सैंपल टेस्ट हुए थे। इसमें से 11,051 की रिपोर्ट पॉजिटिव आई थी।

15वें नंबर पर मध्यप्रदेश

प्रदेश में एक्टिव केस 2 दिन में 10 हजार से ज्यादा बढ़े हैं। हालांकि देश के अन्य राज्यों से तुलना करें तो एक्टिव केस मामले में मध्य प्रदेश 15 वें नंबर पर है। जबकि 21 अप्रैल को मप्र 7वें नंबर पर था। बता दें कि 73प्रतिशत मरीज ऐसे हैं, जिन्हें अस्पताल में भर्ती होने की जरूरत नहीं पड़ रही है। वे होम आइसोलेशन और कोविड केयर सेंटर में ही स्वस्थ हो रहे हैं।

ऑक्सीजन की कमी से मरीज की मौत, नहीं मिला स्ट्रेचर तो शव को हाथ ठेले से लाए

मुरैना। जिला अस्पताल में उपचार के लिए लाए गए एक युवक की मौत हो गई। इसके बाद जब परिजन को स्ट्रेचर तक नसीब नहीं हुआ तो परिजन को उसका शव हाथ ठेले पर रखकर एंबुलेंस तक लाना पड़ा। परिजन ने आरोप लगाया कि युवक की मौत ऑक्सीजन की कमी के चलते हुई। मुरैना निवासी कल्लू को उसके पिता रविवार की रात उपचार के लिए लेकर आए थे। यहां सोमवार को सुबह उसकी मौत हो गई। डॉक्टर्स ने उसके पिता से शव ले जाने को कहा, लेकिन उस वक्त वहां स्ट्रेचर उपलब्ध नहीं था। ऐसे में कल्लू के पिता एक हाथ ठेले को वार्ड तक ले गए और शव को उस पर रखकर एंबुलेंस तक लेकर आए। मृतक के पिता ने बताया कि जब वे अपने बेटे को यहां लेकर आए तो उसे तत्काल ऑक्सीजन नहीं मिली। जबकि उसे ऑक्सीजन की बहुत जरूरत थी। हालांकि सीएमएचओ डॉ. एडी शर्मा ने कहा कि जिला अस्पताल में ऑक्सीजन की कोई कमी नहीं है। सभी मरीजों को जरूरत के हिसाब से ऑक्सीजन दी जा रही है।

पति की कोरोना से मौत से दुखी पत्नी ने की आत्महत्या

सतना। जिले के कोलगवां थाना क्षेत्र में एक महिला ने पति की कोरोना के कारण मृत्यु से परेशान होकर आत्महत्या कर ली। महिला ने अपने डेढ वर्ष के बच्चे की हत्या का भी प्रयास किया, लेकिन वह किसी तरह बच गया और अस्पताल में उसका इलाज चल रहा है। पुलिस सूत्रों के अनुसार ज्योति त्रिपाठी नाम की महिला ने शनिवार की रात्रि में अपने घर में फांसी लगाकर इस घटना को अंजाम दिया। इसके पहले उसने बच्चे का गला घोंटकर उसे भी मारने का प्रयास किया। इसकी जानकारी परिजनों को रविवार को मिली और उन्होंने पुलिस को सूचना दी। महिला के पति का लगभग 10 दिन पहले कोरोना के कारण निधन हुआ था। महिला ने मृत्यु के पहले एक पत्र लिखा है, जिसमें उसने पति की मृत्यु से परेशान होकर यह कदम उठाने का जिक्र किया है।

जिला अस्पताल में महिला की जान लेने की कोशिश

सफाईकर्मियों मरीज के बाले लूटे ऑक्सीजन का पाइप निकाला

ग्वालियर, (एजेंसी)। मुरार जिला अस्पताल में भर्ती एक महिला की जान लेने की कोशिश ठेके पर रखे गए सफाई कर्मचारियों द्वारा की गई है। महिला के पुत्र के अनुसार इन लोगों द्वारा कान के बाले भी लूटे गए हैं।

गुढ़ा गुडी का नाका निवासी पूनम वीरे(49) को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। रविवार रात 11.15 बजे वार्ड में दो युवक पहुंचे। महिला के पुत्र के अनुसार उक्त दोनों युवक सोनी एवं राहुल द्वारा कोरोना पीड़ित महिला का ऑक्सीजन पाईप निकाल दिया। इससे महिला की हालत खराब हो गई। जब महिला के बेटे ने उसे देखा तो पकड़ने का प्रयास किया लेकिन दोनों धक्का देकर भाग गए। पुत्र ने तत्काल डॉक्टर को बुलाकर पाइप लगवाया। इतना ही नहीं महिला के कान से सोने के टॉप्स भी वार्ड ब्वॉय खींचकर ले गए। परिजनों ने सुबह हंगामा किया।

इंदौर में मरीज की मौत के बाद अस्पताल में तोड़फोड़

इंदौर। अन्नपूर्णा थाना क्षेत्र के सेहत हॉस्पिटल में रविवार रात मरीज की मौत के बाद परिजन ने जमकर तोड़फोड़ की। सीएसपी बीएस परिहार के मुताबिक महू नाका निवासी अमित मोरले (35) को शनिवार शाम अस्पताल में भर्ती कराया गया था। परिजनों ने आरोप लगाया कि रविवार शाम तक अमित परिजनों से फोन पर बात कर रहा था। रात 11 बजे डॉक्टरों ने अमित को मृत घोषित कर दिया। जब परिजनों ने डॉक्टर से मौत का कारण पूछा तो वे भी जवाब नहीं दे पाए। इससे गुस्साए परिजनों ने अस्पताल में डॉक्टरों से झूमा झटकी की और दरवाजा तोड़ दिया।

क्लीनिक पर जुटी भीड़ को देख कर पहुंचे सीईओ तो डॉक्टर ही टेबल पर बन गया मरीज, क्लीनिक सील

श्योपुर/कराहल। सोमवार को कराहल मुख्यालय पर लॉकडाउन का पालन कराने सड़को पर भ्रमण कर रहे जनपद सीईओ एसएस भटनागर ने 01 निजी क्लीनिक पर मरीजों की भीरी-भीड़ देखी तो वह क्लिीनिक के अंदर चले गये और पूछा कि डॉक्टर साहब कहां है,जिसपर इलाज़ करता हुआ डॉक्टर ही क्लीनिक की टेबल पर लेट कर जोर-जोर से खांसता हुआ बोला सर में तो बीमार हूं इलाज़ कराने आया हूं , इतना बोलते ही जनपद सीईओ ने अन्य खड़े मरीजों से पूछताछ की तो सब ने एक स्वर में बोला सर यही मरीज़ डॉक्टर इलाज़ कर रहा है । तब तक सीईओ की सूचना पर बीएमओ कराहल रोजेन्द्र वर्मा और तहसीलदार नवल किशोर भी मौके पर पहंच गए। कोरोना कर्फ्यू के नियमोंका उलंघ्घन पाये जाने पर क्लीनिक सील कर दिया है ।

बाजार बंद कराने गई पुलिस टीम पर पथराव कर भगाया

सिंगरौली, (एजेंसी)। जिले में बाजार बंद कराने गई पुलिस प्रशासन की टीम तो महिलाओं और बच्चों के समूह ने पथराव कर भगा दिया।

सोमवार सुबह लगभग 10:00 बजे नगर निगम की टीम द्वारा पुलिस को सूचना दी गई निगम अधिकारी ने बताया कि बैढ़न कोतवाली थाना क्षेत्र के पारसौना से पहले हिर्वाह बस्ती में रिलायंस कन्वेयर बेल्ट के नीचे कर्फ्यू का उल्लंघन हो रहा था ऐसे में सुबह 10: 30 बजे अधिकारी पहुंच गए जैसे ही बस्ती के लोगों को बाजार बंद कराने के लिए सख्ती दिखाई तो वे आक्रोशित होकर भड़क गए पुलिस ने डंडा दिखाया तो वे लोग पत्थर लेकर खड़े हो गए। देखते ही बस्ती के सैकड़ों लोग एकत्रित हो गए भीड़ देखते ही बाजार में दुकान लगाकर नियमों को तोड़ने वालों ने नगर निगम के अधिकारियों सहित पुलिस और प्रशासन के जिम्मेदारों को दौड़ा लिया कोई शोर मचा रहा था तो कई लोग पत्थर से हमला कर रहे थे। घटना के समय पुलिस प्रशासन और नगर निगम के आधा दर्जन वाहन थे जिससे अधिकारी से लेकर कर्मचारी तक पत्थरबाजी के बाद भागने के लिए मजबूर हो गए एसपी का कहना है कि पूरे मामले की जाँच की जा रही हैए अगर बाजार के लोग दोषी मिले तो सब पर महामारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया जाएगा।

दादी के साथ सो रहे बच्चे को ले गया तेंदुआ, जंगल में किया शिकार

सर्चिंग के दौरान सिर और कुछ हड्डियां मिली

बागली, (एजेंसी)। उप वन मंडल बागली की उदयनगर रेंज के अंतर्गत ग्राम बिसाली निवासी मनीष पिता मनोज 5 वर्ष मानकर अपनी दादी के साथ उदयनगर थाने क्षेत्र के हीरापुर (गुलजारी कामठ) में स्थित अपने खेत पर बनी एक टापरी के बाहर सोया हुआ था उसी दौरान रविवार देर रात्रि को जंगल में से एक तेंदुआ आया और बच्चे को मुंह में दबोच कर जंगल में लेकर गया।

सोमवार की सुबह जानकारी मिलने पर फॉरेस्ट एसडीओ आमित सोलंकी संयुक्त टीम के साथ जंगल पहुंचे और डाक स्कर्ट के जरिए सर्चिंग के दौरान जंगल में से बच्चे का सिर मिला व कुछ हड्डियां मिली है। हालांकि फॉरेस्ट के अनुसार पग मार्ग के आधार पर अनुमान लगाया जा रहा है कि उक्त घटना को तेंदुए द्वारा अंजाम दिया गया है। जानकारी के अनुसार सोमवार की सुबह सर्चिंग के दौरान घटनास्थल से लगभग 3 किलोमीटर दूर अंदर जंगल में बच्चे का सिर मिला है। ग्रामीणों के अनुसार विगत कुछ दिनों से उस क्षेत्र में तेंदुए को देखा जा रहा था। वही समाज व परिजनों ने शासन प्रशासन से मुआवजे की मांग की है। वन विभाग एसडीओ अमित सोलंकी ने बताया कि इसमें राहत राशि देने का प्रावधान है।

मंत्री सारंग ने लिया ग्रामीण क्षेत्रों में कोरोना कर्फ्यू का जायजा

भोपाल, एजेंसी। चिकित्सा शिक्षा मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने सोमवार को आष्टा जनपद के ग्राम बैदाखेड़ी एवं खड़ीहाट का भ्रमण कर कोरोना संक्रमण को रोकने के लिए की जा रही कार्यवाही का जायजा लिया।श्री सारंग ने आष्टा में क्राइसिस मेनेजमेंट ग्रुप की बैठक ली। बैठक में उन्होंने आष्टा जनपद में कोविड संक्रमण को रोकने के लिए की जा रही गतिविधियों की विस्तार से समीक्षा की।

उन्होंने जन-प्रतिनिधियों से कोरोना कर्फ्यू को प्रभावी बनाने के लिए सक्रिय भूमिका निभाने के लिए कहा। बैठक में जिला प्रशासन द्वारा कोविड मरीजों के इलाज और संक्रमण को रोकने की वस्तुस्थिति की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि कोविड मरीजों के इलाज में निजी अस्पतालों द्वारा निर्धारित पैकेज से अधिक राशि की वसूली की शिकायत मिलने पर सख्त कार्यवाही की जाएगी। अस्पतालों के लिए जरूरत के हिसाब से आवश्यक उपकरण उपलब्ध करवाए जाएंगे। श्री सारंग ने कहा कि कोरोना महामारी से निपटने के लिए प्रशासन, जनप्रतिनिधि तथा नागरिकों को मिलकर काम करना होगा। कोरोना संक्रमण की चैन ब्रेक करने के लिए नगरीय क्षेत्रों से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों तक कोरोना कर्फ्यू का सख्ती से पालन करना होगा।

कालाबाजारी धोखा देकर जबलपुर सिटी अस्पताल का संचालक मोखा फरार , क्राइम ब्रांच लगी तलाश में

नकली रेमडेसिविर इंजेक्शन मामले में विहिप नेता पर केस

जबलपुर, (एजेंसी)। कोरोना कहर में नकली रेमडेसिविर इंजेक्शन के गोरखधंधे की परत दर परत हो खुलासे ने शहर को चौंका दिया है। गुजरात में पकड़ी गई नकली दवा कंपनी के बाद इंदौर और जबलपुर से हुई आरोपियों की गिरफ्तारी ने एक पूरे ड्रग माफियाओं का कालाबाजारी को उजागर कर दिया है। उक्त मामले में बीती रात पुलिस ने सिटी अस्पताल के संचालक सरबजीत सिंह मोखा सहित तीन अन्य पर विभिन्न धाराओं के तहत प्रकरण दर्ज किया है। पुलिस ने देवेश चौरसिया नामक युवक को गिरफ्तार किया है, वहीं शहरवासियों व मरीजों को धोखा देकर मोखा फरार है, जिसकी तलाश क्राईम ब्राच की टीमें लगी है।

उल्लेखनीय है कि गुजरात के मोरबी शहर में पुलिस ने नकली रेमडेसीवर

इंजेक्शन बनाने वाले गिरोह का भंडाफोड़ किया था। जिसके बाद गुजरात पुलिस ने जबलपुर के अधारताल क्षेत्र से दवा सप्लायर सपन जैन पिता राजेन्द्र जैन को हिरासत में लिया था। वहीं इंदौर से सुनील नामक युवक को गिरफ्तार किये जाने व उसके बड़ी तादाद में जबलपुर में नकली रेमडेसिविर इंजेक्शन खपाएं जाने की सूचना से हड़कंप मच गया था। जिसके बाद पुलिस ने तत्काल ही प्रशासनिक अधिकारियों के साथ मिलकर भगवती फार्मा सहित दो दवा दुकानों को सील कर दिया था। उक्त पूरे मामले में शुरू से ही सिटी अस्पताल के डायरेक्टर व बिल्डर सरबजीत सिंह मोखा का नाम चर्चाओं में रहा, जो कि वाट्सअप व फेसबुक के माध्यम से उक्त आरोपों को निराधार बताने का दावा करता रहा, लेकिन अब प्रकरण दर्ज होने के बाद से ही मोखा सामने नहीं आ रहा है।

सिटी अस्पताल के संचालक सरबजीत मोखा विहिप का भी नेता है, जिसके कई नेताओ से संपर्क है। लेकिन उक्त कोरोना काल में नकली रेमडेसिविर मामले में घिरे मोखा की मुश्किलें अब बढ़ गई हैं। ओमती पुलिस ने मोखा व उनके स्टाफ देवेश चौरसिया सहित अन्य के साथ सपन जैन के खिलाफ धारा 274, 275, 308, 420, 120 ए, 53 आपदा प्रबंधन अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज किया है।

रेमडेसिविर इंजेक्शन की कालाबाजारी करने वाले मैक्स केयर हॉस्पीटल संचालक सहित तीन पर रासुका

ग्वालियर। ग्वालियर क्राइम ब्रांच की टीम द्वारा विगत दिनों मैक्स केयर हॉस्पीटल संचालक को उसके साथियों सहित रेमडेसिविर इंजेक्शन की कालाबाजारी करते हुए गिरफ्तार किया था। उक्त हॉस्पीटल संचालक सहित तीन लोगों के खिलाफ रासुका की कार्यवाही की गई है। गिरफ्तार व्यक्तियों से पुलिस द्वारा की गई प्राथमिक पूछताछ मे यह तथ्य सामने आये कि गिरफ्तार व्यक्तियों में से एक व्यक्ति 12वीं पास होकर मैक्स हॉस्पिटल का संचालन करता था, दूसरा व्यक्ति मैक्स हॉस्पिटल में 12वीं पास होकर डॉक्टर के हेल्पर का कार्य करता थातथातीसरा व्यक्ति उक्त हॉस्पिटल में मेडिकल का संचालन करता था। थाना क्राइम ब्रांच द्वारा आरोपियों रवि रजक (31), सोनू (माथुर) जाटव उर्फ गोलू (27) और मोहसिन खान (23) के विरुद्ध राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम 1980 की धारा 3(2) के अंर्तगत कार्यवाही करने हेतु थाना प्रभारी द्वारा पुलिस अधीक्षक को प्रतिवेदन भेजा गया।

शराब ठेकेदारों से रिकवरी के मामले में मांगा जवाब

जबलपुर। मप्र हाईकोर्ट ने शराब ठेकेदारों से की जाने वाली रिकवरी राशि को चुनौती देने वाले मामलों को गंभीरता से लिया। उमरिया के शराब ठेकेदार से राशि रिकवर होने पर न्यायालय ने अनावेदकों को नोटिस जारी कर जवाब पेश करने के निर्देश दिये है तो वहीं मंडला शराब ठेकेदार के मामले में 50 फीसदी राशि जमा करने के साथ ही 50 फीसदी राशि पर रोक लगाते हुए अनावेदकों को नोटिस जारी कर जवाब पेश करने के निर्देश दिये है।

चीफ जस्टिस मोह. रफीक व जस्टिस अतुल श्रीधरन की युगलपीठ ने मामले की अगली सुनवाई छः सप्ताह बाद निर्धारित की है। यह मामले मेसर्स मंडला सिंडीकेट व एनर्जी देशी अनूपपुर की ओर से दायर की गई थी। जिसमें कहा गया था कि वर्ष 2019-20 की अलार्ट शराब दुकानों को 25 फीसदी बढ़ाकर उन्हें अलार्ट की गई थी, इसके बाद कोरोना काल में उनकी दुकानें बंद रही।

उसके बाद उन्हें रिकवरी के नोटिस जारी किये गये, जिस पर उन्होने पूर्व में हाईकोर्ट की शरण ली थी। न्यायालय ने उनके मामले का निराकरण करते हुए सहानुभूति पूर्वक उनके अभ्यावेदनों पर विचार कर उचित निर्णय लेने के आदेश दिये थे।

बस्तियों के 700 घरों तक पहुंचा अभाविप का आरोग्य अभियान

भोपाल। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद भोपाल महानगर द्वारा आरोग्य अभियान के दूसरे दिन भोपाल शहर के 700 घरों में 10 टीमों के द्वारा स्वास्थ सर्वेक्षण किया गया जिसमें

प्रमुख रूप से कोलार तिराहा , हाउसिंग बोर्ड, भीम नगर,बागमुगालिया,समेत 10 बस्तियों में घर घर जाकर लोगों की स्क्रीनिंग एवं ऑक्सीजन की जांच की गई। अभियान के दौरान जिन लोग में संक्रमण के हल्के लक्षण पाए गए उन्हें कोरोना किट प्रदान की गई। पहले दिन 400 घरों तक पहुंचा था अभाविप दूसरे दिन 700 घरों तक पहुंचा अभी तक कुल 1100 घरों तक स्वास्थ्य सर्वेक्षण किया जा चुका है। विद्यार्थी परिषद ने अन्ना नगर, बैरागढ़ कला,भीम नगर, विजय नगर आदि बस्तियों में स्वास्थ सर्वेक्षण किया । विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता सुबह 7 से लगातार बस्तियों के प्रत्येक घर में जाकर लोगों से संपर्क कर उनका स्वास्थ्य परीक्षण किया।

बस्तियों में काढ़ा भी बांटेंगे

एबीवीपी भोपाल द्वारा 10 दिनों तक चलाए जाने वाले इस अभियान में परिषद के कार्यकर्ता कल से बस्ती के लोगों को काढ़ा भी वितरित करेंगे अभी देखने में यह आया है कि वर्तमान समय में लोग घरों से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं और उन्हें हल्की गले में खराश सर्दी जुखाम की समस्या सामने आ रही है इसलिए विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता कल से दवाइयों के साथ काढ़े का भी वितरण करेंगे। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद भोपाल महानगर के सहमंत्री यश गुर्जर ने बताया कि हम बस्तियों में लोगों के बीच में जब हम पहुंचते हैं तो लोग बड़े उत्साहित होते हैं कि हमारे स्वास्थ्य की चिंता कर कोई हमारे बीच आया और हमें पूर्ण सहयोग बस्तियों में प्राप्त होता है।

7 क्यूबिक मीटर के 500 और 10 के 650 रुपए से ज्यादा नहीं ले सकेंगे

भोपाल। कलेक्टर अविनाश लवानिया ने भोपाल में ऑक्सीजन सिलेंडर के मूल्य की दर को निर्धारित कर दिया है उससे अधिक राशि लेने पर संबंधित के विरुद्ध कालाबाजारी करने की धारा में कानूनी कार्रवाई की जाएगी। भोपाल जिले में कोविड .19 की अद्यतन स्थिति के परिप्रेक्ष्य में सभी चिकित्सालयों में निर्बाध ऑक्सीजन सप्लाई जारी रखा जाना आवश्यक है । ऑक्सीजन सिलेण्डर के विक्रय मूल्यों में एकरूपता रखने हेतु मूल्य निर्धारित किये गए है । 7 क्यूविक मीटर सिलेण्डर डिस्ट्रीब्यूटर, मेन्यूफेर्चर रेट ; जीएसटी सहित 360 रूपए और सब डीलर्स रेट अस्पताल तक रेट ; परिवहन एवं जीएसटी सहित 500 रूपए निर्धारित किया है। 10 क्यूबिक मीटर सिलेण्डर डिस्ट्रीब्यूटर, मेन्यूफेर्चर रेट ; जीएसटी सहित 510 रूपए, सब डिलर्स रेट अस्पताल तक रेट ; परिवहन एवं जीएसटी सहित 650 रूपए नियत दर अधिकतम दर है । निर्धारित दर से अधिकतम दर पर विक्रय करने के प्रकरण प्राप्त होने पर कालाबाजारी प्रावधान के तहत कार्यवाही की जाएगी । डीलर इनपुट कॉस्ट कम होने पर कम राशि में भी विक्रय किया जा सकता है । यह आदेश आगामी एक माह के लिए प्रभावशील होगा ।

ईद के करीब आते ही शहर में सैवइयां बनाने का कार्य जोर शोर से जारी है।

सुधीर नेमा को बनाया गया अध्यक्ष

भोपाल। वन विभाग में पदस्थ सहायक ग्रेड 3 सुधीर कुमार नेमा को जागरूक अधिकारी कर्मचारी संघ में विभागीय समिति का अध्यक्ष मनोनीत किया गया है। अधिकारी कर्मचारी संयुक्त समन्वय कल्याण समिति के संरक्षक एवं मुख्य प्रवक्ता अरुण द्विवेदी और अध्यक्ष उदित भदौरिया की सहमति से सुधीर कुमार नेमा सहायक ग्रेड 3 कार्यालय प्रधान मुख्य वन संरक्षक सतपुड़ा भवन भोपाल को विभागीय समिति का विभागीय अध्यक्ष मनोनीत किया है। अब नेमा प्रदेश भर में वन विभाग के कर्मचारियों को एकत्रित करके शासन से अपने अधिकार लेने के लिए प्रेरित करेंगे।

नारियलखेड़ा में पंच परमेश्वर जन कल्याण समिति द्वारा कोरोना के खात्मे के लिए प्रभातफेरी निकाली जा रही है।

शिक्षकों को कोरोना वारियर्स मानने में है कौन सी दुविधा

शिक्षकों ने कहा शिक्षा में भी निधन पर तत्काल हो स्वत्व का भुगतान

भोपाल (एजेंसी)।

प्रदेश में कोरोना ड्यूटी करते हुए लगातार दिवंगत हो रहे शिक्षकों के लिए एक बार फिर कोरोना वरियर्स के साथ साथ फ्रंटलाइन की सुविधा देने की मांग उठी है। आरोप लगाया गया है कि लगातार शिक्षक काम करते हुए दिवंगत हो रहे हैं लेकिन सुविधाओं के नाम पर सरकार फूटी कौड़ी भी नहीं दे रही है। पीड़ा बताई गई कि मध्यप्रदेश में इतनी बड़ी संख्या में कोरोना महामारी से शिक्षको की असमय मौत के बावजूद विभाग गंभीर नहीं हुआ है। प्रदेश भर में जिस प्रकार से कोरोना महामारी के बचाव कार्यों में बिना कोई सुरक्षा शिक्षकों को झौंका गया है। उससे शिक्षकों और उनके परिजनों के चेहरो पर चिंता की स्पष्ट लकीरें दिखाई देने लगी हैं। समग्र शिक्षक संघ के प्रदेश प्रवक्ता प्रदीप सिंह पवार ने शासन इस रवैये पर चिंता जाहिर करते हुए कहा कि कोरोना संक्रमण के व्यापक प्रभाव ने हर जिले में शिक्षकों को काल का ग्रास बनाया है। बावजूद इसके शासन द्वारा शिक्षकों को बिना कोई सुरक्षा दिए कोरोना महामारी के बचाव कार्यों में लगाना दुर्भाग्यपूर्ण है।

मंत्री की घोषणा के बावजूद नहीं मिल रही राहत

समग्र शिक्षक संघ के वरिष्ठ पदाधिकारी एसएन वर्मा का कहना है कि स्कूल शिक्षा मंत्री की घोषणा के बाद भी मृत शिक्षकों के परिजनों को तात्कालिक आर्थिक सहायता न मिल पाना दुर्भाग्यपूर्ण हैं। समग्र शिक्षक संघ के प्रदेश संयुक्त सचिव नारायण सिंह हाडा का कहना है कि प्रदेश भर में शिक्षकों को हॉस्पिटल रेलवे स्टेशन आक्सीजन प्लांट टीकाकरण कार्यक्रम टोल नाको कोरोंटाइन सेंटरों सहित अनेक बचाव कार्यों में लगाया गया है। लेकिन शासन शिक्षकों को कोरोना वारियर्स घोषित करने के मामले पर चुप्पी साधे हुए हैं। जबकि संक्रमित होने के बाद ना तो शिक्षकों को सरकारी खर्च पर इलाज की सुविधा मिल रही है और न ही मृत्यु उपरांत परिजनों को कोई सहायता उपलब्ध कराई जा रही है।

पहले शिक्षकों को कोरोना वरियर्स घोषित करें फिर उनसे काम लें

समग्र शिक्षक संघ प्रदेश सह सचिव देवेंद्र सिंह तोमर का कहना है कि शासन को जिन शिक्षकों से कोरोना महामारी के बचाव का कार्य लेना है। उन्हें पहले शासन कोरोना वारियर घोषित करें। फि र उनसे कोरोना महामारी के बचाव कार्य में लगाया जाए। इसके साथ ही बीमारी में संबंधित शिक्षक और उनके परिजनों को सरकारी खर्च पर इलाज की सुविधा दी जाए। संगठन के भोपाल जिला अध्यक्ष महावीर प्रसाद शर्मा का कहना है कि लगातार चारों तरफ से मांग उठने के बाद भी सरकार इस विषय में कोई ठोस कदम उठाने के लिए तैयार नहीं है। जबकि विधायकों से लेकर सांसद तक इस मामले में शासन को पत्र लिख चुके हैं।

23,000 पंचायतों के ताले बंद

भोपाल। जिला कलेक्टर द्वारा शासन के आदेश निरस्त करने के बाद पंचायतों के सचिव उग्र मुद्रा में आ गए हैं। 2 दिन से चल रही इनकी हड़ताल और अधिक प्रभावी हुई है। सोमवार को पंचायतों में तालाबंदी कर कलेक्टरों के खिलाफ जमकर नारेबाजी की गई। पंचायत सचिव संघ के प्रदेश महामंत्री तोलाराम ने बताया कि प्रदेश सरकार व प्रदेश सरकार की दोहरी कूटनीति के चलते प्रदेश के एक दर्जन से अधिक जिलों के कलेक्टर्स ने कोरोना योद्धा नहीं माना है। आदेश निरस्त करते हुए यह भूल गये कि मानविय दृष्टिकोण क्या होता है। इस कारण 46 हजार सचिव रोजगार सहायक परिवार व सभी साथियों मे रोष व्याप्त है। कलेक्टर द्वारा आदेश निरस्त करने के बाद असमन्जस्य की स्थित निर्मित हो चुकी है। जबकि सरकार ने प्रदेश से ग्राम पंचायत के समस्त सचिव, रोजगार सहायकों सहित जिला व जनपद स्तर के समस्त अधिकारी कर्मचारियों को कोरोना योद्धा घोषित किये जाने हेतु निर्देशित कर दिया गया है। उसके बावजूद कई कलेक्टरों ने आदेश निरस्त कर कर्मचारियों को झकझोर कर रख दिया है। ऐसी स्थिति मे उन दिवंगत साथियों के परिजनों को कोरोना योद्धा के लाभ से वंचित होना पड़ रहा है जिन्होंने कोरोना के संकट में अपनी जान जोखिम में डालकर काम किया है। अब आगे कोई अप्रिय स्थिति का सामना करना पड़े तो कोन जिम्मेदार होगा। समस्त सचिव, ग्राम रोजगार सहायक साथियों की सुरक्षा की गारंटी लिखित में देनी होगी। कभी आंदोलन समाप्त होगा।

मंत्री ने करवाई वीसी: हड़ताल से विभाग में घबराहट का दौर शुरू हो चुका है। देर शाम पंचायत मंत्री महेंद्र सिसोदिया ने अधिकारियों से चर्चा करने के बाद वीडियो कॉन्फ्रेंस कराने का निर्णय लिया। अपर मुख्य सचिव उमाकांत उमराव एवं पंचायत राज संचालनालय कमिश्नर बीएस जामोद द्वारा ली गई वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में पंचायत सचिव संगठन के अध्यक्ष दिनेश शर्मा एवं रोजगार सहायक संघ के अध्यक्ष रोशन सिंह परमार को जोड़ा गया। इन दोनों नेताओं को अधिकारियों ने भरोसा दिया कि राज्य शासन द्वारा कोरोना योद्धा के जो आदेश जारी किए गए हैं उसका हर हाल में उन्हें लाभ मिलेगा। इधर पंचायत सचिव एवं रोजगार सहायक संगठन के इन अध्यक्षों ने संयुक्त रूप से निर्णय लिया कि हम आश्वासन पर नहीं टिकेंगे। सरकार इस विषय में शीघ्र आदेश जारी करें।

बीएचएमएस डाक्टर ने युवती को प्रेमजाल में फांसा, किया रेप

भोपाल। बीएचएमएस डॉक्टर ने मोहल्ले की एक युवती से नजदीकियां बढ़ा लीं। दोनों के बीच जब अफेयर हो गया तो युवक ने युवती को जल्द ही शादी का झांसा देते हुए उसका शारीरिक शोषण करना शुरू कर दिया। पिछले दिनों जब उसने शादी करने से मना कर दिया तो युवती ने थाने में शिकायत कर दी। अयोध्या नगर पुलिस ने बलात्कार का प्रकरण दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार 24 वर्षीय युवती अयोध्या नगर इलाके में रहती है। वर्तमान में वह एक निजी अस्पताल में काम करती है। उसके मोहल्ले में मधुर कुमार नाम का युवक रहता है। वह खुद को बीएचएमएस डॉक्टर बताता है। साथ ही वह दवाइयों का कारोबार भी करता है। एक ही इलाके में रहने के कारण पांच साल पहले मधुर कुमार से जान पहचान हो गई थी, जो कि जल्द ही दोस्ती और फिर प्रेम प्रसंग में बदल गई। अफेयर हो जाने के बाद मधुर कुमार ने युवती से शादी करने की बात कही। युवती ने जब शादी के लिए हामी भर दी तो मधुर ने उसका शारीरिक शोषण करना शुरू कर दिया। वह पांच साल तक लगातार उसके साथ शारीरिक संबंध बनाता रहा। युवती जब भी शादी की बात करती तो वह कोई न कोई बहाना बनाकर बात को टाल देता था। पिछले दिनों जब युवती ने शादी करने के लिए दबाव डाला तो मधुर कुमार ने शादी करने से मना कर दिया। युवती ने कल थाने पहुंचकर मामले की शिकायत कर दी। पुलिस ने मधुर के खिलाफ बलात्कार का प्रकरण दर्ज कर आरोपी को गिर तार कर लिया है। प्रारंभिक जांच में यह बात सामने आई है कि आरोपी मुरैना जिले का रहने वाला है तथा भोपाल में किराए का मकान लेकर रहता है। पुलिस को अभी तक उसके पास से बीएचएमएस की डिग्री बरामद नहीं हुई है।

पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार किया

मंगल टीका का उत्साह

सरस्वती शिशु मंदिर में कोरोना वैक्सीन का टीका लगवाने के लिए भीड़ उमड़ रही है।

चंद्र ग्रहण आंशिक रूप से भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में दिखाई देगा

भोपाल (एजेंसी)। 26 मई को अल्पकालीन चंद्र ग्रहण होगा। वैशाख शुक्ल पूर्णिमा बुध पूर्णिमा बुधवार को चंद्र ग्रहण चंद्रोदय के समय आंशिक रूप से भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में दिखाई देगा । यह भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के साथ पश्चिम बंगाल के कुछ इलाकों में दृश्य होगा। यह चंद्रग्रहण अन्य क्षेत्रों में खग्रास ग्रहण होगा भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण उत्तर दक्षिण अमेरिका प्रशांत महासागर हिंद महासागर ऑस्ट्रेलिया एशिया महाद्वीप में दिखाई देगा ।

ज्योतिषाचार्य पंडित विनोद गौतम ने बताया कि भारतीय मानक समय अनुसार ग्रहण का प्रारंभ दिन में 3:15 पर एवं मध्य 4:09 पर तथा मोक्ष सायं 6:23 पर होगा। इस ग्रहण का ग्रास मान 1.0 16 है भारत में जहां-जहां चंद्रोदय होगा वहां पर ग्रहण का मोक्ष ही दृश्य होगा। यह ग्रहण अनुराधा नक्षत्र एवं वृश्चिक राशि में होगा। ग्रहण की छाया जिन क्षेत्रों में पड़ती है उन क्षेत्रों में ही सूतक नियम मान्य किए जाते हैं ।अन्य क्षेत्रों में सूतक मान्य नहीं होते हैं यह इस वर्ष का पहला ग्रहण है इसके अतिरिक्त 10 जून को दूसरा ग्रहण सूर्य ग्रहण होगा। यह भी विदेशों में होगा। 19 नवंबर 2021 को एक अल्पकालीन चंद्रग्रहण और होगा जो भारत में कम समय के लिए दृश्य होगा। पश्चात 4 दिसंबर 2021 को सूर्य ग्रहण होगा। यह विदेशों में दृश्य है सूर्य ग्रहण के 12 घंटे पूर्व सूतक काल एवं चंद्र ग्रहण के 9 घंटे पूर्व सूतक काल शुरू हो जाता है।

भोपाल में कोरोना संक्रमण से 1203 लोग हुए ठीक

भोपाल (एजेंसी)। भोपाल में एक बार फिर कोरोना को हराने के लिए अपनी इच्छा शक्ति दिखाई है और भोपाल की जनता, डॉक्टर, नर्स और मेडिकल स्टाफ की मेहनत रंग लाने लगी है। गत रविवार को 1203 कोरोना संक्रमित मरीज पूर्ण रूप से स्वस्थ्य हुए। रविवार को भोपाल में 6300 सेंपल जांच के लिए भेजे गए थे उसमें से 1498 लोगों की कोरोना संक्रमण रिपोर्ट पॉजिटिव आई थी।

रविवार को कोरोना संक्रमित 8 व्यक्तियों की मृत्यु भी हुई। जिले में कोरोना से स्वस्थ्य हो रहे लोगों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है। रविवार 09 मई को भी 1203 लोगो ने कोरोना संक्रमण को अपने आत्मबल और स्वस्थ देखभाल के सहारे मात दी है। जिला प्रशासन भोपाल के नेतृत्व में स्वास्थ्य अमला लगातार मेहनत कर रहा है। कोरोना मरीज जिला चिकित्सालय, कोविड आइसोलेशन वार्ड, आईसीयू वार्ड ओर कोविड केयर सेंटर ओर होम आइसोलेशन से स्वस्थ हुए हैं। साथ ही जो व्यक्ति आइसोलेशन से सामान्य स्थिति में थे उन्हें चिकित्सकों के परामर्श पर घर पर आइसोलेट रहने के लिए डिस्चार्ज किया गया। 9 मई को भोपाल जिले में 6300 सैंपल संक्रमण की जांच के लिए भेजे गए है। जिसमें से 1498 लोगों की कोरोना संक्रमण रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। जिले में अब तक विभिन्न एरिया में माईक्रो कंटेंनमेन्ट जोन बनाये गये हैं। कलेक्टर अविनाश लवानिया ने नागरिकों से अपील की है कि कोविड-19 की चेन को तोड़ने के लिए अनुकूल व्यवहार करें, घर पर रहे। इस समय कोई भी व्यक्ति बिना कार्य के घर से बाहर ना जाये, हम सब को मिलकर संक्रमण की चेन को तोड़ना है।

6300 सैम्पल जांच के लिए भेजे-1498 कोरोना पॉजिटिव

विभिन्न ग्रामों में कोरोना के प्रति जन जागरूकता अभियान चलाया

भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद द्वारा चलाए जा रहे मैं कोरोना वॉलिंटियर अभियान अंतर्गत सोमवार को फंदा विकासखंड के विभिन्न ग्रामों में कोरोना के प्रति जन जागरूकता अभियान तथा शपथ ग्रहण के कार्यक्रम हुए। भोपाल जिले के ग्राम चोपड़ाकला विदिशा रोड में जन अभियान परिषद द्वारा गठित ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति द्वारा ग्राम चोपड़ा कला में किल कोरोना का प्रचार-प्रसार किया गया साथ ही लोगों को मास्क लगाने और घर में रहने की सलाह दी गई। जिसमें ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति के अध्यक्ष सचिव एवं ग्राम के आशा कार्यकर्ता, आगनवाड़ी कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे। प्रस्फुटन समिति बोरखेड़ी के अध्यक्ष श्री गुलाब सिंह द्वारा ग्राम के रोड पर बाहर से आने वालों के लिए नो एंट्री की रंगोली बनाई गई। ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति अमझरा के अध्यक्ष धनबाई ठाकुर द्वारा घर-घर जाकर के वैक्सीन लगवाने के लिए सर्वे कार्य किया जा रहा है। ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति बागरोदा के अध्यक्ष श्री प्यारे लाल पटेल के द्वारा घर-घर जाकर कुंडी खटकाई गई और लोगों को कोविड-19 मास्क जागरूकता वैक्सीन लगवाने की जानकारी दी गई। इसके साथ ही समिति द्वारा आज मेजर कोविड सेंटर्स पर हेल्प डेस्क का कार्य शुरू किया जायेगा जिसमें चिरायु, पीपल्स, एम्स, जेके, टीबी अस्पताल तथा आरकेडीएफ में शुरू किया जायेगा।

मैं कोरोना वॉलिंटियर अभियान

सेवा भारती महानगर द्वारा जरूरतमंदों को निरंतर राशन किट, मास्क और सैनेटाइजर का वितरण

भोपाल (एजेंसी)। सेवा भारती महानगर द्वारा विभिन्न सहयोग के साथ ही जरूरतमंदों को 15 दिन का राशन, खाद्य सामग्री के पैकेटस तैयार करते हुए वितरित किया जा रहा है। इस कार्य में निवेदिता भारती प्रकल्प की बालिकाएं एवं किशोर भारती के बालक मदद कर रहे हैं। मीडिया प्रभारी भगवानदास ढालिया ने बताया कि खाद्य सामग्री का वितरण वरिष्ठ जनों की देखरेख में हो रहा है। संगठन के वरिष्ठ सदस्य विमल कुमार त्यागी, धनीराम पवार, करण सिंह कौशिक, अजीत माधवानी, प्रवीण सक्सेना, शोभाराम पवार, नवनीत अग्रवाल आदि विभिन्न सेवा बस्तियों में जरूरतमंदों की मदद कर रहे हैं।

छह आदतन अपराधी रासुका में निरुद्ध

भोपाल (एजेंसी)। जिला दण्डाधिकारी एवं कलेक्टर भोपाल अविनाश लवानिया ने छह आदतन अपराधियों का रासुका में निरुद्ध करने के आदेश दिए हैं। जानकारी के अनुसार राजेन्द्र मीणा उर्फ राजा पुत्र विशाल सिंह, आयु -23 बिहारी कालोनी, भानपुर थाना - कोहेफिजा, बलराम प्रजापति पुत्र रमेश प्रजापति, आयु -19 वर्ष, बडोदिया तालाब जिला राजगढ, सर्जन सिंह पुत्र अजमेर सिंह, आयु 32 वर्ष, फॉरेस्ट नाके के पीछे, थाना - गांधीनगर, गौरव लोधी पुत्र दीपक लोधी, आयु -24 वर्ष, सूखी सेवनिया, गांधी नगर, यासीर खान पुत्र कदीर खान, आयु -23 वर्ष, चौबदार पुरा थाना- मिसरोद और झलकन सिंह पुत्र हमीर सिंह मीणा, आयु -24 वर्ष , गिरधर परिसर, थाना- कोलार रोड भोपाल को राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम 1980 की धारा 3 (2) में निरूद्ध किया है। कलेक्टर श्री लवानिया ने इन अपराधियों की पुलिस से प्राप्त रिपोर्ट के आधार पर शान्ति व्यवस्था, कानून व्यवस्था बनाए रखने और समाज में बेहतर माहौल बनाए रखने के उद्देश्य से उक्त अपराधियों पर रासुका की करवाई करते हुए इनको केन्द्रीय जेल भोपाल में रखने के आदेश जारी किए हैं।

केन्द्रीय जेल भोपाल में रखा जाएगा

तनाव से मुक्ति के लिए जरूर जाएं शत्रुंजय की पहाड़ी, घूमने की है खूबसूरत जगह

आजकल की भागदौड़ भरी इस जिंदगी में हर इंसान कहीं न कहीं तनाव से घिरा हुआ है। कभी-कभी काम की चिंता के कारण या फिर जीवन की समस्याओं के कारण हम हमेशा तनाव में रहते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि इस तनाव रहे हैं तो हम आपको एक ऐसी जगह के बारे में बताने जा रहे हैं, जहाँ आप शांति पा सकते हैं और वो जगह है शत्रुंजय की पहाड़ी। तो आइए जानते हैं इस जगह के बारे में।

शत्रुंजय की पहाड़ी के बारे में

का हमारे दिलोदिमाग़ पर बहुत बुरा असर पड़ता है। इसलिए हमें अपने लिए थोड़ा समय घूमने फिरने के लिए अवश्य निकालना चाहिए और ऐसी जगहों पर जाना चाहिए जहाँ हमारा तनाव कम हो सके। विशेषज्ञों का मानना है कि तनाव से बचने के लिए ध्यान, योग, जीवन शैली में सुधार और मानसिक शांति के लिए आप कहीं अच्छी रमणीक जगह पर घूमने जा सकते हैं। ऐसे में अगर आप कहीं जाने की योजना बना

दरअसल, शत्रुंजय का शाब्दिक अर्थ है जीत। शत्रुंजय पहाड़ी शांति और आध्यात्मिकता के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। हर साल बड़ी संख्या में लोग यहां पहुंचते हैं और शांति के पल बिताते हैं। शत्रुंजय पहाड़ी गुजरात के ऐतिहासिक शहर पालिताना के पास स्थित है। हालाँकि, इस शहर के पास पाँच पहाड़ियाँ है, लेकिन शत्रुंजय पहाड़ी को सबसे पवित्र पहाड़ी माना जाता है। यह पहाड़ी समुद्र तल से 164 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। इस पहाड़ी पर सैकड़ों जैन मंदिर हैं। वे सभी शतरुंजी नदी के तट पर स्थित हैं। शत्रुंजय हिल को 'आंतरिक शत्रुओं पर विजय का स्थान' के रूप में भी जाना जाता है।आपको जानकर शायद आश्चर्य होगा कि इस पहाड़ी तक पहुंचने के लिए आपको 375 पत्थर की सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। इन सीढ़ियों पर चढ़ते समय आप प्रकृति के अद्भुत दृश्यों का आनंद ले सकते हैं। आप इस शांतिपूर्ण जगह में रहने का एक वास्तविक सुखद एहसास प्राप्त कर सकते हैं। शहरों की भागदौड़ भरी जिंदगी से दूर, आप यहां पर केवल शांति के पल बिता सकते हैं। यहां समय बिताने से आपके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। इसके साथ ही यह कई तरह के तनाव से राहत दिलाने में भी मदद करता है।

शत्रुंजय पहाड़ी पर स्थित मंदिरों के निर्माण के बारे में कहा जाता है कि इनका निर्माण 900 साल पहले हुआ था। हर साल कार्तिक पूर्णिमा के दिन बड़ी संख्या में लोग इस पहाड़ी पर पहुंचते हैं। ऐसा माना जाता है कि जैन धर्म के संस्थापक आदिनाथ, जिन्हे ऋषभ के नाम से भी जाना जाता है, ने इस शिखर पर स्थित रियान वृक्ष के नीचे कठिन तपस्या की थी। उसी स्थान पर आदिनाथ का मंदिर भी आज मौजूद है। इतना ही नहीं, बल्कि मुस्लिम संत अंगार पीर का स्थान भी मंदिर के परिसर में ही स्थित है।कहा जाता है कि उन्होंने मुगलों से इस शत्रुंजय पहाड़ी की रक्षा की थी। इसलिए, उनके साथ अंगार पीर को मानने वाले मुस्लिम लोग भी शत्रुंजय पहाड़ी पर आते हैं और उनकी कब्र पर नमाज अदा करते हैं। कहा जाता है कि यहां आकर जो कोई भी कोई मुराद मांगता है तो निश्चय ही उनकी मन की इच्छाएं और मनोकामनाएं पूरी होती हैं। हर साल लोग अपने परिवार, अपने दोस्तों और अपने सहयोगियों के साथ यहां पहुंचते हैं। तो आप भी एक बार यहां जरूर जा सकते हैं।

शत्रुंजय हिल कैसे पहुचें?

हवाईजहाज सेः पालिताना शहर, जहाँ पर शत्रुंजय हिल स्थित है, भावनगर एयरपोर्ट से 56 किलोमीटर दूर स्थित है। भावनगर से पालिताना जाने के लिए कोई भी निजी वाहन लिया जा सकता है।

रेल द्वाराः पालिताना ट्रेन द्वारा भावनगर और अहमदाबाद से पहुँचा जा सकता है।

सड़क द्वाराः पालीताना, जो भावनगर से 56 किलोमीटर दूर और अहमदाबाद से 215 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, सड़क मार्ग से आसानी से पहुँचा जा सकता है।

शत्रुंजय हिल की यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय है

अक्टूबर से मार्च के महीनों के बीच शत्रुंजय हिल की यात्रा करने का सबसे अच्छा समय होता है। नवंबर से फरवरी पीक सीजन होता है। शत्रुंजय हिल मानसून के मौसम के दौरान बंद रहता है।

पलिताना में घूमने के लिए प्रमुख पर्यटक स्थल

पालिताना गुजरात के शीर्ष पर्यटन स्थलों में से एक है। यदि आप उन लोगों में से हैं जो धर्म में दृढ़ता से विश्वास रखते हैं तो यह आपके लिए यह एक उपयुक्त जगह है। पालिताना में घूमने के लिए कुछ बेहतरीन स्थानों की सूची यहाँ दी जा रही है।

- हस्तगिरी जैन तीर्थ
- शत्रुंजय हिल्स
- श्री विशाल जैन संग्रहालय
- तलजा टाउन
- गोपनाथ बीच

यदि आप शत्रुंजय हिल की यात्रा करने के इच्छुक हैं, तो आप गुजरात के यात्रा कार्यक्रम पर भी एक नज़र डाल सकते हैं और एक या दो दिन के लिए भावनगर से शत्रुंजय हिल को कवर कर सकते हैं।

पार्वती घाटी में घूमने की हैं कई बेहतरीन जगहें

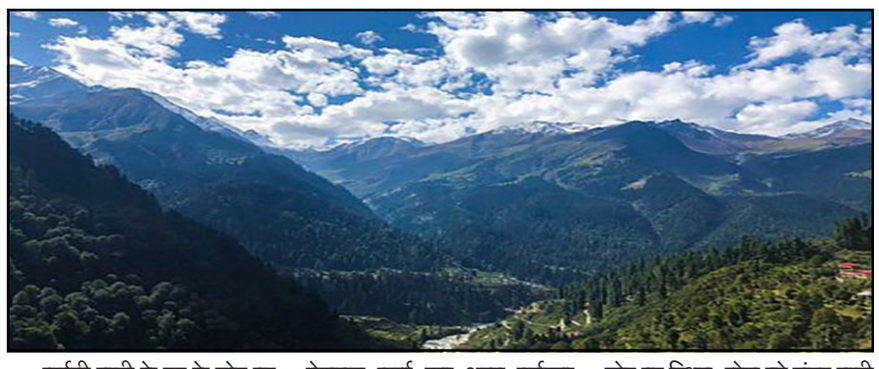

पार्वती घाटी के दूर के छोर पर स्थित, तोश को सुंदर घाटी का अंतिम गाँव माना जाता है जो हिप्पी और साहसिक उत्साही लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं। तोश की सड़क लंबी और घुमावदार है। तोश अन्य शहरों के विपरीत है जो मणिकरण या कसोल जैसे पार्वती नदी के साथ स्थित है।भारत अपनी भौगोलिक विविधता के लिए जाना जाता है और यही कारण है कि यहां के हर राज्य में आपको प्रकृति का एक अलग सौंदर्य देखने को मिलेगा।

ऐसा ही एक स्थान हिमाचल प्रदेश में भी स्थित है। भुंतर से स्पीति तक फैली, पार्वती घाटी हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में स्थित है। घाटी के पास घूमने के लिए कई आकर्षक स्थान हैं। रुद्र-नाग, सर्प के आकार का झरना, खिरगंगा के देवदार के जंगल जहाँ भगवान शिव का ध्यान किया जाता है, पांडु पुल का चट्टान का निर्माण और पिन-पार्वती दर्रा कुछ लोकप्रिय पर्यटन आकर्षण हैं। पिन वैली नेशनल पार्क एक अन्य पर्यटक आकर्षण है और यह हिम तेंदुए सहित वन्यजीवों की आबादी के लिए जाना जाता है। तो चलिए आज हम आपको पार्वती घाटी के आसपास घूमने की कुछ बेहतरीन जगहों के बारे में बता रहे हैं-

कसोल- हिमाचल प्रदेश में मिनी इज़राइल के रूप में जाना जाता है, कसोल पार्वती घाटी में एक हिल स्टेशन है। यह कुल्लू से 42 किमी पूर्व में 1640 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। कसोल अपनी सुंदर घाटी, पहाड़ों और महान जलवायु के कारण पूरे वर्ष बैकपैकर्स, ट्रेकर्स और प्रकृति के प्रति उत्साही लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहां पर मौजूद कैफे और रेस्तरां स्थानीय व्यंजनों के साथ इजरायल के व्यंजन परोसते हैं। कसोल में पार्वती नदी सफेद पानी राफ्टिंग के लिए आदर्श है। कसोल में पूरे साल सुखद मौसम रहता है। कसोल घूमने का सबसे अच्छा समय मार्च से मई तक है।

तोश- पार्वती घाटी के दूर के छोर पर स्थित, तोश को सुंदर घाटी का अंतिम गाँव माना जाता है जो हिप्पी और साहसिक उत्साही लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय है। तोश की सड़क लंबी और घुमावदार है। तोश अन्य शहरों के विपरीत है जो मणिकरण या कसोल जैसे पार्वती नदी के साथ स्थित है। हालाँकि कुछ हद तक इसका व्यवसायीकरण हो गया है, फिर भी सड़कें, दुकानें और घर समान हैं। आप दिन में अपने चारों ओर बर्फ से ढके पहाड़ों और ग्लेशियरों को देख सकते हैं और रात में आकाश में फैले मिल्की वे को देख सकते हैं। या आप पास के ट्रेकिंग ट्रेल्स पर घूमने जा सकते हैं।

रसोल- पार्वती घाटी के लोकप्रिय शहर कसोल से लगभग 4 किमी की दूरी पर स्थित, रशोल या रसोल एक गाँव है जो तेजी से लोकप्रियता हासिल कर रहा है। पार्वती नदी की भीड़ से दूर, रसोल पहाड़ों में ऊंचे स्थान पर स्थित है, जो समुद्र तल से लगभग 3,000 मीटर की ऊंचाई पर है।

गर्मी में एनिमिया से भी बचाएगा फालसा का जूस

गर्मी में खट्टे मिठे काले-काले फालसे खाना बेहद अच्छा लगता है। गमिर्यों का यह नन्हा फ्रूट सुपरफूड है जो सेहत के लिए बेहद उपयोगी है। ये फ्रूट तेज गर्मी के दिनों में कम समय ही पाया जाता है। गर्मी में यह

बॉडी को इंस्टेंट एनर्जी देता है, साथ ही बॉडी को कूल भी रखता है। यह छोटा सा फल दिखने में जामुन जैसा लगता है, गर्मी में इसका जूस बनाकर पीना बेहद फायदेमंद होता है।फालसे का जूस पीने से शरीर में खून की कमी नहीं होती। यह लाल रक्त कोशिकाओं का निर्माण करके शरीर में हीमोग्लोबिन के स्तर को बनाए रखता है।सबसे पहले फालसे को धोकर छलनी में डालकर उसका पानी सुखा लें। अब फालसे को मिक्सी में आधा कप पानी डालकर चलाएं। 2 से 3 बार चलाने के बाद इसमें काला नमक और चीनी डालकर मिक्स कर लें और फिर से ग्राइंड करें। अब इस पेस्ट को छलनी की मदद से एक जग में छान लीजिये। इस प्रक्रिया को तब तक दोहराएं जब तक फालसे का सारा गूदा छन न जाए। अब कुछ आइस क्यूब को गिलास में डालें और इसमें फालसे का जूस डालें। अंत में इसे पुदीना की पत्ती से गार्निश करके सर्व करें। आपका फालसे का जूस तैयार है।

आंतों में जाकर अच्छे बैक्टीरिया की संख्या बढ़ाता है फर्मेंटेड फूड

ढोकला, डोसा, इडली जैसी चीज़ें आप अक्सर खाते होंगे। ये सारे फर्मेंटेड फूड हैं जो सेहत के लिए फायदेमंद माने जाते हैं और फर्मेंटेड खाद्य पदार्थ इम्यूनिटी बढ़ाने के साथ ही शरीर के लिए कई तरह से लाभदायक होते हैं। लेकिन ध्यान रहे प्राकृतिक रूप से फर्मेंटेड खाद्य पदार्थ ही सेहत के लिए अच्छे होते हैं, सोडा और अन्य केमिकल की मदद से फर्मेंटेड किए गए फूड सेहत के लिए हानिकारक होते हैं, इसलिए इस बाद का खास ध्यान रखें।

फर्मेंटेशन क्या है

आपने प्रोबायोटिक फूड के बारे में तो सुना ही होगा जिसमें अच्छे बैक्टीरिया होते हैं। हेल्थ एक्सपर्ट्स ऐसे फूड खाने की सलाह देते हैं और प्रोबायोटिक फर्मेंटेड फूड में पाया जाता है। रात को इडली, डोसा का बैटर पीसकर जब आप रखते हैं तो सुबह तक उसमें खमीर उठ जाता है इसी प्रक्रिया को फर्मेंटेशन कहते हैं। आइए, जानते हैं स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार इसके फायदे।

आंत के लिए लाभदायक

फर्मेंटेड खाद्य पदार्थ आपके आंत के लिए बहुत फायदेमंद होता है। यह पेट की आम समस्याओं जैसे अपच, कब्ज, गैस और एसिडिटी जैसी कई समस्याओं को दूर करने में भी मददगार है।

दरअसल, हेल्थ एक्सपर्ट्स का मानना है कि फर्मेंटेड फूड में पाया जाने वाला लैक्टिक एसिड आंतों की सेहत के लिए अच्छा होता है। लैक्टिक एसिड न सिर्फ पाचन को ठीक रखता है, बल्कि यह शरीर में विटामिन ए और सी की मात्रा को भी बैलेंस करता है। फर्मेंटेड भोजन पेट में अच्छे बैक्टीरिया की संख्या बढ़ाकर उसे स्वस्थ रखता है।

इम्युनिटी बढ़ाता है

पेट के अच्छे बैक्टीरिया रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद करते हैं जिससे संक्रमण, फ्लू आदि का खतरा कम हो जाता है। क्योंकि फर्मेंटेड फूड में विटामिन सी, आयरन, जिंक आदि भी होता है इसलिए यह इम्यूनिटी बढ़ाने में मददगार है।

मानसिक रूप से स्वस्थ रखता है

हेल्थ एक्सपर्ट्स के मुताबिक, फर्मेंटेड फूड आपके मानसकि स्वास्थ्य का भी ख्याल रखते हैं। दरअसल, ऐसे खाद्य पदार्थों में मौजूद प्रोबायोटिक एंग्जायटी और डिप्रेशन कम करने में मदद करते हैं।

दिल को रखे स्वस्थ

फर्मेंटेड फूड दिल की सेहत के लिए भी अच्छे माने जाते हैं। दरअसल, प्रोबायोटिक्स ब्लड प्रेशर कम करने और बैड कोलेस्ट्रॉल को कम करने में मदद करता है जिससे दिल की बीमारियों का खतरा घट जाता है।

मूड अच्छा रखता है

हेल्थ एक्सपर्ट्स के मुताबिक, फर्मेंटेड पूड में पाया जाने वाला प्रोबायोटिक मूड को अच्छा रखने में मदद करते हैं, क्योंकि अच्छे मूड के लिए सेरोटोनिन नामक तत्व का उत्पादन होना ज़रूरी होती है और यह पाचन तंत्र में ही बनता है। यानी जब पाचन तंत्र ठीक रहेगा तभी इसका उत्पादन होगा और मूड ठीक रहेगा।

विटामिन बी 12 की कमी दूर करता है

फर्मेंटेड फूड काफी हद तक शरीर में विटामिन बी 12 की कमी को दूर करता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के मुताबिक, दिन में एक बार फर्मेंटेड फूड जैसे इडली, ढोकला आदि खाकर काफी हद तक शरीर में विटामिन बी 12 की कमी को दूर किया जा सकता।

वेब होस्टिंग क्या है और यह कैसे काम करता है

सर्वर डाउन चल रहा है!

अमुक वेबसाइट का सर्वर कभी डाउन नहीं होता!

इस तरह के कई वाक्य आप गाहे-बगाहे अवश्य ही सुनते होंगे। देखा जाए तो जैसे-जैसे इंटरनेट पॉपुलर हुआ है, वैसे-वैसे सर्वर शब्द भी काफी प्रचलित हुआ है।

आइये इस लेख में जानते हैं कि यह 'वेब सर्वर' क्या है और यह कैसे कार्य करता है

साथ ही हम यह भी जानेंगे कि वेब होस्टिंग कितने टाइप के सामान्य तौर पर होते है

सामान्य भाषा में समझा जाए तो सर्वर एक कंप्यूटर ही होता है जो 24 घंटे ऑन रहता है, ताकि उस सर्वर में स्टोर डाटा कहीं से भी एक्सेस किया जा सके। आप कल्पना कीजिए कि इंटरनेट पर आप कोई वेबसाइट लॉगइन करते है और उस पर कुछ सूचनाएं, तस्वीरें या वीडियो ढूंढते हैं। ऐसे में आपके कंप्यूटर या मोबाइल से इंटरनेट के माध्यम से रिक्वेस्ट उस कंप्यूटर तक पहुंचती है, जो सर्वर के रूप में स्टेबल है। आपके कंप्यूटर की

रिक्वेस्ट पर सर्वर उस वेबसाइट की वह इंफॉर्मेशन ढूंढ कर आपको देता है।

अब चूंकि एक सर्वर पर एक साथ कई रिक्वेस्ट आती है, इसीलिए अगर वह सामान्य कंफीग्रेशन का कंप्यूटर होगा तो निश्चित रूप से हैंग कर जाएगा।

इसीलिए वेब सर्वर के लिए स्पेशल तौर पर हार्डवेयर डिजाइन होते हैं, तो इनके लिए सॉफ्टवेयर भी स्पेसिफिक होते हैं। ऐसी स्थिति में चाहे जितनी रिक्वेस्ट आये, सर्वर डाउन होने के चांसेस कम हो जाते हैं। फिर भी सर्वर डाउन हो ही जाते हैं। इसीलिए अलग-अलग वेब सर्वर की अलग-अलग कैटेगरी निश्चित की जाती है, जो कस्टमर अपने हिसाब से खरीदता है।

शेयर्ड होस्टिंग

सबसे पहले शेयर्ड होस्टिंग होती है जो कोई कस्टमर परचेज करता है। अगर इंटरनेट से आपने डोमेन खरीद लिया है तो उसे आप शेयर्ड होस्टिंग पर पॉइंट करते हैं और ऐसे में जब भी कोई इंटरनेट पर आपका डोमेन सर्च करता है तो वह आपके सर्वर से कनेक्ट हो जाता है। शेयर्ड होस्टिंग अपेक्षाकृत सस्ती पड़ती है, क्योंकि एक ही सर्वर को अलग-अलग कंपनियां (डोमेन) अलग-अलग समय पर यूज कर सकती हैं।

वस्तुतः यह इस कांसेप्ट पर निर्भर होता है कि एक ही समय पर अलग-अलग डोमेन, आपकी कंप्यूटर की रिसोर्सेज को इस्तेमाल नहीं करेंगे, इसलिए एक साथ कई डोमेन इसे शेयर करते हैं।

यही कारण है कि छोटी कंपनियां शेयर्ड होस्टिंग ही चुनती है। हालांकि यह एक निश्चित सीमा तक ही ट्रैफिक वहन कर सकता है।

बीपीएस

वर्चुअल प्राइवेट सर्वर, यानी बीपीएस, शेयर्ड होस्टिंग की अगली कैटेगरी है। यह अपेक्षाकृत महंगी पड़ती है और इसका कारण बड़ा साफ है कि अगर आप अपने 1 डोमेन के लिए बीपीएस इस्तेमाल करते है तो उसे कोई और शेयर नहीं कर सकता। ऐसे में सर्वर (कंप्यूटर) की पूरी रिसोर्सेज पर आपके डोमेन का ही अधिकार होता है।

भूख ना लगने से हैं परेशान तो अपनाएं यह आसान उपाय

यह तो हम सभी जानते है कि हेल्दी रहने से पौष्टिक व संतुलित आहार लेना बेहद आवश्यक है। जिस तरह ओवरईटिंग स्वास्थ्य के

लिए उचित नहीं मानी जाती, ठीक उसी प्रकार कम मात्रा में भोजन करना भी सेहत के लिए हानिकारक है। लेकिन ऐसे कई लोग होते हैं, जिन्हें सही ढंग से भूख ही नहीं लगती, जिसके कारण वह अपने शरीर की पोषक संबंधी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाते और उन्हें कई तरह की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अगर आप भी इनमें से ही एक हैं तो इन आसान उपायों को अपनाकर आप भूख ना लगने की समस्या से मुक्ति पा सकते हैं-

आंवला

अमूमन लोगों को गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल समस्याओं के कारण भूख कम लगती है। आंवला उन समस्याओं को दूर करके भूख बढ़ाने का काम करता है। इतना ही नहीं, यह पाचनतंत्र को बेहतर बनाता है और लिवर को डिटॉक्सिफाई करता है। इसके सेवन के लिए एक कप पानी में दो चम्मच आंवले का रस, नींबू का रस और शहद मिलाएं। इसे रोजाना सुबह खाली पेट, कम से कम तीन से चार महीने तक पिएं। इसके अलावा आप एक चम्मच आंवले के पाउडर को एक कप पानी में डालें और रातभर के लिए ऐसे ही रहने दें। अगली सुबह, आप पानी में दो चम्मच नींबू का रस और एक चुटकी काली मिर्च डालकर नियमित रूप से खाली पेट पीएं।

अदरक

अदरक अपच की समस्या को दूर करने के साथ-साथ भूख ना लगने की परेशानी से भी निजात दिलाता है। इसके अलावा, अदरक पेट के दर्द को दूर करने में भी सहायक है।

बैंगलोर में स्ट्रीट फूड का आनंद लेने के लिए जाएं इन जगहों पर

जब भी स्ट्रीट फूड की बात आती है तो सबसे पहले दिल्ली व मुंबई जैसे शहरों का नाम सबसे पहले आता है। यकीनन दिल्ली और मुंबई जैसे शहरों में आपको माउथवाटरिंग स्ट्रीट फूड खाने को मिलेंगे, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि देश की अन्य जगहों पर आप अपने भीतर के फूडी को शांत नहीं कर सकते। बैंगलोर में भी ऐसी कई जगहें हैं, जहां पर आपको बेस्ट स्ट्रीट फूड खाने को मिलेगा। फूडीज के लिए बैंगलोर एक बेहतरीन जगह है, यहां पर आपको तरह-तरह के खाने का आनंद लेने को मिलेगा। अगर आप भी बैंगलोर में हैं और स्ट्रीट फूड का आनंद लेना चाहते हैं तो इन जगहों पर जरूर जाएं-

वी वी पुरम

गर्म और मसालेदार मसाला डोसा से लेकर मीठे और शुद्ध घी के दाल होलीगे, बैंगलोर के इस फूड स्ट्रीट पर सब कुछ है जिसे आप खाना चाहते हैं। यहां पर मिलने वाला भोजन टेस्टी होने के साथ-साथ किफायती भी है। यहां पाव भाजी स्टॉल, स्वीट कॉर्न स्टॉल, मंचूरियन स्टाल सहित कई स्टाल हैं। अगर आप यहां पर हैं तो आपको पावभाजी, चाट और पोटेटो ट्विस्टर जरूर टेस्ट करने चाहिए।

बेंगलुरू के बसवनगुडी के ओल्ड मार्केट रोड में स्थित इस जगह पर आपको एक बार जरूर जाना चाहिए।

ब्राह्मण कॉफी बार

बसवनगुड़ी के पास रंगा राव रोड पर ब्राह्मण कॉफी बार में पारंपरिक दक्षिण भारतीय भोजन मिलता है। यहां पर आपको हॉट राइस इडली मिलती है, जो यकीनन काफी नरम होती है। अगर आप यहां पर हैं तो आपको इडली-वड़ा व बादाम दूध को जरूर टेस्ट करना चाहिए।

हरि सुपर सैंडविच

जयनगर की हरि सुपर सैंडविच एक ऐसी जगह है, जो सैंडविच और स्वादिष्ट चाट खाने के लिए बैंगलोर के बेहतरीन स्ट्रीट फूड जोड़ों में से एक है। वे विभिनन-प्रकार के सैंडविच और चाट परोसते हैं जो बेहद किफायती भी होते हैं। यहां पर आपको ऐसे कुछ सैंडविच मिलेंगे, जिनके बारे में आपने शायद ही सुना हो। अगर आप यहां पर हैं तो आपको चॉकलेट सैंडविच और बर्गर आदि को जरूर ट्राई करना चाहिए।

श्री साईराम चाट व जूस

बैंगलोर के कड्डु मल्लेश्वरम मंदिर के पास श्री साईराम चाट व जूस कार्नर में दही पुरी से लेकर मसाला पुरी काफी कुछ खाने को है। यहां पर आपको कई तरह की चाट आदि खाने को मिलेंगी। इतना ही नहीं, यहां पर आपको होममेड चॉकलेट भी मिलेंगी।

टीम इंडिया के पास इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज जीतने का अच्छा अवसर : द्रविड़

नई दिल्ली, (एजेंसी)। टीम इंडिया के पूर्व कप्तान राहुल द्रविड़ ने कहा है कि इस बार टीम इंडिया इंग्लैंड में टेस्ट सीरीज जीत सकती है। इसके अलावा उन्होंने यह भी कहा कि इस सीरीज में भारतीय गेंदबाज इंग्लैंड के स्टार ऑलराउंडर बेन स्टोक्स पर हावी रहेंगे।

द्रविड़ ने कहा, मुझे लगता है कि इस बार भारत के पास सीरीज जीतने का अच्छा अवसर है। इंग्लैंड की गेंदबाजी के बारे में कोई सवाल नहीं है, वे जो भी गेंदबाजी आक्रमण उतरेंगे खासतौर पर तेज गेंदबाजी आक्रमण, यह देखना शानदार होगा। उनके पास चयन के लिए अच्छे खिलाड़ी हैं। उन्होंने आगे कहा, अगर आप उनके छह या सात शीर्ष बल्लेबाजों को देखें तो उसमें विश्व स्तर के बल्लेबाज जो भी रूट शामिल हैं। स्टोक्स एक और बड़े ऑलराउंडर हैं हालांकि भारतीय टीम के स्पिनर रविचंद्रन अश्विन उनके खिलाफ अच्छा प्रदर्शन करेंगे। मैं जानता हूं कि अश्विन ने भारत में स्टोक्स के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन किया है हालांकि यह सीरीज का एक अहम हिस्सा होगा। द्रविड़ ने कहा, लेकिन मुझे लगता है कि भारत इस बार अच्छी तरह तैयार होगा। ऑस्ट्रेलिया में जीत से टीम का मनोबल बढ़ा होगा। इस टीम में काफी आत्मविश्वास है। कुछ खिलाड़ी पहले भी इंग्लैंड दौरे पर गये थे। इस बार बल्लेबाजी क्रम पर काफी आत्मविश्वास है। इसलिए मुझे लगता है कि भारत के पास इस बार जीता का काफी अच्छा मौका है और यह सीरीज भारत 3-2 से जीत सकता है। द्रविड़ ने कहा, विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल के बाद भारतीय टीम पूरे एक महीने के लिए इंग्लैंड में रहेगी जिसके बाद टेस्ट सीरीज शुरू होगी। मुझे नहीं लगता कि किसी टीम के पास एक टेस्ट सीरीज की तैयारी के लिए इतना अधिक समय होता है जिसका भी लाभ उसके मिलेगा।

उन्होंने कहा, इंग्लैंड में भारतीय टीम को केवल हालातों का ध्यान रखना होगा क्योंकि यह ऑस्ट्रेलिया या भारत से अलग होगा। अगर आप जम गए हों और अच्छी शुरूआत कर चुके हों पर अगर नहीं तो चीजें तेजी से बदल सकती हैं। गेंद 40-50 ओवर के बाद भी स्विंग कर सकती है।

पहलवान सुशील कुमार पर शिकंजा कसा, लुक आउट नोटिस जारी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। ओलंपियन पहलवान सुशील कुमार की परेशानियां बढ़ती जा रही हैं। दिल्ली पुलिस ने छत्रसाल स्टेडियम में हुए झगड़े के बाद एक पहलवान की मौत के मामले में सुशील कुमार के खिलाफ लुक आउट नोटिस जारी किया है। पुलिस के एक अधिकारी के अनुसार रविवार देर शाम यह नोटिस जारी किया गया है। इस मामले में पुलिस ने पीड़ितों का बयान पहले ही दर्ज कर लिया था। उन्होंने कहा कि यह झगड़ा मॉडल टाउन इलाके में एक फ्लैट को खाली कराने को लेकर हुआ था। एक वरिष्ठ अधिकारी ने पहले बताया था कि इस मामले में सुशील का नाम प्राथमिकी में है और वह फरार है और उनका पता लगाने की कोशिशें की जा रही हैं। उन्होंने बताया था कि उन्हें पकड़ने के लिए दिल्ली-एनसीआर और आसपास के इलाकों में छापेमारी की जा रही है। अधिकारी ने बताया कि पीड़ितों ने आरोप लगाया है कि जब झगड़ा हुआ तब वहां सुशील भी थे। पिछले मंगलवार की रात को छत्रसाल स्टेडियम में झगड़े में 23 वर्षीय पहलवान की मौत हो गई थी। स्टेडियम में उन्हें और उनके दो दोस्तों पर अन्य पहलवानों ने हमला कर दिया था। पुलिस के अनुसार इस झगड़े में कुमार, अजय, प्रिंस दलाल, सोनू, सागर, अमित और अन्य लोग भी शामिल हैं। इस मामले में मॉडल टाउन थाने में भारतीय दंड संहिता की धाराओं और सशस्त्र अधिनियम के तहत मामला दर्ज है।

मैड्रिड ओपन टेनिस में जीत के बाद ट्रॉफी उठाये हुए जर्मनी के एलेकेजेंडर जेवेरेव।

द हंड्रेड टूर्नामेंट में बर्मिंघम फिनिक्स की ओर से खेलेंगी शेफाली

नई दिल्ली, (एजेंसी)। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा इस साल इंग्लैंड में होने वाले द हंड्रेड टूर्नामेंट में बर्मिंघम फिनिक्स टीम की ओर से खेलेंगी। इसी के साथ ही शेफाली द हंड्रेड में भाग लेने वाली पांचवीं भारतीय खिलाड़ी बन जाएंगी। उनसे पहले भारतीय टी20 टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर , स्मृति मंधाना , जेमिमा रॉड्रिग्स और दीप्ति शर्मा को भी बीसीसीआई ने इस टूर्नामेंट में खेलने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र दिया था। शेफाली को इस टूर्नामेंट में बिग बैश लीग की अपनी टीम सिडनी सिक्सर्स के कोच बेन सॉयर का साथ भी मिलेगा। इससे शेफाली को और बेहतर प्रदर्शन में सहायता मिलेगी।

इससे पहले 17 साल की शेफाली ने इसी साल मार्च में भारत दौरे पर आई दक्षिण अफ्रीकी टीम के खिलाफ शानदार बल्लेबाजी की थी। तब उन्होंने तीन मैच में 60, 47 और 23 रन की पारी खेली थी। शेफाली ने इस सीरीज में अपने अच्छे प्रदर्शन को लेकर खुलासा किया था कि उन्होंने अपनी बल्लेबाजी में सुधार लाने के लिए हरियाणा टीम के पुरुष खिलाड़ियों के साथ अभ्यास किया था। इस बल्लेबाज ने कहा कि दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ सीरीज से पहले उन्होंने हरियाणा की पुरुष टीम के गेंदबाजों के खिलाफ नेट्स में बल्लेबाजी का अभ्यास किया था जिसका भी उन्हें लाभ मिला। इस दौरान ज्यादातर तेज गेंदबाज 140 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से गेंद डाल रहे थे। इसी कारण से उन्हें द.अफ्रीका के खिलाफ सीरीज में शॉट्स खेलने के लिए अतिरिक्त समय मिला और वो ज्यादा रन बनाने में सफल रहीं। इसके अलावा शेफाली ने बीते कुछ महीनों में अपनी फिटनेस पर भी काम किया है। इसका भी उन्हें काफी फायदा हुआ है।

चैम्पियंस लीग फुटबॉल फाइनल इंग्लैंड में होने की संभावनाएं

लंदन, (एजेंसी)। कोरोना महामारी के कारण अब चैम्पियंस लीग फुटबॉल फाइनल का स्थान बदला जा सकता है। संक्रमण बढ़ने के साथ ही यात्रा प्रतिबंधों को देखते हुए अब यह मुकाबला तुर्की की जगह इंग्लैंड में हो सकता है। मेजबान तुर्की भी इंग्लैंड की अधिक संक्रमण वाले देशों की खतरनाक सूची रेड लिस्ट में शामिल देशों में आ गया है। इन देशों के साथ उड़ानों पर रोक लगी है। अब तुर्की भी उस सूची में शामिल हो गया है जहां कोरोना महामारी के कारण यात्रा प्रतिबंध लागू होंगे। चेलसी और मैनचेस्टर सिटी को

29 मई को इस्तांबुल में खेलना था पर अब यह मुकाबला यहां संभव नहीं है।

वहीं यूएफा उम्मीद थी कि यूरोपीय फुटबॉल सत्र के इस सबसे बड़े मैच को देखने के लिए तकरीबन दस हजार दर्शकों को प्रवेश की अनुमति मिल जायेगी। वहीं दूसरी और ब्रिटेन सरकार ने नये यात्रा प्रतिबंध लागू करने के साथ ही लोगों से कहा है कि वे तुर्की की यात्रा न करें है। साथ ही यह भी कहा कि उसकी चैम्पियंस लीग का आयोजन करने वाली युएफा से इन मैचों को इंग्लैंड में आयोजित करने की बात हो रही है। गौरतलब है कि यात्रा प्रतिबंधों के कारण कई खेल मुकाबले या तो स्थगित हो गये हैं या उनका आयोजन नहीं हो रहा।

शाकिब और मुस्ताफिजुर को मिल सकती है राहत

ढाका, (एजेंसी)। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) को उम्मीद है कि आईपीएल से वापस लौटे ऑलराउंडर शाकिब अल हसन और बाएं हाथ के तेज गेंदबाज मुस्ताफिजुर रहमान को तीन मैचों की एकदिवसीय सीरीज से पहले 14 दिन की संस्थागत क्वारंटीन अवधि में राहत मिल सकती है। बांग्लादेश तीन मैचों की एकदिवसीय सीरीज के लिए 16 मई से अपना पूर्ण शिविर लगाने वाला है। यदि बीसीबी बांग्लादेश के स्वस्थ्य सेवा महानिदेशालय को संतुष्ट कर लेने में असफल रहता है तो ढाका में दो अलग अलग होटलों में पृथकवास से गुजर रहे शाकिब और मुस्ताफिजुर के पास 23 मई से शुरू होने वाले पहले एकदिवसीय की तैयारी के लिए तीन दिन का समय रहेगा।

वहीं इससे पहले बांग्लादेश के स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के अधिकारियों ने कहा था कि दोनों ही खिलाड़ियों को सरकार द्वारा निर्धारित क्वारंटीन सेंटर में अपना क्वारंटीन समय पूरा करना होगा। इसमें कोई राहत नहीं दी जाएगी। मुस्ताफिजुर ने कहा था कि वह एक बायो बबल के बाद दूसरे बायो बबल में जाकर थक गये हैं। मुस्ताफिजुर के अलावा कुछ और भी खिलाड़ी हैं जो बायो बबल से प्रभावित हुए हैं। वहीं बीसीबी के मुख्य कार्यकारी निजामुद्दीन चौधरी ने कहा था, मुझे लगता है कि हम चीजों को अलग अंदाज में देख रहे हैं जहां तक क्वारंटीन अवधि में राहत की बात है तो उसमें राहत की संभावना नहीं है क्योंकि अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में महामारी के समय में कठोर प्रोटोकॉल होते हैं। चौधरी ने कहा, मुस्ताफिजुर और शाकिब भारत से आने के बाद क्वारंटीन में हैं और आपको यह जानकर खुशी होगी कि दोनों की रिपोर्ट नेगेटिव आई है। हम उम्मीद कर रहे हैं कि हम उन्हें मना पाएंगे कि उन्हें उनकी क्वारंटीन अवधि में राहत मिले और वे अपने अभ्यास में लौट आयें।

इटली में सीरीज ए फुटबॉल में गोल करते हुए इंटरमिलान के डियाज।

विश्व टेस्ट चैंपियनशिप में किसी एक स्पिनर को उतारेगी टीम इंडिया

नई दिल्ली, (एजेंसी)। अगले माह 18 से 22 जून तक साउथैंप्टन में होने वाले विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में आर अश्विन और रवींद्र जडेजा में से किसी एक को ही जगह मिल सकती है, इसका कारण है कि यहां स्पिनरों की जगह तेज गेंदबाज अधिक सफल रहे हैं। जडेजा का प्रदर्शन हाल में आईपीएल में अच्छा रहा है। ऐसे में उन्हें अश्विन पर वरीयता मिल सकती है। अश्विन ने टेस्ट में 400 से अधिक विकेट लिए हैं।

साउथैंप्टन के रिकॉर्ड का देखें तो इंग्लैंड के तेज गेंदबाजों ने 6 टेस्ट में 28 की औसत से 68 विकेट लिए हैं। स्ट्राइक रेट 64 का रहा है। वहीं दूसरी ओर टीम इंडिया के तेज गेंदबाजों ने 2 टेस्ट में 42 की औसत से 20 विकेट लिए हैं। स्ट्राइक रेट 76 का है। वहीं न्यूजीलैंड की टीम ने इस पिच पर अब तक एक भी टेस्ट नहीं खेला है। इसका लाभ भी टीम इंडिया को मिल सकता है। साउथैंप्टन में दो मैच में हमारे स्पिन गेंदबाजों ने 44 की औसत से 9 विकेट लिए हैं। स्ट्राइक रेट 83 का रहा है। ऐसे में टीम इंडिया यहां सिर्फ एक ही स्पिन गेंदबाज के साथ उतर सकती है। दूसरे स्पिन गेंदबाज की जगह तेज गेंदबाज शार्दुल ठाकुर को बतौर ऑलराउंडर अवसर मिल सकता है। शार्दुल ने ऑस्ट्रेलिया में हुए टेस्ट में बल्ले और गेंद दोनों ने अच्छा प्रदर्शन करके भारतीय टीम को जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई थी। ब्रिस्बेन में खेले गए टेस्ट में शार्दुल ने 7 विकेट लिए थे और पहली पारी में 67 रन की पारी भी खेली थी।

यह हो सकते हैं टीम इंडिया के अंतिम ग्यारह खिलाड़ी : रोहित शर्मा, शुभमन गिल, चेतेजश्वर पुजारा, विराट कोहली, अजिंक्य रहाणे, ऋषभ पंत, रवींद्र जडेजा, शार्दुल ठाकुर, इशांत शर्मा, मोहम्द शमी और जसप्रीत बुमराह।

दबाव में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करती हूं : राही

नई दिल्ली, (एजेंसी)। भारतीय महिला टीम की शीर्ष निशानेबाजों में शामिल राही सरनोबत को दबाव का सामना करना अच्छा लगता है क्योंकि इससे उन्हें बेहतर प्रदर्शन की प्रेरणा मिलती है। सरनोबत जगरेब और टोक्यो ओलंपिक खेलों के लिए रवाना होने वाले दल में शामिल है। सरनोबत ने कहा है कि मैं दबाव में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करती हूं। मुझे इससे जिम्मेदारी का अहसास होता है और अपने से और अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद होती है। इस निशानेबाज ने कहा कि 25 मीटर पिस्टल निशानेबाजी में पहले के प्रदर्शन ज्यादा मायने नहीं रखते है। जर्मनी के कोच मुंखबायर दोरज्सुरेन के जाने के बाद सरनोबत हाई परफोर्मेंस कोच समरेश जंग की देख रेख में अभ्यास कर रही है। समरेश हालांकि भारतीय टीम के साथ क्रोएशिया दौरे पर नहीं जाएंगे जहां टीम को यूरोपीय चैम्पियनशिप (20 मई से छह जून) और आईएसएसएफ विश्व कप (22 जून से तीन जुलाई) में भाग लेना है।

सरनोबत ने कहा कि यह उनके लिए हालांकि चिंता की बात नहीं है। मैं अपने जर्मन कोच के साथ अभ्यास कर रही थी लेकिन पिछले साल ओलंपिक के स्थगित होने से उनका अनुबंध समाप्त हो गया। उसके बाद से ही समरेश से अन्हें प्रशिक्षण मिल रहा है। कोच ने कहा है कि अगर वह वहां नहीं रहेंगे तो भी ज्यादा असर नहीं पड़ेगा। यह वास्तव में अलग तरह की स्थिति है। कोरोना महामारी के इस दौर में हमें सभी हालातों के लिए तैयार रहना होगा, हमें अपने बल पर अच्छा प्रदर्शन करना होगा।

मयंक की जगह मयंती लैंगर को टैग करने के कारण हंसी का पात्र बने कमिंस

मुम्बई, (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज पैट कमिंस एक शो में मशहूर स्पोर्ट्स प्रेजेंटर मयंती बिन्नी लैंगर के साथ बातचीत के कारण ट्रॉल हुए हैं। इस शो में हिस्सा लेने के बाद कमिंस ने टीम इंडिया के सलामी बल्लेबाज मयंक अग्रवाल को टैग करने की जगह मयंती को टैग कर दिया। कमिंस की यह गलती देखने के बाद मयंक अग्रवाल ने तत्काल इस पर कमेंट किया और कमिंस को ट्रोल करते हुए लिखा, तुमने गलत शख्स को टैग किया है पैट. बाद में मयंती लैंगर ने भी इस पर कमेंट करते हुए एपिक लिखा और हंसने के इमोजी बनाए।

टी20 विश्व कप को स्थगित या निलंबित किये जाने से इंकार नहीं कर सकते : इयान चैपल

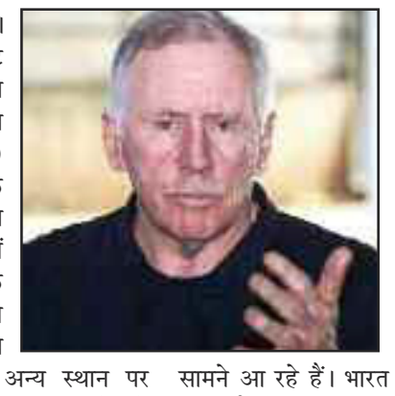

नई दिल्ली, (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेट कप्तान इयान चैपल का मानना है कि इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) का निलंबन दिखाता है कि कोरोना महामारी के संक्रमण से क्रिकेट भी सुरक्षित नहीं है। ऐसे में कोविड-19 के कारण भारत में होने वाले आगामी टी20 विश्व कप को स्थगित या किसी अन्य स्थान पर आयोजित किये जाने की संभावनाओं को खारिज नहीं किया जा सकता है। आईपीएल के 14 वें सत्र में कड़े जैव सुरक्षित वातावरण (बायो बबल) के बाद भी संक्रमण के मामले सामने आने के बाद इसे निलंबन कर दिया गया था।

चैपल ने कहा कि आम जनता में कोविड संक्रमण के बढ़ने और मौतों तथा कुछ खिलाड़ियों के पॉजिटिव पाये जाने के कारण आईपीएल 2021 का निलंबन इस बात को याद दिलाता है कि यह खेल अभेद्य नहीं है। भारत अभी कोविड-19 की दूसरी लहर से जूझ रहा है तथा यहां हर दिन चार लाख से अधिक मामले सामने आ रहे हैं। भारत में ही अक्टूबर - नवंबर में टी20 विश्व कप का आयोजन होना है। इस पूर्व क्रिकेटर के अनुसार वर्तमान माहौल को देखते हुए आईपीएल का बीच में ही निलंबन दिखाता है कि भारत में साल के आखिर में होने वाले टी20 विश्व कप को स्थगित या किसी अन्य स्थान पर आयोजित भी किया जा सकता है। महामारी के इस माहौल में पक्के तौर पर कुछ भी नहीं कहा जा सकता। सब कुछ हालातों पर निर्भर रहेगा।

इंजमाम और युनिस से सीखें आजम : अकमल

लाहौर, (एजेंसी)। पाकिस्तान के अनुभवी विकेटकीपर-बल्लेबाज कामरान अकमल के अनुसार टीम के कप्तान बाबर आजम अच्छी कप्तानी कर रहे हैं पर उनका प्रदर्शन और भी बेहतर हो सकता है। अकमल के अनुसार इसके लिए उन्हें खिलाड़ियों के चयन पर ध्यान देना होगा। साथ ही पूर्व कप्तान इंजमाम-उल-हक और युनिस खान से भी सीखना होगा। अकमल का मानना है कि इन दोनों ही खिलाड़ियों ने हमेशा से ही टीम चयन में घरेलू प्रदर्शन को वरीयता दी है। बाबर को भी इसी तरह का काम करना चाहिये। अकमल ने कहा कि बाबर को किसी भी खिलाड़ी के चयन में घरेलू क्रिकेट के अनुभव को ध्यान में रखना चाहिए। अगर वो ऐसा नहीं करते तो भविष्य में टीम का प्रदर्शन खराब होता जाएगा। उन्होंने कहा कि आजकल पाकिस्तान की गेंदबाजी में पहले तेजी तेजी और आक्रमकता नहीं है। उसमें अनुभव की कमी साफ नजर आती है। ऐसे में अनुभवी मोहम्मद आमिर और वहाब रियाज को टीम में शामिल किया जाना चाहिए। आमिर अब भी चार-पांच साल खेल सकता है। साथ ही कहा कि इस साल भारत में होने वाले टी20 विश्व कप को देखते हुए पाक टीम के पास अनुभवी गेंदबाज होना जरुरी है।

कामरान ने चयनकताओं से भी कहा कि वे युवा खिलाड़ियों को टीम में चयन करते समय अधिक जल्दबाजी नहीं करें। उन्होंने कहा कि खिलाड़ियों को घरेलू अनुभव के आधार पर ही शामिल किया जाना चाहिए। बाबर आजम, हसन अली, फवाद आलम और इमामुल हक को देखें, तो इन सभी को लगातार घरेलू क्रिकेट में बेहतर प्रदर्शन के आधार पर शामिल किया गया है। इससे अब टीम का प्रदर्शन बेहतर होता जा रहा है।

वेल्स फार्गो गोल्फ में भाग लेते हुए गोल्फर रॉरी मैकलरॉय।